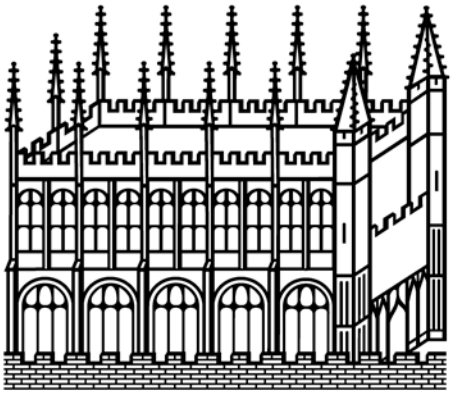


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.



Hindi Sukh 1

13.E.32.

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Šuteranūki



शुक्रनीति भाषा

شکر نیت بھاشا

जिसमें

नीति विषयक राजा राजमन्त्री और राज कुमारों के मुख्य धर्म्म रीति प्रजा पालनादि क्रम चार अध्याय में वर्णित हैं

जिसको

सुल्ताँपुर प्रदेशान्तर्गत नन्दापुर ग्राम निवासि त्रिपाठि पण्डित महेशदत्तजी ने छाये खाने नवलकिशोर लखनऊ की आज्ञानुसार किताब संस्कृत मुन्शी काली प्रसाद साहिब वकील से नागरी देश भाषा में उल्था किया

सम्पूर्ण राज नीति और मर्य्यादा पालन विधि जानने वालों महात्माओं के अवलोकनार्थ

पहिलीवार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापागया

अगस्त सन् १८८१ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् अगस्त सन १८८१ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फेहरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	१ आदिपर्व	तथा जिल्द बंधी	नाटक
महा भारत	२ सभा पर्व	तथा मोटे अक्षरोंकी	प्रबोध चन्द्रोदय
१ पहिले हिस्सा में	३ वन पर्व	भयतसवीरवक्षेपक	रामाभिषेक
आदि पर्व सभा पर्व	४ विराट पर्व	रामायण तुलसीकृत	आनन्दरघुनन्दन
वन पर्व	५ उद्योग पर्व	सातों काण्ड	वेदान्त
२ दूसरे हिस्सा में	६ भीष्म पर्व	१ बालकाण्ड	योग वाशिष्ठ
विराट पर्व उद्योग	७ द्रोण पर्व	२ अयोध्याकाण्ड	आनन्दाऽमृतवर्षिणी
पर्व भीष्म पर्व	८ कर्ण पर्व	३ आरण्यकाण्ड	सारव्यतत्वकौमुदी
द्रोण पर्व	९ शल्य पर्व व गदा	४ किष्किन्धाकाण्ड	काव्य
३ तीसरे हिस्सा में	पर्व सौप्तिक पर्व मय	५ सुन्दरकाण्ड	सूरसागर
कर्ण पर्व शल्य प-	योशिक व विशोक	६ लंकाकाण्ड	कृष्णसागर
र्व गदा पर्व सौप्तिक	व स्त्री पर्व	७ उत्तरकाण्ड	विश्रामसागर
पर्व योशिक विशो-	१० शान्ति पर्व राज	रामायण शब्दार्थको	प्रेमसागर
क पर्व स्त्री पर्व शा-	धर्म व आपद धर्म	रामायण का इतिहास	ब्रजबिलास बड़ा व छो-
न्ति पर्व में राज धर्म	व मोक्ष धर्म व दान	रामायण मानसदीपिका	कृष्णप्रिया
आपद धर्म मोक्ष	व धर्म	रामायण कवितावली	विजयमुक्तावली
धर्म	११ अश्वमेध आश्र-	रामायण गीतावली	अनेकार्थ
४ चौथे हिस्सा में	मवासिक पर्व व मौ-	सटीक	छन्दोर्णव पिंगल
शान्ति पर्व दान ध-	शल पर्व महा प्र-	विनयपत्रिका बा॰ मो॰	कविकुल कल्पतरु
र्म अश्वमेध आश्रम	स्थान स्वर्गारोहण	विनयपत्रिका बा॰ प्रि॰	रसराज
वासिक पर्व व मौश-	१२ हरिवंश पर्व	लिंग पुराण भाषा	सतसई मूलनखा स-
ल पर्व व महा प्र-	रामायण रसविलास	विष्णु पुराण भाषा	भाविलास
स्थान स्वर्गारोहण	रामायण तुलसीकृ-	ब्रह्मोत्तर खंड	तुलसी शब्दार्थ
पर्व हरिवंश पर्व	रामायण सटीक मय	गरुड़ पुराण सटीक	भजनावली
महाभारत पर्व	मानसदीपिका कोष	प्रेतकल्प	प्रेमरत्न
इतने हस्सा मौहें	आदि	कालिंजर महात्म्य	युगलविलास

भूमिका ॥

प्रकट हो कि इस ग्रन्थके प्रथम अध्याय में नगर आदि की प्रतिष्ठा और दूसरे अध्याय में युवराज और उस्के कृत्य आदि के लक्षण लाभ और खर्च और नौकरों आदि के मासिक की कल्पना और तीसरे अध्याय में सब लोगों का न्याय के साथ बर्त्ताव करना और चौथे अध्याय में सुहृद आदि के लक्षण और दण्ड कल्पना रत्न धातु गौ आदि का ज्ञान और मोल रखना प्रजा से भाग लेना कला विद्याऔर जाति भेद कथन और उस्के धर्म्म की कल्पना ग्राम रक्षादि का कथन मूल्यादि का करना और उस्का ज्ञान व्यवहार प्रदर्शन दुर्ग कल्पना सैन्य प्रकरण रथ क्रिया से उत्पन्न ज्ञान ऊंट की परीक्षा मनुष्य की आयु का मान यात्रा प्रकल्पन यंत्र का प्रपातन शस्त्र का लक्षण ये सब बातें इस ग्रन्थ में वर्णित हैं यह ग्रन्थ राजाओं के लिये अतीव उपकारक है बहुत से राजनीतियों के ग्रन्थों के मत को देख के शुक्र जी ने इस ग्रन्थ को बनाया और शुक्रनीति नाम रक्खा वही श्रीयुत मुंशी कालीप्रसाद की सम्मति से मुन्शी नवलकिशोरजी ने निज यन्त्रालय में उल्था करा के छपवाया इसका जानने वाला राजा सर्वज्ञ और सुखी होता है शुभम् ॥



अनुक्रमणिका॥



पूर्ब्ब कहे हुये शुक्रनीति में राजाओंके सम्पूर्ण कार्य्य और भूमि का सामान्य प्रमाण कहते हैं १ नगरी आदि की प्रतिष्ठा और गृह आदिके करनेकी रीति यह सब प्रथम अध्याय में कहे हैं अब आगे के अध्याय में जोहै वह कहते हैं २ युवराज की प्रकृति आदिका लक्षण और कृत्य लाभ और खर्च और सेवकों की मज़दूरी की कल्पना ३ तीसरे अध्याय में सम्पूर्ण संसारका न्यायके साथ बर्त्तावऔर चौथे अध्यायमें मित्र आदिका लक्षण औरदण्ड कल्पना ४ रत्न धातु गऊ आदिका ज्ञान और उनके मोलकी कल्पना और प्रजासे भाग लेना और कला विद्या प्रभेद ५ जातिभेद कथन और उनके धर्म्मकी कल्पना ग्राम रक्षा आदिका कथन और राजमन्दिर आदिका बनाना ६ मूर्त्ति आदि का करना और ज्ञान और उसके व्यवहार का देखना और किला और सैन्य का रखना ७ रथकी क्रिया और गजका ज्ञान ऊंटकी परीक्षा मनुष्य आदिके आयुका प्रमाण यात्रा प्रकल्पना ८ यन्त्र का लक्षण उसी तरह अग्नि के चूर्णका साधन यन्त्र प्रपातनऔर शस्त्रलक्षण ९ छःगुणों का लक्षण सेनासे क़वायद लेना और कपट करने वालों के कपट जानना और उनके वेद और गुणकी संख्या १० ॥



श्रीगणेशायनमः ॥

शुक्रनीति भाषा ॥



पहिला अध्याय ॥

सृष्टि स्थिति नाशके कारण जगत्के आधारको प्रणाम और पूजनकर वन्दित पूजित भार्ग्गव से पूंछा १ पूर्व्वहीं देवताओंने यथा न्याय जो कहाहै उसी नीतिका सार भार्ग्गवजी ने कहा है और शत लक्ष श्लोक मितनीति शास्त्र कहा है २ स्वयम्भू ब्रह्मा जीने लोक के हितके अर्थ संग्रह किया उसीका सारांश लेकर बशिष्ट आदि ऋषि और हम लोगों ने वृद्धि के अर्थ ३ अल्पायु राजाओंके अर्थ तर्क बिस्तृत इस शास्त्रका संक्षेप किया औरअन्य शास्त्र क्रियाके एक देशके बोधकहैं ४ यह नीतिशास्त्र सर्व्वोपजीवक लोक स्थिति करने वाला धर्म्म कामका मूल और मोक्ष का देने वाला है ५ इसी कारण राजा सदा नीतिशास्त्रका यत्नपूर्व्वक अभ्यास करै जिसके जाननेसे राजालोग शत्रुका जीतनेवाला और लोकका हितकारी होता है ६ हे राजन् सुनीति निपुणहो जिस तरह शब्दार्थ का ज्ञान व्याकरण बिना नहीं उसी तरह बिना नीति का राजा उत्तम नहीं होता ७ प्राकृत पदार्थों का ज्ञान न्याय औरतर्क शास्त्र बिना नहींहोता और बिधिक्रियाव्यवस्था मीमांसाबिना नहींहोता ८ सम्पूर्ण देहआदि नाशवान् हैं यह ज्ञान वेदान्त बिना नहीं होता और ये सब शास्त्र अपने २ अभिमत के बोधक शास्त्र हैं ९ उन शास्त्रों के मतानुयायी मनुष्यों करके वह शास्त्र ग्राह्य हैं और उन शास्त्रोंसे व्यवहार वालों

की बुद्धि निपुणता नहींहोती १० जिस तरह शरीरवाले जीवकी वृद्धि अन्न बिना नहीं होती उसी तरह सम्पूर्ण लोक व्यवहार की स्थिति नीति शास्त्र बिना नहीं होती ११ यह नीति शास्त्र सर्व्वाभीष्ट कर और सर्व्व सम्मत है यह नीति शास्त्र राजा को आवश्यक है क्योंकि राजा सबका स्वामी है १२ नीति हीनके शत्रु ऐसे हैं जैसे अपथ्य करने वाले के रोग इन में पहिला शत्रु शीघ्र और दूसरा काल पाके होता है १३ प्रजा का पालन राजा का परम धर्म्म है और दुष्टों का निग्रह सदा करणीय है और नीति बिना ये दोनों नहीं होते १४ अनीति राजा का संछिद्र और भयका देनेवाला शत्रुका बढ़ानेवाला और बल हासकर है १५ नीतिको छोड़ के स्वतंत्र हो रहताहै वह दुःख पाता है और उसकी सेवा अशिवार के चाटनेके सदृश है १६ नीतिमान् राजा सुख से आराध्य है और अनीतिमान् दुःख से आराधना करने के योग्य होता है और जहां नीति और सैन्य दोनों होतीहैं वहां चारों तरफ से लक्ष्मी आती है १७ जिस तरह सम्पूर्ण देश बिना कहे हित करने वाला हो उसी तरह अपने हितके लिये राजा नीतिको धारण करै १८ जिस राजा के देश सैन्य मन्त्री आदि भिन्न २ हों वह अनीति राजा की निर्बुद्धिता है १९ राजा तपसे तेज पाता और शिक्षक पालक प्रीति कराने वाला होता और राजा प्राक्तन कर्म्म और तपस्या से पृथ्वीका पालक होताहै २० वर्षा शीत गर्म्मी नक्षत्र गति रूप स्वभावसे इष्ट अनिष्ट अधिक न्यून आचारसे काल भेद हैं २१ आचार का प्रेरक राजा होता है यह काल का लक्षण है और जो कालही प्रमाण है तो कर्त्ता धर्म्म भागी कैसे हुआ २२ राजदण्ड भयसे लोक अपने २ धर्म्ममें तत्पर होता है और जो धर्म्म पर होता वह तेजस्वी होता है २३ स्वधर्म्म बिना सुख

नहीं होता स्वधर्म्म परम तपहै जिसने स्वधर्म्म रूप तपको बढ़ाया है २४ उसके देवता किङ्कर होते हैं मनुष्यों की क्या गिनतीहै सुदण्ड करके धर्म्म निरत राजा महा भय देखाके धर्म्म करावै २५ राजा अभिषेक किया हो या बिना अभिषेक किया हो और राजत्वको प्राप्तहो तो धर्म्म पूर्व्वक राज्य करे अन्यथा तेज हानि होतीहै २६ बुद्धि बल शूरता नीति पूर्व्वक प्रति दिन अच्छिद्र दण्ड धृक प्रजा पालन करै २७ नित्य बुद्धिमान्के अर्त्थ थोड़ेभी वृद्धि को प्राप्त होतेहैं और शूरता नीति बल धन से टेढ़े भी वश में आजाते हैं २८ सात्विक तामस राजस तीन प्रकार के तप हैं जिस तरह का तप करता है वैसा राजा होता है २९ स्वधर्म्म रत प्रजा का पालक सम्पूर्ण यज्ञोंका करने वाला राजा शत्रु गणका नेता होता है ३० दानी सहन शील विषयों से निस्पृह विरक्त सात्विक राजा अन्त अवस्थामें मोक्षको पाता है ३१ सात्विक से विपरीत तामस राजा नरकगामी होता निर्लज्ज मदोन्मत्त सत्य बर्ज्जित घातक होताहै ३२ राजस राजा दम्भी लोभी विषयी शठ होता मन में और बचन में और कर्म्म से और कलह प्रिय होता है ३३ नीच प्रिय स्वतंत्र नीति हीन अस्वस्थ नृपाधम अन्तमें पशु या स्थावर योनिको प्राप्त होताहै ३४ सात्विकराजा देवांशको भोगता तामस राजा राक्षसांशको राजस राजा मनुष्यांशको भोगताहै इस्से सत्व में मन देना चाहिये ३५ सत्व और तमगुणकी समतासे मनुष्यका जन्म होता है क्योंकि मनुष्य जिसका २ आश्रय करता है भाग्यसे उसीके तुल्य होताहै ३६ सुगति और दुर्ग्गति में कर्म्महीकारणहैऔर कर्म्म प्राक्तन भी है कोई क्षणमात्र भी बिना कर्म्म नहीं रहता ३७ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र म्लेच्छ इनमें जातिसे भेद नहीं है गुण और कर्म्मसे भेद है ३८ क्या ब्रह्मासे उत्पन्न सम्पू-

र्ण मनुष्य ब्राह्मण होते हैं क्योंकि वर्ण और पिता से ब्रह्मतेज नहीं प्राप्त होता है ३९ ज्ञान, कर्म्म, उपासना से देवताराधन में रत शान्त दान्त दयालु इन गुणों से ब्राह्मण होता है ४० लोक संरक्षण में रत शूर इन्द्रियजित् पराक्रमी दुष्टोंका दबाने वाला क्षत्रिय कहाता है ४१ खरीदने बेचने में चतुर नित्यही व्यापारसे जीविका करनेवाला पशुरक्षा और खेती करनेवाला वैश्य कहाता है ४२ द्विजसेवा पूजनमेंरत शूरशान्त जितेन्द्रिय हल काष्ठ तृणका उठानेवाला नीच शूद्र कहाता है ४३ स्वधर्म्माचरणका त्यागी निर्ल्लज्ज परपीड़क तीक्ष्ण हिंसक अविवेकी म्लेच्छ कहाता है ४४ पूर्व्व जन्मके कर्म्म के फलके भोगके योग्य जब बुद्धि होती है तो पाप अथवा पुण्य कर्म्म वह बुद्धि प्रवृत्त होती है अन्यथा नहीं ४५ जैसे कर्म्म फल की उदय होती वैसेही बुद्धि उत्पन्न होती है और जैसी भवितव्यता होती है उसी तरह सहायक मिलते हैं ४६ पूर्व्वकर्म्म बशसे सबहोता है यही निश्चय है तो कार्य्य अकार्य्यके बोधक सब उपदेश व्यर्थ हैं ४७ बन्धबुद्धिमान् चरित पौरुषको बड़ा मानते हैं पौरुष करने में अशक्त क्लीव भाग्यको मानतेहैं ४८ दैव और पुरुषकार में सब प्रतिष्ठित हैं पूर्व्व जन्म कृत और इस संसार का इकट्ठा किया यह दो तरह का है ४९ बलवान् सदादुर्व्बल का प्रतिकारी होता है सबल और अबल का ज्ञान फल प्राप्ति से होता है अन्यथा नहीं होता ५० फलकी प्राप्ति प्रत्यक्ष हेतु से नहीं देख पड़ती वह पूर्व्व कर्म्म हेतुकी अन्यथानहीं यह निश्चय है ५१ जो थोड़ी क्रियासे बड़ाफल प्राप्तहोता है वह भी पूर्व्व जन्मके कर्म्मसे होता और कोई कहतेहैं किपूर्व्व कर्म्मऔर इस जन्मके कर्म्मसे होताहै ५२ कोई कहते हैं कि इसलोककी क्रियासे मनुष्योंका पौरुष सिद्ध होता है क्योंकि तेल सहित ब-

त्तीसे युत दीपकी रक्षा वायु से यत्न पूर्व्वक होतीहै ५३ अवश्य भावि भावका जो प्रतीकार न होता तो बुद्धि बलके सदृश दृष्टों का क्षपण अर्थात् नाश उत्तमहोताहै ५४ इस्से प्रतिकूल और अनुकूल फलों करके ईषत् मध्य अधिक तीन प्रकार से दैव की चिन्तना करै ५५ रावण और भीष्म के बनभङ्ग और गोग्रह में एक बानर या नरसे प्रतिकूलता विदित होती है ५६ काल की अनुकूलता श्रीरामचन्द्र और अर्ज्जुनसे स्पष्ट है और जो भाग्य अनुकूल होता है तो सब कर्त्तव्यता थोड़े श्रमसे सफल होती है ५७ और जो भाग्य प्रतिकूल होता है तो बड़ी भी सत्क्रियाअनिष्ट फल देनेवाली होती है जैसे दानसे बलि और हरिश्चन्द्र बांधे गये ५८ सत्क्रियासे इष्टफल मिलता और असत्क्रियासेअनिष्ट फल मिलता है शास्त्र से सत् असत् को जान के असत् को छोड़ सत्कर्म्म करै ५९ काल और सत् और असत्कर्म्म का कारण राजाहै वह अपनी क्रूरता और उग्रदण्ड से प्रजाको अपने धर्म्ममें स्थापित करै ६० स्वामी १ मन्त्री २ सुहृद ३ कोश ४ देश ५ दुर्ग्ग ६ सैन्य ७ राज्य में सात अङ्गहैं और सबसे शिरा राजा है ६१ अमात्य दृष्टि सुहृत् कान कोश मुख सैन्यमन हाथ और चरण किला और देश ये राज्यके अङ्गहैं ६२ ऐश्वर्य के देनेवाले अङ्गोंके गुण क्रमसे कहते हैं कि जिन गुणोंसे युक्त राजा वृद्धिमान् होतेहैं ६३ जिस तरह चन्द्रमासे समुद्रको आनन्द होताहै उसी तरह वृद्ध सम्मत राजा राज्यकी वृद्धिकेलिये हेतु है ६४ जो राजा अच्छी तरह प्रेरक न हो तो जिस तरह बिना मलाहकी नाव नष्टहोती उसीतरह बिनाराजाके प्रजा नष्टहोजातीहै ६५ बिनाराजा के प्रजा अपने २ धर्म्ममेंनहींरह सक्ती और प्रजाके बिनापृथ्वीमें राजानहीं शोभादेता ६६ न्यायमें प्रवृत्त राजा अपनेको और प्रजाको त्रिवर्ग्गसे धारण करै अन्यथा

निश्चय करके नाशको प्राप्तहोता है ६७ धर्म्मराज पवन भोगी राजा धर्म्मसे पृथ्वीतलको प्राप्त हुये और अधर्म्मसे राजा नहुष रसातलको प्राप्तहुये ६८ राजाबेणु अधर्म्मसे नष्टहुये और राजापृथु धर्म्मसे वृद्धिको प्राप्तहुये इसीसे धर्म्मको आगेकरके राजा यत्न करै ६९ जो धर्म्मपर राजा देवांश या राक्षसांश को अपना अंश करै और धर्म्म लोपकहो वह प्रजा पीड़ा कर होताहै ७० इन्द्र वायु यम सूर्य्य अग्नि बरुण चन्द्र कुवेर इनके शाश्वत अंशसे ७१ और जङ्गम स्थावरके अंश और अपने तपसे राजा उत्पन्न होताहै भाग भागी रक्षामें दक्ष जैसे इन्द्र उसी तरह राजा होताहै ७२ जिस तरह गन्धका प्रेरक वायुहै उसीतरह सत् असत्कर्म्मका प्रेरक धर्म्म प्रवर्त्तक राजाहै जिसतरह प्रकाशक और तमनाशक रवि हैं ७३ दुष्कर्म्मियों को यम की तरह राजा दण्डदे जिस तरह अग्नि पवित्रहै उसीतरह राजा पवित्रहै और रक्षा के लिये सबका भागले ७४ बरुण जलसे सबको पुष्टकरते और राजा अपनेधन से पुष्टकरता और चन्द्रमा किरणोंसे सबको पुष्टकरते और राजा अपने गुण कर्म्मसे सब प्रजा को पुष्ट करताहै ७५ जिस तरह निधियोंकी रक्षामें कुवेर प्रवृत्त रहते हैं उसीतरह कोशकी रक्षामें राजा प्रवृत्तरहै और चन्द्रांशबिना अन्य सबगुणोंसे राजाशोभित नहींहोता ७६ पिता माता गुरू भाई बन्धु कुबेर यम सदा राजा इनसातोंके गुणोंसेयुक्तहो ७७ राजा प्रजाके गुणसिखलानेमेंसदा पिताकीतरहरहै और अपराधोंके क्षमाकरनेमें पुष्टताकीचाहने वाली माताकी भांतिहो ७८ जिसतरह शिष्यकाहित उपदेश कर्त्ता सुविद्याका पढ़ानेवाला राजाहो और शास्त्रके सदृश पिताकेधनसे जैसेभाई भागलेताहै उसीतरह राजा प्रजासेभागले ७९ आत्मा स्त्री धन गुह्यबातोंका रक्षकबन्धु मित्रकीतरहधनदेनेमें कुबेरऔर दण्डदेनेमें यमके सदृशहो ८० बढ़नेवाले राजामें ये गुणबसतेहैं

इनसात गुणोंको कभी न छोड़ै ८१ जोसमर्त्थहोके अपराधोंकी क्षमानहींकरतावही दण्डकरनेकेभीयोग्यहोताहैक्षमारहित राजा सम्पूर्ण सद्गुणोंसे युक्तभी नहींशोभित होता ८२ अपने दुर्ग्गुणों कोछोड़के अतिवादकोसहै और दानमान सत्कारसे प्रजाको सदा प्रसन्नरक्खै ८३ दान्त शूर शस्त्र अस्त्रमें निपुण शत्रुनाशक अस्व-तन्त्र बुद्धिमान् ज्ञान विज्ञान संयुक्त ८४ नीच हीन दीर्घदर्शी वृद्ध सेवी सुनीतियुत गुणियोंसेयुक्त ऐसाराजा देवतांश कहलाताहै ८५ इस्से विपरीत रक्षोंऽश सो नरकपात्र होताहै और नृपांशके सदृश उसके सहायगणभी होतेहैं ८६ राजातत्कृतको मानतातुष्ट होता और उनकेआचरणसे आनन्दित होताहै दैवबलसे अन्यथा नहींहोता ८७ मनुष्यकृत कर्म्मफलको अवश्य भोगता है प्रति-कार बिनानहीं होता और प्रतिकारकरनेसे ८८ जिसतरह दवा कियाहुआ रोग भोगकरनाहोताहै उसीतरह कृत कर्म्म अवश्य भोगना पड़ताहै दुःखहेतुके जाननेसे उस्केहोनेमें कौन यत्नकरता है ८९ सत्फलमें सबका चित्तलगता है और दुष्फलमें किसीका चित्तनहीं लगता सत् असत् के बोधकशास्त्रको देखके कर्म्म करै ९० नीतिका मूल विनयहै वह विनयशास्त्र निश्चयहोताहै विन-यसे इन्द्रियोंको जीतता विनय युक्त शास्त्रको पाताहै ९१ राजा प्रथम आपविनय युक्तहो तत्पश्चात् पुत्रमन्त्री भृत्यको तदनन्तर प्रजाको नम्रतासे युक्तकरै ९२ राजा केवल परोपदेश कुशलनहो ऐसाहोनेसे सगुणभी राजाराज्याधिकारसे च्युतहोताहै ९३ जिस प्रकार इन्द्र बिनाइन्द्राणीबिधवा नहींहोती उसीतरह दुर्ग्गुणभी प्रजाबिना राजाकेकभीनहींहोती ९४ राज्य भ्रष्ट राजाहीहोताहै मंत्री बन्धु पुत्र आदिराज्य भ्रष्टनहींहोते ९५ सदाप्रधान आदिमें अनुरक्तप्रजापालनमें तत्पर नम्रस्वभावराजाबड़ी लक्ष्मीकोपाता है९६ गहन विषयबनमें धावतेमददुर्द्धरइन्द्रियरूप हाथीकोज्ञानां-

कुशसे बशमेंकरै ९७ विषयरूप मांसके लोभसे मनइन्द्रियों की प्रेरणा करता है उनको यत्नसे रोंकके जितेन्द्रिय होताहै ९८ जो राजा एकमनके रोकनेमें समर्त्थ होताहै वहसागर पर्य्यन्त पृथ्वी का जीतनेवाला कैसे होसक्ताहै ९९ क्रिया वसानविरस अपहारी विषयोंसे आक्षिप्त हृदय राजा हाथीकी तरह बन्धनको पाताहै १०० शब्द स्पर्शरूप रस गन्ध इनमें एक २ विनाश के लियेहैं १०१ पवित्र दर्भांकुराहार दूरभ्रमणमें समर्त्थ मृगलुब्धक गाये गीतके मोहसे मृग बधको ढूंढ़ताहै १०२ पर्ब्बताकार सहल में वृक्षका तोड़ने वाला हाथी हस्तिनी के स्पर्शके मोहसे बन्धनको प्राप्त होताहै १०३ कोमल दीपकी शिखाके देखने से चञ्चलनेत्र मोह पूर्ब्बक शीघ्रता से पतित पतङ्ग मृत्युको प्राप्त होताहै १०४ अगाध जलमें मग्न दूर रहने वाला मत्स्य मृत्युके लिये मांससहित लोहको खाताहै १०५ छेदन करनेमें समर्त्थ और उड़नेमें सपक्ष भ्रमर गन्धके लोभ से कमलमें बन्धन को प्राप्त होता है १०६ विष सदृश विषय एकएक नाश करतीहैं और जो पांचों मिलतीहैं तो क्यों न नाशकरैं १०७ जुआस्त्रीमदिरा ये तीनोंअनर्त्थके करने वालेहैं अयुक्त युक्ति युक्तहों धनपुत्र बुद्धिप्रदहैं १०८ राजा नल और युधिष्ठिर जुआसे नाशको प्राप्तहुये कपट सहित जुआउस्के जानने वालोंको धनकेलिये है १०९ स्त्रियोंका नामभी आनन्ददहै मनको विकार युक्तकरता है और उनके बिलाससे उल्लसितभौंह स्त्रियोंके दर्शनमें क्याकहैं ११० एकान्तके कार्य्य में निपुण कोमल और गद्गद भाषिणी रक्तान्तलोचना नारीकिसको बशनहीं करती १११स्त्री मुनियोंके मनकोभी अवश्य बश्यकरती है जितेन्द्रिय और अजितात्माओंकी क्याबातहै ११२ पर स्त्री कीइच्छा करतेहुयेइन्द्र दण्डकी नहुष रावण आदि बहुतसे नाश को प्राप्तहुये ११३ जोतत्पर न रहोउसको स्त्री सदा सुखदेती है

गृहके कार्य्य में सहायिनी स्त्री को छोड़ और कोई नहीं है ११४ बहुतमदिरापीनेवालेकी बुद्धिलोपहोतीहै और थोड़ापीनेमेंप्रतिभा बुद्धि वैशद्यधैर्य्य चित्तविनिश्चयहोताहै ११५थोड़ापीनेसे मदिरा उत्तमहैबहुत पीनेसे बिनाशहोताहै अधिक मदिरा काम क्रोध मद्य तमको यथोचित होतेहैं ११६ जयार्थीराजा प्रजा पालन में काम औरशत्रुके दबानेमें क्रोध औरसेनाकेसंधारणमेंलोभकी योजनाकरै ११७ पर स्त्री सङ्गममें काम और अन्य धनमेंलोभ और स्वप्रजाके दण्ड देनेमें क्रोधको राजा धारण न करै ११८ परस्त्रीसङ्गम से मनुष्य कुटुम्बी नहीं होता और प्रजाके दण्डसे शूर नहीं होता और अन्य के धनसे धनी नहीं होता है ११९ अरक्षिता राजा औरअतपस्वी ब्राह्मण अदाता धनी को देवता मारते और नीचे गिरा देतेहैं १२० स्वामित्व दातृत्व धनिकत्व ये तपके फल हैं और याचना दास्यत्व दरिद्रता पापके फलहैं १२१ बहुतशास्त्रों को देखके यथोचितआत्माका नियमकरके परलोक और इसलोक के सुखके लिये स्वप्रवृत्ताकरै १२२ दुष्ट निग्रहण दान प्रजापालन राजसूयआदिका यजन न्यायसे कोशकाइकट्ठा करना १२३ भूपोंसे करलेना शत्रुका मर्द्दन भूमिका उपार्ज्जन ये ८ प्रकार के राजवृत्तहैं १२४ जिस राजाने बलको नहीं बढ़ाया और राजों से जिसने कर नहींलिया और जिसने प्रजा को नहीं बढ़ाया है वह षंढ तिल राजाहै १२५ जिस्से प्रजा उद्वेग करै और जिसके कर्म्मकी प्रजा निन्दा करै और धनी और गुणी जिसका त्याग करैं वह नृपाधम है १२६ नट गायक वेश्या मल्लहीजड़ाछोटी जातिमें जो बहुत शक्त होता वह राजा शत्रु मुखमें स्थित रहता है १२७ जोराजा बुद्धिमान्से द्वेष करताहै और बच्चकोंके साथ आनन्दित होता और अपने दुर्ग्गुण को नहीं जानता वह राजा अपना नाश करताहै १२८ जो राजा दूसरेके अपराधको क्षमा न

करै और क्रूर दण्डमें धन हरै और अपने दुर्ग्गुणके सुननेसे लोक को पीड़ादे १२६ कभी २ राजा जिस्से लोक क्षुब्ध और भिन्न हो और गूढ़चारोंके द्वारा सुनाके यह जानै कि कौननिन्दाकरताहै १३० उसके जाननेवाले मन्त्री आदि किस भावसे भूषित करते और मुझमें कैसी प्रीति रखते हैं और कौन अप्रीति करते हैं १३१ मेरे गुण या अगुण से प्रजा अप्रसन्नहै इसतरह हलकारोंसे राजा सदा अपने अगुणको जानै १३२ हेराजन् लोक आपकी निन्दा करतेहैं यह चारोंसे सुनके सुकीर्त्तिके लिये त्याग करै और प्रजाका अपमान न करै १३३ आत्म दुर्ग्गुण लोपक अपनी दुरात्मतासे कोप करताहै उत्तमभी सीताको लोकापवाद से रामचन्द्रजीने त्यागकिया १३४ समर्त्थ रजकको थोड़ाभीदण्ड न दे और ज्ञान विज्ञान सम्पन्न और राजदत्ता भयको भी कभी दण्ड न दे १३५ राजाका बड़ा भी दूषण हो तो भी कोई नहीं कहता क्योंकि विष्णु आदि देवता स्तुति प्रिय होतेहैं १३६ और मनुष्यकी क्या गणनाहै इसीसे निन्दासे क्रोध होताहैराजा सुभाग्यकोशुभ दण्डदे सुक्षमी और प्रीति करानेवाला हो १३७ यौवन जीवित चित्तछाया लक्ष्मी स्वामिता ये छः चञ्चलहैं इस्से धर्म्मरत होना चाहिये १३८ इन से अन्य गुणोंसे सबंश प्रजा प्रीति युक्त होतीहै इनमेंसेएकभी दुष्कीर्त्ति को करताहै और सब मिलेहुये दुष्कीर्त्ति को क्यों न करैं १४० शिकार जुआ मद्य पान यहराजाको निन्दितहै इनसे पाण्डुनैषध वृष्णि बंशमेंविपत्ति देखीहै १४१ कामक्रोध मोह लोभ मानमद इस षट्वर्ग्गकात्याग करै इनके त्यागसे राजासुखी होताहै १४२ दण्डक्य राजा काम से और जनमेजय क्रोधसे लोभसे राजार्षऐल और मोह से वातापी असुर १४३ मानसे रावण मदसे दम्भोद्भव नृपशत्रु षट्वर्ग्ग के आश्रित होके ये छः मृत्युको प्राप्तहुये १४४ शत्रु षट्वर्ग्ग का

त्याग करके परशुराम और राजाअम्बरीषने बहुत दिनतक पृथ्वी का भोग किया १४५ सज्जनों करके आदरसे सेवित धर्म्म अर्थ को बढ़ाता हुआ इन्द्रियोंका दमन करगुरु सेवाकरै १४६ शास्त्र के लिये गुरु संयोग और बिनय वृद्धिके लिये शास्त्र और बिद्या से नम्र राजा सज्जनोंका सम्मत होताहै १४७ ऐसा राजाअसद्वृत्तोंसे प्रेरित अकार्य्य में नहीं प्रवृत्त होता श्रुतिस्मृति लोक मनसे उत्तम कार्य्य का निश्चय करलेना है १४८ पण्डित धर्म्म कर्म्म संज्ञक कार्य्यकी व्यवस्था करताहै और पण्डित राजा आदान प्रतिदानकी कलाको अच्छीभांति जानताहै १४९ जितेन्द्रिय और नीतिज्ञराजाकी लक्ष्मीप्रफुल्लित होती और कीर्त्तिआकाश तक पहुंचतीहै १५० आन्वीक्षिकी त्रयी बार्त्ता दण्डनीति इनचार बिद्याओंको सदा राजा अभ्यास करै १५१ आन्वीक्षिकी में तर्क और वेदान्त आदि प्रतिष्ठितहैं और त्रयी बिद्यामें धर्म्म अधर्म्म कामअकाम प्रतिष्ठितहैं १५२ बार्त्तामें अर्थानर्थ और दण्डनीति अनीतिहैं वर्ण और सम्पूर्ण आश्रम सम्पूर्ण अपनी बिद्यामें प्रतिष्ठितहों १५३ अङ्ग चारों वेद मीमांसा न्याय धर्म्मशास्त्रपुराण यह सब त्रयी कहलाते हैं १५४ ब्याज लेना खेती वाणिज्य गो रक्षा बार्त्ता सेहैं बार्त्ता सम्पन्न साधु वृत्तिभयको नहीं प्राप्त होता है १५५ दम दण्ड कहलाता इसी से भूपति दण्ड कहाताहै उसकी नीति दण्ड नीति कहाती और नयनसे नीति कहीजाती है १५६ आन्वीक्षिकी विद्या आत्म विज्ञान से हर्ष शोक को दूर करतीहै त्रयी बिद्यामें यथा बिधिस्थित लोक परलोक दोनों को प्राप्त होताहै १५७ सम्पूर्ण जीवधारियोंका अहिंसा परमधर्म्म है इस्से राजा अहिंसापूर्ब्बक दीनजनोंकी रक्षाकरै १५८ अपने सुखकी इच्छा करताहुआ दीनजनको पीड़ा न दे दीन पीड़ितहो के अपनी मृत्युसे पार्थिवको मारताहै १५९ सुजनोंके सङ्गसज्जन

को सुखी और धर्म्मात्मा करता है सुजनों से सेव्यमान राजा बहुत शोभित होताहै १६० चन्द्रमा का किरण प्रफुल्लित कमल युत सर जैसे सुजनकी चेष्टा आनन्द देतीहै उसी तरह वे चित्त को आनन्दित करतेहैं १६१ गर्म्मीके सूर्य्यकी भांति सन्तप्तउद्वेग करानेवाला अनाश्रय निर्ज्जल देशकी भांति उग्रदुर्ज्जन के सङ्गका त्यागकरै १६२जिसके श्वाससे अग्नि निकलतीहो उसके धूमसे धूम्र बर्णहै मुख जिसका ऐसेका सङ्ग दुर्ज्जन सङ्गसे उत्तम है १६३ जिसतरह पूजनीय सुजनोंके लिये अंजलि बांधी जाती है उसी तरह अपने हितका चाहनेवाला दुर्ज्जनों को बहुत हाथ जोड़ै १६४ सुजन नित्य मनोहर बचनोंसे जगत्को प्रसन्नकरते हैं दुर्ज्जन क्रूर बाक् कुबेरके सदृश भी होतो प्राणियोंको उद्विग्न करताहै १६५ जैसे हृदयमें बिद्ध मनुष्य सदा तप्त होताहै उसी तरह पीड़ितभी बुद्धिमान् मनुष्य छोटे बचनकोनहीं कहता१६६ सज्जन और शत्रुमें सदा जनप्रिय मोर की तरह मीठे बचन को बोलै१६७ जैसे विपश्चितके बचनका स्वीकारकरै उस तरहमद रक्त हंस कोकिल मुरैला के बचन का ग्रहण न करै १६८ जो मनुष्य सदा प्रिय बोलताहै और सुजनोंका प्रिय चाहताहै वह श्रीमान्वन्द्य चरित नर रूप धरे देवता है १६९ दया, मैत्री दान, मीठे बचन इनकेसमान वशीकरण तीनों लोकमें औरनहीं है १७० वैदिक सद्भावसे पूतात्मा देवपूजक हो और देवता के तुल्य गुरुजन और अपने सदृश सुहृदों को जानना १७१ गुरु जनों को प्रणाम और सुजनोंको गौरवसे और सुकृत कर्म्म अपने ऐश्वर्य्यके लिये देवोंको सम्मुख करै १७२ सद्भावसे मित्र और बान्धवोंको और स्त्री और सेवक प्रेममानसेऔर चतुरतासे इतर जनों को बशमें लेआवै १७३ बलवान् बुद्धिमान् शूर यथा योग्य पराक्रमी भूपति वित्त पूर्ण पृथ्वीका भोग करता और राजाहोता

है १७४ पराक्रम बल बुद्धि शूरता इन श्रेष्ठ गुणों से हीन और अन्य गुणोंसे युक्त हो तो राजा और धनीहो १७५ शीघ्रता से थोड़े जीवोंका भी राजा नहीं होता और राज्य का नाश होताहै और महाधन से छोटा राजा बड़ा विदित होता है १७६ इन्हीं गुणोंसे अव्याहताज्ञ और तेजस्वी होताहै अन्य साधारणराजा भू प्रसाधनमें समर्त्थनहीं होते १७७ देव दैत्य विनाशिका यह भूमि सब धनकी खानि है भूमिके अर्त्थ सबभूमि पति अपनाश करते हैं १७८ जिस धनसे जीवितकी रक्षाहोतीहै वह धन उपभोगके लिये है और जिसने भूमिकी रक्षा न की उसके धनजीवित से क्या है १७९ सञ्चित धन यथेष्ठ व्ययके लिये नहीं होता सदा प्राप्ति बिना कुबेरका भी धन नष्ट होताहै १८० इन गुणों से राजा पूज्य होताहै राज कुलका राजा नहीं होता जिसतरह बल शौर्य्य पराक्रमसे राजा पूज्य होता है उस तरह कुल करके नहींपूजितहोता १८१ जिस राजाके राज्यते प्रजा पीड़न प्रति बर्ष एकलाख रुपया मिलै १८२ वह राजा जब तक तीनलाख न हो सामन्त कहाताहै उसकेऊपर दशलाख तक हो तो माण्डलिक कहाताहै १८३ उसके ऊपर बीसलाख तक राजाकहाता हैऔर पचास लक्ष तक रुपया होने से महाराज होता है १८४ और एक करोड़बर्षकी आमदनी होनेसे स्वराट् और सम्राट् कहाताहै और दशकिरोड़की आमदनीहोतो विराट् कहाताहै १८५ उसके बाद पचास किरोड़की आमदनी बर्ष दिनमें होतो सार्व्वभौम कहाता और सप्तद्वीपा पृथ्वी उसके बश में होतीहै १८६ दास्यत्वमें स्वभाग भृत्य प्रजाके नृप करै ब्रह्माने स्वामीका रूप सदा पालन के लिये किया है १८७ सामन्तादि सम पृथ्वी में जिन भृत्योंको अधिकार दियाजाय वहभी सामन्त संज्ञाको पाके क्रमसे राजभाग हर होतेहैं १८८ और सामन्तादि पद भ्रष्ट

और अपने सदृश वेतन पानेवालेहों वह महाराजों से छोटे होते हैं १८९ सौ ग्रामका स्वामीभी सामन्त कहाताहै और सौग्राम में राजा जिसको अधिकार दे वह अनुसामन्त कहाता है १९० और दश गांवमें राजा जिसको अधिकारदे वहनायक कहाता है दशहजार ग्रामका स्वामी दिगीश या भागभाक् अथवा स्वराट् कहाता है १९१ कोशभरका हजार रुपयेकी आमदनी का ग्राम कहाताहै और ग्रामार्द्ध पल्ली और पल्लीका आधा कुम्भ कहाताहै १९२ प्रजापति का कोश पांचहजार हाथ का होताहै और मनु जीका कोश चारहजार हाथका होताहै १९३ ब्रह्मा के कोशका क्षेत्र ढाई किरोड़ हाथ का होता और पच्चीस सौ विनिवर्त्तन से क्षेत्र होताहै १९४ बीचकी उंगुलीकेबीचके पर्व्वकी दीर्घता अंगुल होता और आठ यवोदर के सदृश दीर्घ और पांच यवोदर के सदृश मुटाई होतीहै १९५ चौबीस अंगुल का प्रजापति का एक हाथ होताहै वही भूमि मानमें श्रेष्ठहै अन्यअधम है १९६ चारहाथका लघुदण्ड और पांचहाथका मोटा दण्ड होताहै उसका मान पांचयव का होताहै वही मनुका मानहै १९७ सातसौअड़सठयवसे प्रजापतिका दण्ड होताहै और छःसौ यवोदर से मनुजीका दण्ड कहा है १९८ पच्चीस दण्डों से दोनों का निवर्त्तन होताहै तीन हजार अंगुल और तीन हजार अथवा पांच हजार यवसे १९९ अथवा सवासै हाथ से मनुजी का निवर्त्तन होताहै अथवा उन्नीस हजार दोसौ यवोदरसे होताहै २०० चौबीससौ अंगुलोंसे निवर्त्तन होता और प्रजापतिका निवर्त्तन सदा सौहाथ का होताहै २०१ दोनों के निवर्त्तन में सवा छः सौ दण्ड होतेहैं और सदा दोनों का विनिवर्त्तन पच्चीस होता है २०२ और पचहत्तर हजार अंगुलों से मनुका परिवर्त्तन होताहै और साठि हजार अंगुल से प्रजापतिका मानहोताहै २०३ और तीनहजार

सवासौ हाथका मनुका परिवर्त्तन होता और पच्चीस हाथका प्रजापतिका २०४ और पौने चार लक्ष यवसे मनु का परिवर्त्तन और चारलाख अस्सी यवसे प्रजापतिका परिवर्त्तन २०५ मनु के मानसे बत्तीस निवर्त्तन हैं और चार हजार हाथ के आठसौ दण्ड होते हैं २०६ परिवर्त्तन में पच्चीस दण्ड का भुज होता है और दश हजार हाथसे उसका क्षेत्र कहाता है २०७ चार भुज का सम कहाता और कष्टभू परिवर्त्तन प्रजापति के मानसे राजा पृथ्वीका भागले २०८ विपत्ति कालमें राजा मनुजी के मानसे करै और लोभ से अधिक ले तो प्रजा सहित राजा नष्ट होताहै २०९ राजादो अंगुलभी पृथ्वीदूसरेको न दे जबतक गाहकजीवे तबतक उसकी वृत्तिके लिये दे २१० गुणी राजा देवताके अर्थ सदा पृथ्वीका दानदे और कुटुम्बी को देखके बागीचा और गृह के लिये पृथ्वीदे २११ नाना वृक्ष लता युक्त पशु पक्षिगणावृत जहां पानी औ धान्य बहुतहो जहां तृण काष्ठका सुखहो २१२ सिन्धुतक नौकाके जानेके अनुकूल पर्व्वत के निकट सुरम्य पृथ्वी में राजा राजधानी बनावै २१३ गोल या अर्द्धचन्द्र चौकोन सुशोभन कोट खन्दक युक्त जिसमें ग्राम आदि आसकें २१४ मध्यमें सभा कूप बापी तड़ागादि से युत चारों दिशामें चारदरवाजे सुमार्ग बागकीपंक्ति २१५ पुष्ट देवालय मठ पान्थशाला से विराजित ऐसी राजधानी बनाके प्रजा सहित सुगुप्त राजा बसै २१६ और राजगृह सभामध्य गऊ घोड़े अश्वशाला से युक्त और प्रशस्त बापी कूप आदि और जल यन्त्रोंसे युक्तहो २१७ चारों भुजासम हों दक्षिणोच्च और उत्तर नत शाला बिना और एक गृह भुज और विषम भुज न हो २१८ अक्सर शाला एक भुज नहीं होती चतुर्भुजशाला बिनाशुभ है और खन्दक बन्दूक ढाल तलवार धारियों से विराजित हो २१९ चारों दिशामें डेवढ़ी के तीन दरवाजों

में दिनरात प्रति दरवाजों पै शस्त्रास्त्रधारी रक्षाकरैं २२० चार पांच अथवा छः पहरा देनेवालों से सब गृहयुत हों २२१ वस्त्र धोने स्नान पूजन भोजन पाक के लिये पूर्व्वदिशा में गृह बनावै २२२ और निद्रा विहार पान रोदन घरटा धान्य और दासी दासके अर्थ २२३ उत्सर्ग के लिये दक्षिणमें क्रमसे इन गृहोंको बनाके गऊ मृग ऊंट गज आदि के लिये पश्चिम तरफ गृह बनावै २२४ रथ घोड़े शस्त्र अस्त्रमल्ल और सिपाही वस्त्र द्रव्य विद्याभ्यास के अर्थ २२५ उत्तर ओर सुगुप्त सुन्दर गृह बनावै अथवा राजा इनगृहों को यथा सुख बनावै २२६ न्यायसभा और मिस्तरी खाना गृह से उत्तर बनावै और भीत के विस्तार से पञ्चमांश अधिक उंचाई करै २२७ और कोष्ट अर्थात् खने के विस्तार के षष्ठांश के सदृश स्थूल भीत बनावै एक भूमिका यह मानहै औ द्विमंजिला के मकानमें भी यही मानकरै २२८ स्तम्भ और भित्तिमें प्रतिकोष्ट करै तिखना पंचखना सतखना गृहबनावै २२९ गृहके आठ भागकरके बीच के दो अंशमें द्वार करके दोदो चारों दिशामें करै तो धन पुत्रकी वृद्धिहो २३० उसी भागमें द्वारकरै अन्यथा न करै और अलगकोष्ट जिसतरह सुखहो वातायन बनावै २३१ अन्यगृहकेद्वारसे बिद्ध गृहद्वार न करै और वृक्षकोणस्तम्भ मार्ग्ग पीठ कूपसे वेधित न करै २३२ देवगृह और राज गृह के मार्ग्गमेंवेधनहो घरोंवा पा याचतुर्थांश ऊंचाकरै २३३ और कोई कहतेहैं कि प्रासाद और मण्डप का अर्द्धांशव रै परायेके वातायन से विद्ध वातायन न करै २३४ विस्तारके अर्द्धांशके मूलके सदृश ऊंची छदिबनावै जिसके ऊपर गिराहुआ जल सुखसे नीचे गिरै २३५ हीन निम्न छदि न करै जैसा कोठे का विस्तार हो वैसी बनावै और उसकोठेकी उंचाईके सदृश मूल वा प्राकार सममूलक हो २३६ उंचाई का अर्द्ध विस्तर मूल के तृतीयांश के सदृश

करै उसी तरह ऊंचा करै जिस्से चोर न नांघसकै २३७ पहरू से रक्षित तोप बन्दूक मण्डित और बहुतसे बुर्ज्ज औ गवाक्षोंसे शोभितहो २३८ प्रति प्राकार स्वहीन अर्थात् परकोट और पर्ब्बत समीप न हो तत्पश्चात् परिखा खातसे द्विगुण करै २३९ उस राज सभाके थोड़ी दूरपै अगाध जलसे शोभित हो युद्धकी सामग्री और बीरोंसे रहित हो २४० किलेका रहना राजाको शुभ नहीं केवल बन्धन के लियेहै राजासुगुप्त और सुमनोरम सभा करै २४१ तीन पांच सात खाने सुविस्तृत उत्तर दक्षिण दीर्घा पूर्ब्ब पश्चिम द्विगुणा राज सभाहो २४२ तिखना इक खना अथवा दुखना या तिखना इच्छापूर्ब्बक करै जिस्से ऊपर के गृह सुखपूर्ब्बक बनसकैं २४३ और चारों तरफ बातायनसे शोभित हो और बगलके कोठेसे बीचके कोठेका विस्तार द्विगुणहो २४४ और मध्य कोष्टके विस्तारसे पञ्चमांशाधिक उंचाई करै २४५ कोठेकी भूमि अथवा छदि वहां बनावै और बगलके कोष्ट द्विभूमिक और बीचका कोष्ट एक भूमिका हो २४६ बगलके खने के कोठेसे युक्त आनेके चार मार्ग्गोंसे शोभित फुहारे और सुस्वरयंत्रों से युत हो २४७ पङ्क्ति घड़ी आदर्श और प्रति रूपक यंत्रोंसे प्रतिष्ठित हो २४८ अकार्य्य दर्शन में मंत्रार्त्थ ऐसी राज सभा करै उसीतरह अमात्य लेख्य अदालति वालोंकाभी गृहहो २४९ इन मंत्रियों के स्थान राज गृह से सौहाथ भूमि छोड़ के बनावै और इनके अर्त्थजुदा २ हों २५० दोसौहाथ उत्तर पूर्ब्बसेना संवेशत राज गृहसे दूरप्रजाके गृह हों २५१ धनी उच्च जाति के अनुक्रमसे सदा चारोंदिशामें बुद्धिमान् राजा बसावै २५२ प्रजा अधिकारि गण सेनाधिप पैदर सवार २५३ घुड़शाल पीलखाना गजपालगण तोपखाना रिसाला २५४ गोला वाले भिल्ल क्रमसे राजपुर में इन सबके गृहहों २५५ तत्पश्चात् सुगुप्त और सु-

जलाशय सराय बनावै और सजातीय गृहके समूह पंक्तिसे हों २५६ पुर और ग्राममें फाटक उत्तर या पूर्व्वमुखहो और एक जातिके दुकानेहों तो बाजारमें फाटक करै २५७ और राजमार्ग्गके बगल में क्रम से सर्राफ आदिको बसावै इस प्रकार राजा नगर गांव बसावै २५८ राजा के गृह से चारोंतरफ राजमार्ग्ग करै और उत्तम राजमार्ग्ग तीसहाथ का होताहै २५६ बीस हाथ का मार्ग्ग मध्यम और पन्द्रह हाथका अधम मार्ग्गहोताहै उसी तरह बाजार पुरग्राममें मार्ग्ग करै २६० तीनहाथ की पद्या पांचहाथ की बीथि मार्ग्ग दशहाथ का इसप्रकार ग्राम और पुर में रास्ता बनावै२६१पूर्व्व पश्चिमदक्षिण उत्तर ग्रामकेमध्यसे मार्ग्गको करै राजापुरको देखके बहुतमार्ग्गकरै २६२ राजधानीमें तीन अथवा पांच हाथ का राजा मार्ग्ग न बनावै और राजधानी से चौबीसकोसपै बनमें उत्तम राजमार्ग्ग बनावै २६३ राजधानी से बारह कोशपै मध्यममार्ग्ग और छःकोशपै अधममार्ग्ग करै और गांव गांव में दशहाथ का मार्ग्ग बनावै २६४ कछुवेकी पीठ के सदृश पुल सहित गांववाले मार्ग्ग बनावै और सड़कके किनारेपै जलके निकलनेकेलियेनाली बनावै २६५ सम्पूर्ण गृहराजमार्ग्ग मुखहों और गृहके पीछे बीथी और मलके निकलने का स्थान हो २६६ दोनों पांतिमें जो गृहहों उनकेमार्ग्ग को प्रतिबर्ष चूने और सुर्खीसे बनावै २६७ मजदूर या बंधुओं से उस मार्ग्ग को राजाबनवावै और दोगांवके बीचमें धर्म्मशाला बनवावै २६८ ग्रामका स्वामी प्रतिदिन उस धर्म्मशाला को साफकरावै और उसकी रक्षाकरै और शाला में आयेहुये को शाला पति पूछा करै २६६ उस्से पूछै कि कहांसे आतेहो कहांजावोगे सत्यकहो इकल्ले हो या अन्य कोई शस्त्र या बाहन भी है २७० कौन जाति कुल और नामक्या है बहुत दिनों से कहां रहते हो उसका शस्त्र

सायङ्कालमें लेकेऔर सम्पूर्ण वृत्तपूछकेलिखै२७१ सावधानमन होके सोतेहुये पान्थों को सिखलादे शालामें जोठहरे हों उनको गिनके शालाका दरवाजा बन्दकरै २७२ रात्रि में पहरावालोंसे उनकी रक्षाकरै प्रातःकाल उनकोजगावै शस्त्र देकर उनको गिनै द्वारखोल के उनको निकाल दे २७३ और अपनी हद्दतक गांवके लोगउनकी सहायताकरैं और राजा राजधानीमें रहकर दिनकी कृत्यकरै २७४ रात्रिके चौथेपहर के दोमुहूर्त्तमें राजा उठके यह विचार करै कि कितनी जमाहै और कितनाखर्चहै २७५ और कोशके द्रव्यमें से कितना खर्चहुआ व्यवहारके लिये जो द्रव्यथा उसमें से क्या खर्चहुआ २७६ देखने और लिखनेसे जानले कि पहिले क्या खर्चहुआ और अब कितनाहोगा उतनाही खजाने से मंगावै २७७ तत्पश्चात् पुरीषोत्सर्ग्ग करके मुहूर्त्त भर में स्नान करके सन्ध्या पुराण दानसेदो मुहूर्त्तबितावै २७८ सन्ध्या पुराण दानसे दोमुहूर्त्त बिताके गज अश्व यान कसरतसे प्रातःकाल दोमुहूर्त्त व्यतीतकरै २७९ पारितोषिकदान धान्य वस्त्र स्वर्ण रत्न सेना की आज्ञाके लिखनेसे मुहूर्त्तभर बितावै २८० और चारमुहूर्त्त तक जमा खर्चको देखके तत्पश्चात् मित्रोंसहित स्वस्थचित्त हो राजा भोजन करै २८१ नवीन और पुरानी बस्तुके प्रकट करने में एक मुहूर्त्त बिताके चारघड़ीदीवानी और फौजदारीका काम करै२८२ दोघड़ी शिकार खेलके एकघड़ी व्यूह का अभ्यास करै तत्पश्चात् एकघड़ी सन्ध्या करै २८३ पुनस्सायङ्काल में एक घड़ी भोजन करै और दो घड़ी हरकारेसे बातकरै तत्पश्चात्सोलह घड़ी शयन करै २८४ इसप्रकार बिहार करते हुये राजा सुखी रहता है तीस मुहूर्त्त करके दिन रातका विभाग करै २८५ स्त्री मदिरा के सेवनसे वृथाकाल को न बितावै जिस कालमें जो कर्म्म उचित हो उसी समय वहकर्म्मकरै २८६ समय पै वृष्टिहो तो पुष्टकरती

है अन्यथा विनाश करती है कार्य्य के स्थानों को पहरा वालों से बार बार २८७ नय नीति नति वित् सिद्ध बर शस्त्रों से चार पांच छः से सदा रक्षा करै २८८ राज्यकी खबर लिखने वालोंसे वहां के दिनकी कृत्य सुनै और प्रतिदिन पहरा देने वालों को बदला करै २८९ पहरा देने वाले टिकने वालों की रक्षा करें गृहस्थोंकी मज़दूरी से पोषित उन्हीं लोगों से राजा सम्पूर्ण वृत्त को सुनै २९० जो ग्राम से निकलै और जो ग्राममें जाय उनकी यत्न पूर्ब्बक परीक्षा करके निशान देकर जानेदे २९१ प्रख्यात वृत्त शील को बिना विचार किये जाने देवै और प्रति मार्ग्गमें आधे पहर पर सदा घूमा करै २९२ और पहरा देने वालों करके चोर और जारकी निवृत्ति करे इस प्रकार राजा प्रजाका शासन करे २९३ दास भृत्य भार्य्या पुत्र शिष्य को कभी हमारे देश के रहने वाले कठोर बचन न कहैं २९४ तोल आज्ञा वजन नाणक गाद सजाति धातु घृत २९५ मधु दुग्ध चर्ब्बी पीठा इस में कोई अन्य चीजका मेल न करे यह आज्ञा दे २९६ उचापति लेना स्वामि कार्य्य विलोभन दुर्वृत्त कारी चोर जार राजाका द्वेषी शत्रु २९७ उसी तरह अन्य अपकारियों की खुलासा रक्षा न करे और माता पिता और पूज्य पण्डित २९८ इन सत्वृत्त शालीका कभी अपमान और उपहास न करे और स्त्रीपुरुष और स्वामि सेवक में कोई भेद न करावै २९९ उसी तरह भाई गुरु शिष्य पिता पुत्र में भेद न करै और बावली कुआं बागीचा सीमा धर्म्म शाला सुरालय ३०० इनके मार्ग्ग को कभी न बिगाड़ै दीन और अन्धों को पीड़ा न दे जुआ मद्यपान शिकार शस्त्र धारण ३०१ गो गज अश्व ऊंट भैंस नर स्थावर बस्तु चांदी सोना रत्न मादक बस्तु विष ३०२ क्रय विक्रय मद्य सन्धान बेचने का पत्र दान पत्र ऋण निर्णय पत्र ३०३ वैद्यक इन सब को राजा की आज्ञा बिना न

करे महापाप शपथ निधि का ग्रहण ३०४ नवीन सभाके नियम का निर्णय जाति दूषण अस्वामि नाष्टिक धन संग्रह मन्त्र भेदन ३०५ और राजाके दुर्ग्गुण का लोप कभी न करे और स्वधर्म्म हानि असत्य पर स्त्री गमन ३०६ झूठी गवाही झूठा लिखना चोरीसे किसी बस्तुका लेना पट्टेसे अधिक करलेना चोरी साहस ३०७ मन से भी स्वामी का द्रोह न करै और भृत्यकी मज़दूरी में जोर या छल से न बढ़ावे ३०८ और सदा किसी को न दबावे परिमाण और उन्मान राज मुहर के द्वारा करे ३०९ सम्पूर्ण प्रजा केलोग गुण के साधन में तत्पर हों और अपराधी को पकड़ के फ़ौजदारी में सौंपदे ३१० और छोड़े हुये बैल आदिको कोई न बांधै ऐसी हमारी आज्ञा सुनके जो कोई अन्यथा करेंगे ३११ उन पापियों को बड़े दण्डसे हम शिक्षा करेंगे इस प्रकार डौंडी पिटवा के प्रजाको समझादो ३१२ और अपने हुक्म को लिख के राजा चौराहे पर लटकावे और दुष्ट और शत्रुओं में राजा सदा उद्यत दण्डहो ३१३ राजा प्रजा का पालन नीति पूर्ब्बक करे और राहियों के सुख के लिये राजामार्ग्ग की रक्षा करे ३१४ और जोराहियों के दुख दायियों को राजा मारे और तीन अंश से राजा सेना रक्खे और अर्द्धांश से दान करे ३१५ प्रजा और राज्याधिकारी अर्द्धांश से दान करें और अर्द्धांश से भोग करें और अर्द्धांश खजाने में रक्खें ३१६ और राजा को उचितहै कि लाभ के छठें भाग से खर्च करे यह बिधि सामन्त आदिमेंभी होना चाहिये न्यूनका व्यय न करे ३१७ राज्य, यश, कीर्त्ति, धन गुण जितने प्राप्तहों उनकी रक्षा करे और अन्य राज्य आदिको इकट्ठा करे ३१८ राज्य आदिकी रक्षा और इकट्ठा करने में राजा प्रयत्न करे और शूरता पाण्डित्य वक्तृत्व दातृत्व को कभी न छोड़े ३१९ बल पराक्रम नित्यउत्थान राज संग्राम और स्वामि कार्य्य

में ३२० प्राण भयको छोड़के शङ्का रहितहो युद्ध करे वह शूर है और पक्षको छोड़के बालक के सुभाषित का ३२१ ग्रहणकरे और धर्म्म तत्वकी व्यवस्था करे वह पण्डितहै प्रत्यक्ष भी राजा के दुर्ग्गुणों को शङ्का रहित हो कहै ३२२ वही बक्ता है जो गुण के तुल्य कभी स्तुति न करे और जिसके कोई स्त्री पुत्र धन आदि अदेय न हो ३२३ और पात्र में अपने को भी दे वह दाता है अशङ्कित हो कार्य्य को विलक्षण करे वह बल कहाता है ३२४ जिससे अन्य राजा सेवक से मालूम हों वह पराक्रम कहाता है और युद्ध के अनुकूल व्यापार उत्थान कहाता है ३२५ विष दोष भयसे बानर कुक्कुट हंसके द्वारा अन्न का शोधन करे विष देखके हंस गिरते भ्रमर कूजते मयूर नाचते हैं ३२६ विषको देखके मत्त हो कुक्कुट शब्द करता क्रौंच और कपि बमन करते न्योला रोमाञ्च करता मैना बमन करतीहै ३२७ इस प्रकार जानके राजा भोजनकी परीक्षाकरे राजा नित्यही षटरसका भोजन करे दो तीन रस मिलाके न खाय ३२८ थोड़ाबहुत कटु मधुर क्षार न खाय जो कार्य्याधिकारी कहैं उनसबको दीवानके द्वारा सुनै ३२९ और राजा प्रजा और स्त्री नट गायक मागध इन्द्रजालिकों को साथ लेकर बागीचे में जाय ३३० गज अश्व यान का सदा प्रातः सायङ्काल अभ्यास करे व्यूह और सेना वालों की शिक्षा करे और आप सीखै ३३१ और व्याघ्र आदि बन चर और मयूर आदि पक्षियों से क्रीड़ा करे और दुष्ट जीवों को मारता हुआ शिकार करे ३३२ जिस्से शूरता बढ़तीहै इस्से सदा निशाना चलावे उस्से धृता औ शस्त्रअस्त्र के चलाने में शीघ्रता होतीहै ३३३ शिकार में इतने गुणहैं परन्तु उस्में हिंसा बड़ा दोषहै प्रजा और अधिकारियों काइङ्गित औरचेष्टित ३३४ दीवान और शत्रु सैनिक सभा वाले बान्धव अन्तःपुर में स्त्रियों का मत

३३५ गूढ़ रात्रिमें हरकारों से सुने और सावधान मनहो सिद्ध शस्त्रास्त्र सब वृत्तान्त लिखे ३३६ जो राजा असत्य वादी गूढ़ चारको शिक्षा नहीं करता वह राजा प्रजाके प्राण धनका हरने वाला म्लेच्छ कहाताहै ३३७ ब्रह्मचारी तपस्वी संन्यासी नीच सिद्ध स्वरूप को प्रत्यक्ष या छलसे गुप्त हरकारे के द्वारा शोधन करे ३३८ उनके शोधन बिना तत्वको न जान ने पावे अशोधक नृपसे असत्यवादी नहींडरते ३३९ अधिकारी प्रजासे गूढ़चार को रक्षा करे और राज्य में राजा एक मालिक रक्खे बहुत मालिक न करै ३४० और राजा राज्य को बिनामालिक कभी न रक्खे राज कुलमें बहुत पुरुषहों ३४१ उनमें से सब से ज्येष्ठ राजाहो और अन्यसब कार्य्य साधक हों जिस्से वृद्धिहो वहीश्रेष्ठहै अन्य बान्धवहैं ३४२ सबसे ज्येष्ठ बधिर कुष्ठीगुंगा अन्धनपुंसकहोतो वह राजगद्दी के योग्य नहीं उसका भाई अथवा पुत्र राज्य करे ३४३ राजा के छोटे भाई का पुत्र सबसे ज्येष्ठ हो तो वही राज्यका भागीहो राज्य भागियों को एक मति होना राजा को कल्याण कारक होताहै ३४४ भागियों की जुदाई राज्य और कुलके नाश के लियेहै इसी से राजा सदा अपने भोग के सदृश भागियों को करे ३४५ राज्य विभागसे राजाका कल्याण नहीं होता बटनेसे छोटे राज्यको अन्य राजा लेलेताहै ३४६ राज्यके चौथे भागके देनेसे राजा सम्पूर्ण राज्य रक्खै और चारों ओर या देश २ में मालिक रक्खै ३४७ गऊ गज घोड़े ऊंट खजाना काभागियों को अधिकारी करै और माता अथवा माता के सदृश जोहो उसको रसोईका कार्य्य सौंपै ३४८ सेनाका अधिकार बान्धव अथवा शालेकोदे गुरु और मित्रको अपने दोषका देखनेवाला करै ३४९ वस्त्र आभूषण पात्रके देखनेमें स्त्रियोंको रक्खै और आप सबको देखै और चिन्ह करै ३५० मकान के भीतर रातमें

और दिनमें विशोधित निर्ज्जन वनमें मंत्रियों के साथ भाविकृत्य की सलाह करै ३५१ और सभामें मित्र भाई पुत्र बान्धव और सेनापति और सभा के लोगों से सदा राज कृत्य विचारै ३५२ सभा के पश्चिमी आधे भाग में राजासन रक्खे और राजासन के दाहिने बायें सभा के लोग बैठें ३५३ और पुत्र पौत्र भाई भानजे राजा के पीछे बैठैं और कन्या पुत्र दक्ष भाग से बायें तरफ बैठै ३५४ चचा स्वकुल श्रेष्ठ सभ्य सेनाधिप राजा के आगे अन्य आसन पै पूर्व्व और बैठैं ३५५ और नानाके कुल के श्रेष्ठमंत्री बान्धव श्वसुर शाला बाईं तरफ सन्मुख बैठें ३५६ दामाद और बहनोई दाहिने बायें बगल में बैठैं और अपने सदृश मित्र समीप या आधे आसन पै बैठै ३५७ कन्या पुत्र और भानजे के पास दत्तक आदि पुत्र बैठें भानजे और कन्या पुत्र पुत्रआदि के स्थानमें बैठैं ३५८ जैसेपिता उसी तरह आचार्य्य समया श्रेष्ठ आसन पै बैठै और मंत्रीके पीछे दोनों बगलमें सब लेखक बैठें ३५९ सम्पूर्ण सेवक गण सबके पीछे खड़े हों और दोनों बगल में भीतर जाने और नतिके बताने वाले चोबदारहों ३६० और सबसे विशेष चिन्हयुत सुभूषण सुकवच मुकुटदिये अपने आसन पै बैठै ३६१ सिद्ध अस्त्र नग्न शस्त्रहो सावधानमन हो सबसे अधिक दाताहो और जोकोई यहशब्द कहै कि तुम शूर और धार्म्मिक हो ३६२ तोउसको न सुनै और श्रावक और बच्चक जो हैं राग या लोभ अथवा राजाके भयसेकहैं तो बधिर की भांति मंत्रीलोग न सुनैं ३६३ नतको अनुमत जानके राजा अपने कार्य्यकी सिद्धिके लिये अलग २ उनका मत साधन सहित लिखाके ३६४ अपने मतसे विचारै और बहुतोंकी सलाह के सदृश करै और गज अश्व रथ पशु भृत्य दास ३६५ राज्य सामग्री सैनिकको कार्य्यके अयोग्य जानके प्रतिदिन यत्नसे र-

क्षा करै और पुरानोंका त्याग करै ३६६ और दश हजार कोश की वार्त्ताको एक दिनमें ले और विद्या पढ़ानेवालोंको द्रव्य देके विद्या पढ़ावै ३६७ और जिसकी विद्या समाप्त हो गई हो उसको कार्य्यमें लगावे और विद्याकलमें उत्तम देखके वर्षदिन में उनकी पूजन करै ३६८ और विद्याकलकी जिस्से वृद्धिहो राजा वैसा करै पीछे आगे प्राप्त क्रूरवेष नति नीति विशारद ३६६ सिद्ध अस्त्र नग्न शस्त्र ऐसे भटोंको निकट नियुक्त करै और हाथी पर चढ़के प्रजाको रंजन करता हुआ पुरमें फिरै ३७० राजयानारूढ़ श्वानक्या राजाके तुल्य होता है नहीं और क्या राजा श्वानकेतुल्यहोता है नहीं यह कवियों ने नाहक कहा है ३७१ इस्से राजाअपने बान्धव मित्र जो समतामें अपनेतुल्यहों ऐसीप्रकृतियोंके साथ राजा बाहर जाय नीचके साथकभी नजाय ३७२ मिथ्या सत्य सदाचारसे नीच और साथ होताहैनीच साधुओं से अधिक कोमलता दिखाते हैं ३७३ ग्राम पुर देशको वर्ष दिनमें राजा आप देखके किसीको अधिकारियों के द्वारा बसावै किसी को बिगाड़ दे ३७४ उन के प्रजा जीवों के साथ व्यवहार की चिन्तनाकरै राजा भृत्यका पक्ष न करै प्रजाका पक्षकरै ३७५ और सौ प्रजा जिसकी गवाहीदें तो राजा उस अधिकारी का त्याग करै और एक बार अन्यायगामी अन्यायी देखले ३७६ स्पष्टकी एकान्तमें शिक्षा करै और अपराधी का त्याग करै और अन्याय वर्त्ताका राजा सर्ब्बस्व हरै ३७७ जित देशमें धर्म्माधिकारी रक्खै और निर्ज्जितकी मजदूरी उसके चरित्रके माफिकदे ३७८ राजा प्रीति मती अनुरक्त सुरूपा सुवस्त्रा प्रिय वादिनी सुभूषणा सुसंशुद्धा स्त्रीका सेवन करै ३७६ जो राजा दो प्रहर सोताहै वह बड़ा सुख पाताहै और अपने स्थानको न छोड़े और नीतिसे शत्रु गण को जीतताहै ३८० दन्त केश नख नृप स्थान भ्रष्ट नहीं शोभित

होते और महा विपत्तिमें राजा सदा गिरि दुर्ग्गमें बास करै ३८१ उसीके आश्रय से बिवाह दान यज्ञार्त्थ जोहो और अष्टांश बिना चोर वृत्तिसे अपने राज्यको राजाले ३८२ दस्यु राजा असज्जनों का अखिल धनले और इकट्ठा न बसै और किसीका विश्वास न करै ३८३ सदैव सावधान होरहै प्राण नाशकी चिन्ता न करै क्रूर कर्म्मा सदा उद्युक्त निर्दय चौर कर्म्म करै ३८४ पर स्त्री और कुल कन्या दूषणसे विमुख पुत्रवत् भृत्योंका पालन करै कि समय पै शत्रु न होजायं ३८५ प्रयत्नका कोई दोष नहीं वैसाही भाग्य है और उस कर्म्मको विफल देखके तपस्या करके स्वर्ग्गको जाय ३८६ इस अध्यायमें संक्षेपसे राज कृत्य कहाहै अधिक मिश्रमें कहैंगे राज कार्य्य निरूपक प्रथम अध्याय कहा ३८७ इति प्रथमाध्यायः समाप्तः ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

शुक्रनीति भाषा ॥

दूसरा अध्याय ॥

यद्यपि छोटाभी कामहोतो एक इकल्ले पुरुष से दुःखसे करने के योग्यहै और बड़े राज्यकी क्याकहै १ सम्पूर्ण विद्यामें कुशल सुमन्त्रका जाननेवाला मंत्रियों बिना अर्त्थकी चिन्तना कभी नहींकरता २ सभ्यअधिकारी प्रकृति सभासदके सदामतमें स्थित राजा प्राज्ञ होता है स्वमत में स्थित कभी बुद्धिमान् नहीं होता ३ स्वतंत्र राजा अनर्त्थकारी होताहै और प्रधान फूटके दूसरे देशके राजासे मिलताहै ४ बुद्धिमानोंके वचन अनुभव अनुमान से यह जानाजाता है कि सम्पूर्ण पुरुषों में भिन्न २बुद्धि विभव होताहै ५ प्रत्यक्ष,सादृश्य,साहस, छलबल से लौकिक व्यवहार में विचित्रता है और गुरुता लघुता से उन्नत होता है ६ यह सब जाननेको एक पुरुष समर्त्थ नहीं होता इसीसे राजा राज वृद्धि के लिये सहायता करने को अन्य को रक्खै ७ कुल गुण शीलमें वृद्ध शूर भक्त प्रिय बोलनेवाले हितके उपदेशक क्लेश सह धर्म्मरत ८ कुमार्ग्ग गामी राजा का उद्धार करनेवाला शुचि निरभिमान काम क्रोध लोभहीन निरालस ऐसे मनुष्य को राजा सहायक करै ९ कुसहाय से स्वधर्म्म और राज्य से राजा च्युत होताहै कुसहाय और कुकर्म्म से दैत्य नष्टहुये १० शूर और बली दुर्य्योधन आदि राजा नष्टहुये इस्से राजा निरभिमान और सुसहायहो ११ युवराज और अमात्यगण राजाकी भुजा हैं और

वेही दोनों क्रमसे दक्षिण वाम नेत्रहैं १२ और दोनों बिनाराजा बाहु कर्ण अक्षि हीन होता है महा नाशके भयसे युवराज और अमात्य को अवश्यकरै १३ मुद्राबिना अखिल राज कृत्य करने को योग्यहै और धर्म्म पत्नीसे उत्पन्न और सपुत्रको राजायुवराज करै १४ अपने से छोटा पितृव्य अनुज बड़े भाई का पुत्र पुत्री कृत पुत्रदत्त इनको राजा युवराज करै १५ इन सबके अभाव में कन्या पुत्र या बहिन के पुत्र को युवराज करै और अपने हित के लिये इनका अपमान न करै १६ स्वधर्म्म रत शूर भक्त नीतिमान् बालक राजपुत्रोंकी सदा रक्षा करै १७ अर्थके लोभी वे उसको रक्षमाण छिद्र प्राप्त होते हैं १८ राजपुत्र सिंह के पुत्र की तरह रक्षा करने वाले को मारता है मदान्ध राजपुत्र निरंकुश हाथीकी भांति होताहै १६ राजोंके पुत्र अपने पिताको मारतेहैं भाईकी क्यागणनाहै मूर्खबालक स्वामीहोना चाहताहै और युवाकी क्या कहैं २० राजा अच्छे भृत्योंके द्वारा छल से राजपुत्र के चित्तकी बात जानके स्वीय मनुष्योंकी अत्यन्त निकटता से राजपुत्रोंकी रक्षाकरै २१ नीति शास्त्र कुशल धनुर्व्विद्या विशारद क्लेश सह बचन कठोरतानुभव २२ शौर्य्य युद्धरत सर्व्व कला विद्याधित् सुविनीति राजा अपने पुत्रोंको मन्त्री आदि से करावै २३ सुन्दर बस्त्र आदिसे भूषित कर सुन्दर खेलआदि से खेला उत्तम आसन से प्रसन्न कर अच्छे भोजन से पालन करै २४ युवराज पदके योग्य करके युवराज पद में अभिषेक करै जिस कुलमें अविनीत कुमार होता है वह कुलशीघ्र नष्ट होताहै २५ कुमार्ग्ग गामी राजपुत्र त्यागके योग्य नहीं है क्योंकि वह दुःख पाके शत्रुओं से मिल के पिता को मार डालता है २६ व्यसन में लगेहुये राजपुत्र को व्यसनाश्रयसे क्लेश दे जिसतरह मदान्ध गज को सुखबन्धन से बशमें करते हैं २७ कुचाल भाग

वालोंको यत्नपूर्व्वक व्याघ्र शत्रु कुलसे यत्नपूर्व्वक राज्यकी वृद्धि के लियेमारै २८ अगर ऐसा न करै तो राजा और प्रजाका नाश होताहै और अपने उत्तम गुणोंसे नित्य राजाको प्रसन्न करै २९ अन्यथा वह अपने भाग और जीवनसे भ्रष्ट होतेहैं अपनी सापिण्ड्यसे विहीन होके अन्यका दियाहुआ नहींपाता ३० मन से भी दत्तक आदि पुत्रको न मानै धनी जानिकै दत्तक होनेकी इच्छा करतेहैं ३१ स्वकुल में उत्पन्न कन्या का पुत्र दत्तक आदि पुत्रों से श्रेष्ठहै क्योंकि कन्या अपने अङ्ग से उत्पन्नहै इसकारण पुत्रके तुल्यहै ३२ पिण्ड दानमें पुत्र और दौहित्र विषे कुछ विशेष नहीं है और राजा पृथ्वी और प्रजाकी रक्षाके लिये दत्तक करै ३३ राजा प्रजा पालनार्थ और धनीको छोड़ और कोईपरोत्पन्न में पुत्रत्व न करके सर्ब्बस्व देदे ३४ संसारमें यह आश्चर्य्य नहीं वह मदान्ध होके सब लेले इस्से सब न दे और आदर करै क्योंकि ऐसा न होकि युवराज होके विकार को न प्राप्तहो ३५ अपनी सम्पत्तिको माता पिता गुरु भाई बहिन राजबल्लभको न दे ३६ देशमें महाजनोंका न अनादर करै न पीड़ादे बड़ीवृद्धिको पाके भी पिताकी आज्ञासे बर्त्तै ३७ पुत्रको पिताकी आज्ञा परम भूषणहै पिताकी आज्ञासे परशुराम जीने माताको मारा और श्री रामचन्द्र जी पिताकी आज्ञासे बनको गये ३८ पिताहीकी आज्ञासे परशुराम जी माता को और श्री रामचन्द्र जीने राज्यको पाया जोशाप और अनुग्रहमें समर्त्थहो उस्की आज्ञा बड़ीहै ३९ सहोदर भाइयोंमें अपनी बड़ाई न प्रकटकरै भागके योग्य भाइयोंके अनादरसे दुर्य्योधन नाशको प्राप्तहुआ ४० उत्तम पदको पाकेभी पिताकी आज्ञाके टालनेसे उसपदसे दासकी भांति राजपुत्र नष्ट होतेहैं ४१ जैसे राजा ययाति और विश्वामित्र ऋषि के पुत्र काय बचन से सदा पिता की सेवामें रत रहे ४२ जिस

कर्म्मसे पिता प्रसन्नहो वहीकर्म्म पुत्रकरै ऐसाकाम न करै जिससे पिता थोड़ाभी अप्रसन्नहो ४३ जिस्से पिता प्रीतिकरै उसीकीप्रीत पुत्रभी करै और पिता जिस्से द्वेषकरै उस्से पुत्रभी द्वेषकरै ४४ पिता के असम्मत और विरुद्ध कभी न करै चार और सूचक के दोषसे जोपिता अन्यथाहो ४५ तोमंत्रियोंकी सलाहसे एकान्तमें पिताको समझावै अन्यथा सूचकों को अधिक दण्ड दे ४६ अहल्कारों के कपट और मनको सदा राजा देखतारहै और प्रातःकाल पिता माता गुरुको नमस्कार करके ४७ प्रति दिन राजा से पुत्र अपने कामको कहै इस प्रकार गृहके अविरोध से राजपुत्र गृहमें बासकरै ४८ बिद्या कर्म्म शीलसे आनन्द से प्रजा को सुख देता हुआ त्यागी सत्व सम्पन्न हो सबको अपने बशमें करै ४९ शुक्ल पक्षके चन्द्रमाकी भांति शनैः २ राजपुत्र बढ़ै इस प्रकार बर्त्तता हुआ राजपुत्र अकण्टक राज्य करता है ५० सहायवान् अमात्यों सहित बहुत दिनतक पृथ्वी का राज्य करताहै यह संक्षेप से युवराजका हित कार्य्य कहाहै ५१ मृदु गुरु प्रमाण बर्ण शब्दादि के साथ अबसंक्षेपसे अमात्यों काकाम और लक्षण कहते हैं ५२ परीक्षकों के द्वारा जिस प्रकार सुबर्ण की परीक्षा करके कर्म्म सहबास गुण शील कुल आदि से परीक्षा करै ५३ भृत्यकी परीक्षा करके विश्वासकरै केवल कुल और जाति की परीक्षा न करै ५४ जिस तरह कर्म्म शील गुण पूज्यहै उस तरह जाति कुलनहीं पूज्यहै जाति और कुलसे श्रेष्ठता नहींहोती ५५ बिवाह और भोजनमें कुलजाति का विवेक होताहै सत्यवादी गुणसम्पन्न कुटुम्बी धनी भृत्यहो ५६ अच्छे कुल का सुशील सुकर्म्मा निरालसहो जिसतरह अपना कार्य्यकरै उस्से अधिक स्वामीका कार्य्यकरै ५७ चौगुना यत्न काय वचन मनसे मजदूरी से तुष्ट कोमल वाक् कार्य्य दक्ष शुचि दृढ़हो ५८ परोपकार में दक्ष

अपकार से पराङ्मुख स्वामीका अपराधी पुत्र और पिता भी हो उसको भी कहदे ५९ अन्यायगामी राजाहो तो अतद्रूपहो उस को समझावे उसकी किसी बातको न टारै और उसकी न्यूनता का प्रकाश न करै ६० सत्कार्य्य करने में विलम्ब न करै और बुरे कार्य्यको देरमें करै उसके पुत्र मित्र छिद्र न देखें ६१ उसी की तरहकी बुद्धि उस के स्त्री पुत्रादि बन्धुमें भी होवे न प्रशंसा करै न स्पर्द्धा करै न अभ्यसूया करै न निन्दा करै ६२ और वह अन्य के अधिकार की इच्छा न करै निस्पृह हो हर समय आनन्दित रहै और उसके दिये हुये वस्त्र भूषण को उसी राजा के सम्मुख धारण करै ६३ अपने मासिक के सदृश खर्च करै इन्द्रियजित दयालु शूर हो और जो राजा के अकार्य्य को एकान्त मेंकहै वह सेवकों में श्रेष्ठहै ६४ इनसे विपरीत गुणवाले भृत्य निन्दितहैं और जो भृत्य थोड़ी तनख्वाह पाताहो और जिसको बड़ा दण्ड दिया हो ६५ शठ कादर लुब्ध सामने प्रिय बोलने वाला मदान्ध विषयी आर्त्त कर्ज्ज शील ६६ नास्तिक दम्भी सत्यबचन भी है पर निन्दक है अपमानित और जो कड़े बचन से मर्म्म स्थलमें ताड़ित हो ६७ चण्ड अविचारी धर्म्महीन ये सुसेवक नहींहैं यहसंक्षेप से अच्छे औरबुरे सेवकोंके लक्षण कहेहैं ६८ अब संक्षेपसे पुरोहित आदिका लक्षण कहतेहैं पुरोहित, प्रतिनिधि और प्रधान, सचिव है ६९ मंत्री, धर्म्मव्यवस्थापक, पण्डित, सुमंत्र, अमात्य, दूत ये दश राजाकी प्रजाहैं ७० पूर्ब्ब दशांश अधिक दृतान्त आठ प्रकृतियों से युक्त सदा राजा कहाता है ७१ सुमंत्र, पण्डित, मंत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य, प्राड्विवाक, प्रतिनिधि ७२ ये राजाके आठ मासिक के सदृश प्रकृति हैं चित्त की बात का जानने वाला दूतराजा का अनुग कहाताहै ७३ सम्पूर्ण राज्यमें सबसे श्रेष्ठ पुरोहितहै उसके पीछे प्रतिनिधि उसके

पीछे प्रधान श्रेष्ठ है ७४ प्रधान से पीछे सचिव सचिव के पीछे मंत्री मंत्री के पीछे प्राड्विवाक उस के पीछे पण्डित ७५ उसके पीछे सुमंत्र उसके पीछे अमात्य तदनन्तर दूत ये यथा गुण पूर्ब्ब श्रेष्ठ हैं ७६ मंत्रानुष्ठान सम्पन्न त्रयी वेत्ता कर्म्म तत्पर जितेन्द्रिय जित क्रोध लोभ मोह विवर्ज्जित ७७ षडङ्ग वित् धनुर्व्विद्या औ वेद बिद्या का जानने वाला जिस के कापके भय से राजा भी धर्म्म नीति रतहो ७८ नीति शस्त्र अस्त्र व्यूह आदि में चतुर पुरोहित होता है वही पुरोहित शापानुग्रह में समर्त्थ आचार्य्य कहाता है ७९ बिना प्रकृति संमंत्र से मेरे राज्य का नाश होगा जहां ऐसा निरोध राजा का हो वह सुमंत्री है ८० जिनसे राजा न डरै उनसे राज्यकी वृद्धि क्या होगी जैसे बस्त्र भूषण से स्त्री भूषणीय है उसी तरह वहभी ८१ राज्य प्रजा बल कोश सुनृपत्व को जिसके मन्त्र से न बढ़ै उस के मन्त्री होनेसे क्या प्रयोजन है ८२ कार्य्या कार्य्य का जाननेवाला प्रति निधि कहाता है सर्ब्ब दर्शी प्रधान और सेना का जानने वाला सचिव कहाता है ८३ नीति में चतुर मंत्री और धर्म्म का जानने वाला पण्डित कहाता है लोकशास्त्र नीति का जानने वाला प्राड्विवाक कहाताहै ८४ देश कालका विज्ञाता अमात्य कहाता है और लाभ व्यय का जानने वाला सुमन्त्र कहाता है ८५ चित्त की बात आकार चेष्टा का जानने वाला स्मृतिमान् देश कालवित् षट्गुण का जानने वाला धृष्ठ निर्ब्भय दूत कहाता है ८६ अहित कार्य्य जोशीघ्र करनेके योग्यहै और हितभी उसके न करनेका अख्तियार हो वह राजा का प्रति निधि है ८७ सिखलावै करावै करै सत्यहो या असत्य जो कार्य्य मात्रहो ८८ सबके राज कार्य्यमें प्रधान विचार करै गज अश्व रथ पैदर ८९ मज़बूत ऊंट बैल बाजेकी आवाज का सङ्केत व्यूह के अभ्यास के करने वालों का

९० शस्त्र अस्त्रको धारण करके राज चिन्ह को धारण कर पूर्ब्ब पश्चिमके जाने वाले मध्यम उत्तम कर्म्या परिचार गणोंकी परीक्षा ९१ अस्त्र पाती नवीन या पुराना घोड़ा कौन कार्य्यकेयोग्य है कौन नहीं ९२ और कितने शस्त्र गोला बारूद कितनेकामके योग्यहैं और कितनी सामग्री संग्रामके योग्यहै यहविचार करै ९३ इन कामोंको अच्छीतरह सचिव राजासेकहै साम दामभेद दण्ड किसको कबकरना चाहिये ९४ इनके करनेसे बहुत या मध्यमथोड़ा कैसा फल होताहै यह सब बिचार के मन्त्री राजासे निवेदन करै ९५ गवाहोंके द्वारा लिखे भोगसे अपने उत्पन्न किये हुये सम्प्राप्त व्यवहार छली मनुष्योंको बिचारके ९६ या दिब्य संसाधन अथवा किस में कौन साधन है उसको युक्ति प्रत्यक्षा नुमान उपमान लोक शास्त्रसे ९७ सभामें स्थितहो बहु सम्मतसे सिद्ध करके सभ्य और प्राड्विवाक सहित राजाको समझावें ९८ कौन धर्म्म बर्त्तमान है और प्राचीन धर्म्म कौन धर्म लोक संश्रित हैं और शास्त्र में कौन धर्म्म कहेहैं और इस समयके विरुद्ध कौन धर्म्म हैं ९९ और लोक शास्त्र के विरुद्ध कौन धर्म्म हैं इन सब धर्म्मोंको पण्डित बिचारके परलोक और इस लोक के सुख देने वाले धर्म्मोंको राजाको समझावै १०० इतना द्रव्य और इतना तृण इसवर्ष में जमाहै और इतना स्थावर जङ्गम खर्च्च हुआ है १०१ इतना बाकीहै यह सुमन्त्र राजासे कहै ग्रामपुर बन कितने हैं १०२ इसवर्षमें कितनी पृथ्वी जोती गई और उस्से कितनाभाग मिलाहै उसभागमें बाकीक्या और बिनाजुती जमीन कितनीहै १०३ इसवर्षमें करका द्रव्य और दण्ड आदिका जुर्मानह और बिना जुतीहुई जमीन से उत्पन्न तिनी पसारी वग़ैरह और बन से उत्पन्न यह सब कितनेहैं १०४ कितना माल खानिसे मिला और निधि से क्या मिला और कितना माल बिना

स्वामिक है कितना माल नष्ट हुआ है और चोर कितना ले गये १०५ और कितना द्रव्य रक्खा है यह सब अमात्य राजा से निवेदन करै ये दश प्रकार के प्रधानों के लक्षण संक्षेपसे कहे हैं १०६ उसके दिखाने वालोंसे उनके लिखेसे जानै और परस्पर कार्य्योंमें उनकी राजा बदली करै १०७ कभी अधिकारी को अधिक बल न करै इनके समबल रक्खै १०८ एक अधिकारमें सदा तीन चतुर मनुष्यों को नियुक्त करै और उन तीनोंमें एक को मुख्य करै १०९ दो देखने वालेजो उसके साथ रक्खे थे वर्ष दिनमें उसकी बदली करै अथवा तीन या पांच या सात अथवा दश बर्ष में बदली करै ११० इनके कार्य्य की कुशलता देखके बदली करै राजा जिस किसीको सदा अधिकार न दे १११ अधिकारके योग्य देखके अधिकार दे बहुत दिन तक अधिकार के मद को पीके कौन मोह को नहीं प्राप्त होता ११२ इस से कार्य्य के योग्य देख के अन्य कार्य्य में नियुक्त करै और उसके कार्य्यमें कामके योग्य देखके उसके अनुगको नियुक्त करै ११३ उसके अभावमें दूसरे योग्यको उस अधिकारपै रक्खै औरउस के सदृश उसका पुत्र होतो उस अधिकार पै उसीको नियत करै ११४ जिस २ प्रकारसे जो बड़े २ अधिकारमें हों क्रमसे अन्तमें उसको आठ प्रधानोंमें नियत करै ११५ अधिकारी केअधिकार बलको देखके बहुतसे देखने वालेनियतकरै या एक अधिकारी को उसका दर्शक करै ११६ और अन्यकर्म्म सचिव होंउनको गज अश्व रथ पैदर पशु ऊंट मृग पक्षी ११७ सुवर्ण रत्न चांदी बस्त्र वितान धान्यागार पाक गृह के पृथक् २ अधिप करै ११८ बाग इमारत संभार देव गृहपति दानपति पृथक् २ बनावे ११९ फौजदार ग्रामस्वामी भागहार चौथा लेखक करै १२० पांचवां महसूल लेनेवाला छठा द्वारपाल इन छः मनुष्यों को ग्राम ग्राम

और पुर पुरमें नियत करै १२१ तपस्वी दान शील श्रुति स्मृति विशारद पौराणिक शास्त्रविद ज्योतिषी मान्त्रिक १२२ आयुर्व्वेदविद अर्थात् वैद्य कर्म्मकाण्डी तान्त्रिक और अन्य जो श्रेष्ठ गुणी बुद्धिमान् जितेन्द्रियहैं १२३ इन सबको सेवक लोग दान मानसे पूजन करैं अगर ऐसा न करैं तो राज्य हानिको प्राप्त होता औरराजा अपकीर्त्तिको पाताहै१२४बहुतोंकरके साध्य कार्य्योंका उन कामोंके योग्य अधिपों को जानके उस कार्य्यमें नियुक्त करै १२५ अक्षर अमंत्र नहीं होता और बिना औषध मूल नहीं होता और अयोग्य पुरुष नहीं होता योजक दुर्ल्लभहै १२६ गजोंका प्रभद्रादि जाति भेद वैद्यक शिक्षा व्याधि पोषण तालु जिह्वा नखीके गुण १२७ आरोहण गति गज रक्षा ऐसेही बड़े हाथी हृदय हारको भी जानै १२८ घोड़ोंके हृदयको जानै जाति वर्ण भंवरी से गुण गति शिक्षा दवाई सत्वसार रोग को जानै १२९ हिताहित पोषण मान यान दन्त वयको जानै शूर व्यूहवित् प्राज्ञ ऐसे मनुष्यको अश्वाधिपति करै १३० इनगुणोंसे युक्त सारथी जो धुरी पुढ़ा जानै और रथकी पुष्टता गतिभ्रमण फिरना जानै १३१ शस्त्र अस्त्रके चलनेमें लक्ष्य सन्धान नाशकहो और रथकी गतिसे घोड़ोंके संयोग की रक्षा को जानै १३२ उसी तरह शूर व्यूह विशारद घोड़ेकी गति का जाननेवाला प्राज्ञ शस्त्रास्त्र युद्धके जाननेवालेको सवारों में रक्खै १३३ चक्रिता रेचितावल्गीतक धौरित आप्लुत तुरमद कुटिल सर्प्पण परिवर्त्तन १३४ अस्कन्दित इन ग्यारह गतियोंको जो जाने यथा बल यथा ऋतु घोड़ेकी शिक्षा करै वह शिक्षक है १३५ घोड़ों की सेवामें कुशल पल्याणादिनियोगवित् दृढ़ाङ्ग शूर ऐसे मनुष्य राजा वाजि सेवक करै १३६ नीति शस्त्र अस्त्र क़वायद नति विद्या विशारद बालक न होके जवान हो शूर इन्द्रिय जित दृढ़ाङ्ग १३७ स्वधर्म्म रत नित्य स्वामि भ-

क्त रिपुका द्वेषी शूद्र या क्षत्रिय वैश्य म्लेच्छ अथवा वर्ण सङ्कर
१३८ जयका चाहने वाला राजा इन को सेनापति और सैनिक करै और पांच या छः पैदर के बीच में एक अफ़्सर बनावै
१३९ वह पत्तिपाल कहाता और तीस मनुष्यों का पालक गौल्मिक कहाता है शत का पालक शतानीक या अनुशतिक पावर कहाता है १४० सेनानी और सर्रिश्तहदार प्रति शत मनुष्यों में करै और हजार और दश हजार में अधिकारी करै १४१ और सेना वालों में सायङ्काल और प्रातःकाल जो कवायद और खुद भी युद्ध भूमि के युद्ध को जानै वह शतानीक है १४२ उसी तरह शतानीक का साधक अनुशतिक कहाता है जो युद्ध के संभार कार्य्य योग्य सैनिक को जानै १४३ वही सेनानी पहरादेनेवालोंका काम बतावै और पहरुओंके कामको देखै वह पत्तिप है १४४ जो पहरुओं की गोल को जानै वह गुल्मप है कितने सैनिक हैं और किन को मासिक पाना चाहिये १४५ कितनेपुराने नौकर हैं और कहां गये हैं यह जो जानै वह लेखक है और बीस हाथी अथवा बीस घोड़ों का स्वामी नायक है १४६ पहिले जिन के नाम कहे गये हैं अपने २ चिन्ह से चिन्हित इनको नियुक्त करै अज मेढ़ बैल महिष मृगों के जो अधिप १४७ इन की वृद्धि और पुष्टता में चतुर उन के प्यार से पीड़ित इसी तरह गज और ऊंट के सेवकों को करै १४८ और युद्ध प्रवृत्ति में कुशल तीतर आदि का पोषक शुक आदिका पाठक बाजआदिका पात बोधक १४९ उन जीवों के मन के जानने में चतुरमान आकृति प्रभाव जाति समता से मौल्य का जाननेवाला १५० और रत्न सोना चांदी रुपयाका मालिक इन्द्रियजित् धनी व्यवहार में चतुर १५१ धन को प्राण से अधिक जानै और अति कृपण हो तो उसको खजाने का मालिक करै और देश और

जाति भेद से मोटे महीन के बलाबल से १५२ रेशमी बस्त्र के मान और मौल्य और शास्त्र के जाननेवाले को बस्त्र का स्वामी करै और डेरा पोशाक वेषमण्डप की क्रिया को जानै १५३ प्रमाण से सीपका रंगवाना जानताहो और शय्या और डेरा आदि के बनानेमें चतुरहो १५४ वही बस्त्र आदि और वितान आदि का स्वामी करै और जाति तोलना मौल्यसार भोग परिग्रह का १५५ और धान्य का साफ करना जो जानता हो उस को धान्य का स्वामी करै और धोये या बेधोये पाक और रस भेद का जानने वाला १५७ भूमि जल आदि से यथा काल वृक्षोंको दुरुस्तकरै और वृक्षोंकादबाना जानताहो वहआरामाधिपहै१५८ अटारी परिखा किला खाई प्रतिमा यन्त्र पुल बांधना बावली कुआ तालाब १५९ छोटा तालाब कुण्ड जलसे ऊपर जाने की क्रिया शिल्प विद्या का जानने वाला जिससे सुन्दरता होतीहै १६० उस को जानता हो वही गृह आदि का स्वामी करणीय है राज कार्य्योपयोगी पदार्थोंके सिद्धान्तको जानता हो १६१ समय पै उन पदार्थों को इकट्ठा करै वह सम्भाराधिप है स्वधर्म्मा चरणदक्ष देवताराधन तत्पर १६२ निस्पृह ऐसे मनुष्यों को देवतुष्टि पतिकरै याचकको विमुखऔर संग्रहको न करै१६३ दानी निर्लोभ गुणज्ञ निरालस दयालु मृदु वाक दान पात्रका जाननेवाला नम्र १६४ नित्य इन गुणों से युक्त दानाध्यक्ष कहाता है व्यवहार विद प्राज्ञ वृत्त शील गुणान्वित १६५ शत्रु और मित्र में सम धर्म्मज्ञ सत्यवादी निरालस जितक्रोध काम लोभ प्रियम्बद१६६ ऐसे वृद्ध मनुष्योंको सबजातिमें सभा सद करै और सब जीवोंमें जो तुल्यहो निस्पृह अतिथिपूजक१६७ दानी ऐसे मनुष्य को यज्ञका स्वामीबनावै और परोपकार निरत पराये मर्म्मका अप्रकाशक १६८ निर्म्मत्सर गुणग्राही उर

विद्या का जानने वाला ऐसे मनुष्य को परीक्षक करै जिससे प्र-
जा नष्ट न हो ऐसा दण्डदे १६९ न बहुत कड़ा न बहुत कोमल
हो ऐसे मनुष्य को फ़ौजदारी का स्वामी करै और लूटने वाले
और चोरों और अधिकारियों से १७० प्रजा के रक्षण में माता
पिता की भांति दक्ष ग्रामपति होता है और यत्न पूर्व्वक वृक्षों का
पोषण कर फल पुष्प कोले १७१ जिसतरह माला कार करताहै
उसी तरह भाग हारकरै और गिनती करनेमें चतुर देश भाषा के
भेदका जानने वालाहो ७२ बिना सन्देह खुलासाजो लिखै वह
लेखक अर्थात् लिखने वाला और शस्त्र अस्त्र में कुशल दृढ़ाङ्ग
निरालस १७३ यथा योग्यको बुलावे और नम्र द्वार पाल होता
है और जिसतरह बेचने वालेके मूलका नाश नहीं होता १७४
उसी तरह महसूल ले वह शौल्किक कहाता है जप उप वास
नियम कर्म्म ध्यान में रत १७५ इन्द्रियजित् क्षमावान निस्पृह
तपस्वी कहाताहै जो याचकोंको अधिकदे यहां तक कि स्त्री पुत्र
को भी देदे १७६ और जो कुछ पावै वह न ले वह दान शीलहै
और अभ्यास करने वाले के पढ़ने पढ़ानेमें समर्त्थ १७७ श्रुति
स्मृति पुराणमें दक्षवह श्रुतज्ञ कहातेहैं और काव्यशास्त्रमें निपुण
संङ्गीतज्ञ सुस्वर १७८ और सर्ग्ग आदि पांच का जाननेवाला
वह पौराणिक कहाताहै मीमांसा तर्क्क वेदान्त शब्द शासनतत्पर
१७९ तर्क्कवान समझाने में समर्त्थ शास्त्रवित् कहाता है और
संहिता होरा गणित को जानै १८० त्रिकालज्ञ हो वह ज्योति-
र्व्विदहै और बीज के अनुरूप से जो मन्त्र के गुण दोष को जानै
१८१ मन्त्रानुष्ठान सम्पन्न सिद्ध दैवत वह मान्त्रिक है व्याधि
का निदान और औषधि और व्याधि का तत्त्व निश्चय १८२
औरसाध्य असाध्य जानके औषधि करै वह वैद्य है श्रुति स्मृति
के मन्त्रानुष्ठान से देवता पूजनकरने १८३ में हितस्नेह मानके

यत्न करै वह तान्त्रिक है और नपुंसक सत्यवादी सुन्दर भूषण युक्त प्रिय बोलनेवाला १८४ सुकुल सुरूपको राजा राज महल में रक्खै और दूसरेको मालिक न जानै स्वामि भक्त धर्म्म निष्ठ दृढ़ाङ्ग १८५ बालक न हो मध्य अवस्था का हो सेवा में चतुर सम्पूर्ण छोटे बड़े काम करने में उद्यत १८६ आज्ञाकारी ऐसे मनुष्यको राजा परिचारक करै और राजा के समीप रहने वाले का नति स्थानबोधक १८७ दण्ड और वेत्रको लिये ऐसे मनुष्य को सुशिक्षक करै और वीणासे निकले हुये सातस्वर और स्थान विभाग से १८८ उत्पन्न करै संयोग विभाग अनुराग को जानै और सुस्वर और ताल सहित गावै १८९ वह नृत्य सहित गायकों का मालिक होता है और उसी तरह बाजार की स्त्री निर्ल्लज्जा भाव संय्युत १९० शृङ्गार रस तंत्रज्ञा सुन्दराङ्गी मनोरमा नवीन ऊंचे कठोर कुचवाली मुस्कराती १९१ और जितने उनके साधक हों वहभी उसी तरह चित्त के मोहने वाले हों ये सुसेवक होंतो राजा अपने हित के लिये रक्खै १९२ भाट उत्तम कवि और वेत्र दण्ड धर चोबदार राज कलांवत जो सदा उपकारक हों १९३ और दुर्ग्गुणके कहने और अच्छा नाचनेऔर किला बनाने बाग और कृत्रिम बन के बनाने वाले भांड़ १९४ गोला के बनाने वाले गोलन्दाज बन्दूक के बनाने वाले छोटा यंत्र बारूत बाण गोला तलवारके करने वाले १९५ अनेकयंत्र शस्त्र अस्त्र धन्वा तरकश के बनाने वाले सोना रत्न आभूषण घट रथ बनानेवाले १९६ पत्थर का बनाने वाला लोहकार मुलम्मे वाला कुम्हार तांबे का बनाने वाला बढ़ई सड़क बनाने वाला १९७ नाई धोबी बसफोड़ मेहतर हरकारे दर्जी राज चिन्हाग्र धारी १९८ भेरी नगारा डङ्का शङ्ख बेन के शब्द से कवायद बनाने वाला १९९ मल्लाह खनने वाला व्याध किरात भार

उठाने वाला शिकली जल और धान्य जलका ले चलने वाला २०० बाजार वाले गणिका बाजे वाले और नट कपड़ा बुन्ने वाले पक्षी से जीविका करने वाले चित्रकार चर्म्मकार २०१ गृह के साफ करने वाले पात्र धान्य वस्त्र शोधक शय्या बितान बिछौना के करने वाले शासक २०२ सुगन्धित द्रव्य धूप केकरने वाले और तम्बोली ये छोटे बड़े कामके करने वाले कार्य्यके माफिक योज्य हैं २०३ सत्य और परोपकार अतीव पुण्यतम हैं और राजा निरन्तर सेवक को आज्ञा युक्त करै २०४ जैसे सब पापों सेहिंसा बड़ी है उसी तरह झूंठ बोलनाभी है इन दोनों से बड़ा पाप खराब भृत्योंका रखना है २०५ जब जो करने को उचित हो वह कहनेको प्रबोध न करै और थोड़ा कहै और बहुत करै वह सद्भृत्य सुपूजित है २०६ पहररात्रिरहे उठके गृह के कामों का बिचार करके उत्सर्ग्ग कर देवताका स्मरण कर स्नानकरै २०७ डेढ़ मुहूर्त्त में प्रातः कृत्य को समाप्त करके सभा में जाके कार्य्य अकार्य्य का बिचारकरै २०८ बिना आज्ञाके द्वारपाल भीतर न जानेदे आज्ञा या कार्य्यको जानके भीतर जानेदे २०९ सभाके मध्यमें आयेहुयों को देखके दण्डधर राजा से कहै प्रणामके पीछे यथा स्थान बैठावै २१० तत्पश्चात् राज गृह में जाके राजाकी आज्ञा पाके निकट जाके यथा न्याय राजाको दूसरा विष्णुरूप जानके निकटजाय २११ राज सभामें प्रवेश कर चित्तके जानने वाले के साथ स्वामी के अर्द्धासन में दृष्टि करके अन्यत्र न ताकै २१२ जलती हुई अग्नि और क्रोध किये सर्प्पकी भांति शिक्षित मनुष्य प्राण धनेश्वर राजाको मानै २१३ हम कुछ नहींहैं यह बिचारता हुआ यत्नपूर्ब्बक राजाके निकट रहै और उसके पक्षको समर्थै और जो राजा कहै उसको अच्छा कहै २१४ और राजा की आज्ञा से परिनिश्चित अर्थ को कहै और सुख प्रबन्ध

वार्त्ता और वादियों के विवाद में जो उचित हो वह कहै २१५ जानता हुआ भी शीघ्र स्वामी को उत्तर न दे सदा साधारण बेष रहके राजा के बुलाने पै हाथ जोड़ के कहै २१६ नमस्कार कर राजा के बचन को सुन के बस्त्र से मुंह ढक के राजा की आज्ञामान अपना कार्य्य कहै २१७ नमस्कार कर आसन पै उसकी आज्ञासे सम्मुख बैठै और जोरसे हंसना खांसी थूकना निन्दा २१८ जम्हाई देह तोड़ना अंगुली फोड़ना त्यागै और राजा के दिये हुये स्थान पै आनन्द से बैठना २१९ प्रवीण बुद्धिमान् अभिमानको त्यागैऔर आपत्काल और विपत्काल में और कार्य्य के समय के बीतने २२० और पूंछने पर भी हित कहै और शुभ बातकहै प्रिय यथार्थ सत्य धर्म्मार्थक बात कहै २२१ सामान्य बार्त्ता से राजा के हित को जतावै और राजा की कीर्त्ति और नीति फलको कहै २२२ और राजा से कहै कि आप दाता धार्म्मिक शूर नीतिमान् हो तुम्हारे चित्त में अनीति कभी नहीं आती २२३ और जो जो राजा अनीति से नष्ट हुये हैं उनका राजा के सम्मुख कीर्त्तन करै सब राजों से अधिक और सबसे विशेष भी न करै २२४ और देश काल का जानने वाला परायेके अर्त्थ को देश कालमें साधै जिस्से पराये का अर्त्थ नष्ट न हो उसी तरह सदा कहै २२५ और कार्य्य के ब्याज से कभी प्रजा को न बुलावै जैसे सूखा वृक्ष होता है उसी तरह क्षुधासे पीड़ित हो मंत्री रहै २२६ और पण्डित अनर्त्थ सम्पन्न वृत्तिको न करै जिस कार्य्य में जो नियुक्त हो उसी कार्य्यमें वह तत्पर हो २२७ अन्यके अधिकार के लेने की इच्छा न करै और न किसी की ईर्षा करै और न किसी की न्यूनता करै अगर न्यूनता होतीहो तो उसको न होने दे २२८ परोपकार से और कोई मित्रकर नहींहै तुम्हारे कार्य्यको करैंगे

ऐसा कहके विलम्ब न करै २२९ करने में समर्त्थ हो तो देर न लगावै स्वामीका गुह्य कर्म्म और मंत्रको कभी प्रकाशित न करै २३० विद्वेष और विनाश की कभी न चिन्तना करै राजा परमशत्रु है इस्से इच्छा पूर्व्वक न फिरै २३१ स्त्री याचक पापी वैरी निकाले हुयेके साथ सहवास एक सङ्ग काम करना और साथ को त्याग करै २३२ और राजाके वेष भाषाके सदृश अनुकरण न करै औ बुद्धिमान् मनुष्य धनी भी हो तो राजा के गुणों की स्पर्द्धा न करै २३३ अच्छे कामों का जानने वाला राजाकी प्रीति और क्रोध को जानै और चित्तकी बात आकार चेष्टासे राजाके अभिप्रायको जानै २३४ और राजाके दिये हुये वस्त्र भूषण और चिन्हको सदा धारण करै और अपने कार्य्यकी कमी बेशी राजासे सदा कहै २३५ राजाके लिये राजकृत वार्त्ता को सुनै और कहै और चार सूचक दोषसे राजा अन्यथा कहै तो २३६ मौन होके सुनै और सत्यकी भांति न जानै और राजा आपत्तिमें हो तो उस्का त्याग न करै २३७ आदर पूर्व्वक जिसका अन्न एक वार खाय उसका हित सदा चाहै इस्से स्वामीको सदा मानना चाहिये २३८ समय पै बड़ी सेवासे अप्रधान प्रधान होता है और सेवाके छोड़ने से प्रधान भी अप्रधान होजाता है २३९ सदा सेवा में रत सेवक राजा को प्रिय होताहै अपने२ कार्य्यको सुमन हो अधिकारी करैं २४० जल्दीसे किसी कामको न करै और राजाके कहनेसे नीच कामको भी करै उस कार्य्यकारक के अभावमें सदा इसी तरह करना चाहिये २४१ समय पर जो नीच कामभी उचितहोतो उत्तमके करनेको योग्यहै जिसमें राजा प्रसन्न हो उस को अनुचित न समझै २४२ अपने अधिकार की बड़ाई राजाको न देखावै और अहल्कार आपसमें ईर्षा न करके भेदको न प्राप्तहों २४३ राजा करके अधिकार पै नियुक्त अधिकारी अपने अ-

धिकार की रक्षा के लिये अधिकारी और राजा सदृत्त हो रहै २४४ जहां ऐसा होताहै वहां बड़ी लक्ष्मी आके प्राप्त होती है और अन्याधिकार के वृत्तान्त को सुना भी हो तो न कहै २४५ राजा अन्यके मुखसे दूसरे के वृत्तान्त को कभी न सुनै और अधिकारी हित अनहितको राजासे न कहैं २४६ गुप्त वैरीका दास रूप होके जो राजा रहताहै और जो राजा मंत्रियों के मुखसे हित अनहितको नहीं सुनता २४७ वह चोर रूपहो प्रजाका धन हारक है और जो मंत्री राजपुत्रोंसे सुन्दर व्यवहार पूंछके २४८ उनके साथ विरोध करते हैं वे गुप्तचोर हैं और बालकभी राजपुत्रहों तो मंत्री उनका भी अनादर न करैं २४९ सदा मीठे बचन से यत्न पूर्व्वक राजपुत्रोंको समझावैं और उनके कुचालको कभी राजासे न कहैं २५० स्त्री पुत्रका मोह बलवानहै उसकीनिन्दा उत्तम नहीं होती और राजा का अवश्यतर कार्य्य जो प्राण का संशय हो २५१ राजासे कहै कि आप आज्ञादें तो मैं इस्को निश्चय पूरा करूंगा इस प्रकार राजा से कहके शक्तिपूर्व्वक शीघ्र उसके करने में यत्न करैं २५२ राजा को बड़े कामके लिये सेवक प्राण दे दे भृत्य कुटुम्ब के पोषण के लिये ऐसा करै अन्यथा न करै २५३ सम्पूर्ण भृत्य धन हर होते हैं राजा प्राण हर है और युद्ध आदि बड़े बड़े कामों में राजा भृत्य के प्राण लेता है २५४ अन्यथा सेवकराज धनको नहीं लेसक्ता अन्यथा धन लेतो राजा सेवक दोनों स्वनाशक होतेहैं २५५ सम्पूर्ण अहल्कार पहिले राजा उसके पीछे युवराज को मानैं और छोटे अहल्कार नवोंमन्त्रियों को और अन्य छोटे २ अहल्कार अन्य अधिकारियों को मानैं २५६ दश हजारी मन्त्री और उस से न्यूनसहस्र पति राजाके साथ कभी न खेलै क्रीड़ा से विशेष होता है २५७ और राजा कीस्त्री कन्या भी हो तो उस का अनादर न करै और राजा

के सम्बन्धी और सुहृद यथा योग्य पूजनीय हैं २५८ और अहल्कार राजा का बुलाया हुआ शत बड़े कामों को छोड़ के शीघ्र जाय और राजा कागुप्तकार्य्य अपने मित्र से भीकभी न कहै२५९ मजदूरी बिना राज द्रव्य की चाहना न करै राजा की आज्ञा बिना कुछ काम न करै मासिक क्या २६० और मन्त्री द्रव्य के लोभ सेकिसी के कार्य्य को न काटै वह कभी अपनी स्त्री पुत्र धन प्राण से राजा की रक्षा करता है २६१ घूस किसी से न ले और राजा को और तरह न समझावै क्योंकि अन्यथा दण्ड देनेवाले और प्रबल दण्ड नृप को २६२ राज्यकी रक्षा के लिये एकान्त में राजाको समझावै राजाका और लोकका हित अहित जिससेहो वैसाकरै २६३ नवीनकर शुल्क आदि जिस्से लोकको उद्वेगहो गुणनीति बल द्वेषी कुलीन भी हो अधार्म्मिकहै २६४ राज्य विनाशक राजा भी हो तो उसका त्यागकरै और उस के पद में राज्यकुलके गुणयुक्त किसी दूसरेको पुरोहित २६५ प्रधानों की सम्मतिसे राज्यकी रक्षाके लिये अस्त्र धारणकर राजासे दूर जहांअस्त्र पात न हो वह वहां सदा रहै २६६ शस्त्रधारी राजासे दश हाथ पै और नृप प्रिय मन्त्री और लेखक रहैं २६७ सेनापति बिना शस्त्रधारी सभामें जायं और सबसे बहुत श्रेष्ठ पुरोहित और सबसे श्रेष्ठ सेनापति है २६८ राजाके मित्र और सम्बन्धी समानहैं और मन्त्री उत्तमहैं अधिकारिगण मध्यम और दर्शक लेखक अधम हैं २६९ सबसे अधम भृत्य और उसी तरह परिचारगण सदा अधमहैं और परिचारगणसे न्यून नीचसाधक हैं २७० आगेसे गमन उत्थान अपने आसनपै बैठाना कुशल प्रश्न सुस्मित दर्शनको क्रमसे २७१ राजा पुरोहित आदि और अन्य अधिकारिगणोंको निरालस सभास्थ अपना स्नेह दिखावै २७२ बिद्यावानोंमें शरत्काल के चन्द्रमा के समान और शत्रुमें

गर्म्मीके सूर्य्यकेसमान प्रजाओंमें बसन्तके सूर्य्यके समान तीन प्रकार राजाको होना चाहिये २७३ जो ब्राह्मण भिन्न में राजा कोमल होताहै उसको नीचजीत लेतेहैं जैसे हथिवान को हाथी जीतलेतेहैं २७४ और भृत्य आदि करकेजो परिहास और क्रीड़न नहीं कर्त्तव्यहैं ये दोनों अपमानका स्थान और राजाको भयदेने वाले होतेहैं २७५ वे राजासे समय पाके अपना २ स्वार्थ कहैं स्वकार्य्यमें गुण वक्तृत्वसे सब स्वार्थ पर होतेहैं २७६ जोविकल्प करता अथवा राजाका अपमान करता और राजाके बचनको टाल देता राजाके खानेकीवस्तु खाय वहअपने अधिकारपर नहीं रहता२७७ राजाके मन्त्रको तोड़दे और उसकी बुराइयोंको ढूंढ़े राजाका ऐसा वेष बनाके राजाको धोखादे २७८ और राजा की स्त्रियोंका सङ्ग करै और राजा क्रोधकरै तो हंसै निर्ल्लज्जहोके बकै क्षण २ में राजा निरादर करै २७९ राजाकी आज्ञा को टाल दे और अकर्म्ममें भय न करै ये दोष परिहास अक्षम क्रीड़न उत्पन्न राजामें होतेहैं २८० सेवक बिना नृपके लिखनेके कहीं कोई काम न करै और छोटा काम हो या बड़ा बिना लिखे राजा न प्रसिद्धकरै २८१ भूल जाना पुरुषका धर्म्महै इस्से लिखना मुख्य है और जो बिना लिखे काम करै वह बिना लिखे आज्ञा दे २८२ राजकार्य्यमें राजा और भृत्य दो चोरहैं राजाके चिन्ह से लिखना राजाहैराजा राजानहींहै२८३मुहर सहितराजाका लेख सबसे उत्तमोत्तमहै राजाकालिखा उत्तमहै और मन्त्री आदि का लेख मध्यम है २८४ पुरबासियोंका लेख अधमहै ये सबसाधन योग्यहैं और जिन २ कार्य्यमें राजा जिसको अधिकारी नियत करै २८५ अनुक्रमसे अमात्य युवराजादि दिनमासबर्ष बहुबर्षका वृत्तान्त २८६ जिस कार्य्यके लिये जोलेख हो उसको भलीभांति राजाको समझा और राजमुहर से युक्त चिन्ह अपने पास र-

कखै २८७ बहुत कालके बीतनेपै विस्मरण और भ्रान्ति मनुष्यों को होती है अनुभूत बातों के स्मरण के लिये प्रथमसे लिखना बनायाहै २८८ यत्नसे बचन करके बर्णस्वर विचिन्हित अक्षरोंसे वृत्त आय अर्थात् लाभ खर्च लेख्यहै ये दो प्रकारके हैं २८९ व्यवहारक्रियाके दो या बहुतसे भेदहैं स्वार्थानुरूप साध्यार्थ उत्तर क्रिया सहित २९० जो पूर्ण निश्चय करके लिखा जाय वह जयपत्र कहाताहै सेनापति सेवक देशपाल आदिको २९१ जो कार्य्यकी आज्ञा दे वह आज्ञापत्र है ऋत्विक् पुरोहित आचार्य्य और अन्यपूजितोंको २९२ जो कार्य्यनिवेदन करै वह प्रज्ञापन पत्र है और सबकोई हमारी आज्ञासे निश्चय करके सुनो २९३ अपने हाथमें प्राप्तकालके सदृश इस शासन पत्रको समझो और जिस राजाके लिखनेसे देशआदिको दे २९४ सेवा शौर्य्यादि से तुष्टराजादे वह प्रसाद लिखितहै भोगके लिये या करके लियेजो पत्र वह उपायन पत्र है २९५ कोई पत्र पुरुषावधिक या कालावधिक जो भाई आदि चाहैं तो परस्पर अपनी रुचि के सदृश २९६ विभाग पत्रकरैं उसको भागलेख्य कहै हैं और गृह और भूमि देके जो पत्रलिखतेहैं वह प्रकाशक पत्रहै २९७ जो काटने के योग्य और काटने के योग्य न हो वह दानलेख्यहै गृह और क्षेत्र आदिको बेंच तुल्य मोलके प्रमाणसे युक्त २९८ जो पत्रलिखा जाताहै वहक्रयलेख्यहै और जङ्गम और स्थावर धनको गिरों रखकेजोलेख लिखा जाताहै वह खरीदपत्र है २९९ ग्राम व देश जो सत्यलेख परस्पर करते हैं राजा विरोध और धर्म्मार्थ लिखै वह संव्वित्पत्र है ३०० ब्याजू रुपया लेके गवाहोंके साथ जोपत्र लिखै अथवालिखावै वहऋणपत्र कहाताहै ३०१ अपराध के दूर होने और बुधोंकेप्रायश्चित्तहोनेपै गवाहोंसहित जोपत्रदियाजाय वह शुद्धिपत्र कहाताहै ३०२ अपने २धन के अंशको मिलाकेजो

व्यवहार करते हैं और उसमें जो पत्र लिखाजाताहै वह सामयिक पत्रहै ३०३ सभ्य अधिकारी प्रकृति सभासद ये सब मिलके जो पत्र आपसमें लिखदें वह सम्मति पत्रहै ३०४ अपने वृत्तके जाननेके लिये जो परस्पर लिखतेहैं श्रीपूर्व्व आदिमें मङ्गलपद पूर्व्वोत्तर पक्ष सहित ३०५ जिसमें सन्देह न हो अर्थ खुलासाहो और पद और अक्षरस्पष्टहों अन्यनिषेधक अपने या पराये के पिता आदिके नामसे युक्त ३०६ एक दो बहुबचनसे यथायोग्य स्तुति से युक्त बर्ष मास पक्ष नाम जाति आदिसे चिन्हित ३०७ कार्य्य का बोध करानेवाला सम्बन्ध सहित नति आशीर्व्वाद पूर्व्वक स्वामि सेवक सेव्यार्त्थ क्षेमपत्र कहाताहै ३०८ इन गुणोंसे युक्त पीड़ाकारक सूचक और किसीके बोधन के लिये होवै वह अर्जी पत्र कहाताहै ३०९ संक्षेप से स्वभाववृत्तका कहना लक्षण से युक्त और संक्षेपसे लाभ खर्चका बोधक कहैंहैं ३१० व्याप्य व्यापक भेदसे मोल मालआदिसे पृथक २ विशेष संज्ञा सहित यथार्त्थ बहु भेद युक्त ३११ बर्ष बर्ष मास मास और दिन दिन में सुवर्ण पशु धान्यआदि जिसके आधीन हो वह आयसंज्ञकहै ३१२ और जोधन पराधीन किया हो वह व्यय संज्ञकहै और नीचे पुराना गड़ाहुआ धन भी आय संज्ञक है ३१३ खर्च दो प्रकारका है एक भोग किया या दिया हुआ निश्चितान्य स्वामिक और जिस का कोई मालिकहो ३१४ और अपने निश्चयसे जोसञ्चय किया हो इस तरह सञ्चित धन तीन प्रकारकाहै और जिस धनका अन्य स्वामी निश्चितहुआ है वहभी तीन प्रकारका है ३१५ औपनिध्य१ याचितक२ औत्तमर्णिक३ यह तीन प्रकार के सञ्चित धनहैं विश्वास सहित जो अच्छे लोग रखते हैं वह औपनिध्य कहाताहै ३१६ जिस धनसे अन्यके अलङ्कार आदि ले उसको आवृद्धिक धन कहते हैं और व्याज सहित जिसको धन दे वह

औत्तमर्णिक धन कहाताहै ३१७ और जिसका स्वामी ज्ञात न हो ऐसा निधिमार्ग्ग आदिमेंमिलै वहसाहजिक अपना धनहै ३१८ महीना अथवा बर्ष दिनमें जो निश्चय करके धन उत्पन्न हो यह साहजिक आय भाइयोंका भाग स्ववृत्तिसे है ३१९ जो दाय वही परिग्रहहै और प्रकृष्ट स्वभावज है और पूजनआदि प्राप्त मौल्यादिक कुसीदहै३२० पारितोषिकसेवाप्राप्त वीजिताद्य जोधनइसमें अपना स्वत्त्व रहता है इस्से अन्य साहजिक कहलाताहै ३२१ पूर्ब्ब बर्षकी बाकी और वर्त्तमान सालकी बाकी इसतरह स्वाधीन और सञ्चित दोप्रकार का धन है ३२२ और दोप्रकारके धनसे राजान्तर भेदसे साहजिक धन अधिकहै और भूमि भागसे उत्पन्न पार्थिव आय कहाताहै ३२३ सदैव कृत्रिम जल से देश ग्राम पुर करके अलग २ बहुत मध्य अल्प फलसे भागमें भेदहोता है ३२४ शुल्क दण्ड खानि कर भाटक भेंट इनको लेख विशारदकर संज्ञा कहतेहैं ३२५ जिस निमित्तजो जमाहो तन्नाम पूर्ब्बकखर्च होता है इसप्रकार व्याप्य ब्यापक संयुत व्यय कहा ३२६ वहभी पुनरावर्त्तक और स्वत्त्व निवर्त्तक दो प्रकारका है उसमें भी उपनिधी कृत और विनिमयात्मक ३२७ ब्याजू बिन ब्याजू अधमर्ण आकृत और भूमि में ढकीहुई उपनिधीकृत अन्यत्र स्थित उपनिधि ३२८ दियेहुये मोलआदिसे प्राप्त विनिमयी कृत कहाताहै और ब्याजू बिन ब्याजू दियाहुआ आधमर्णिक कहाता है ३२९ सव्याज कर्ज्ज दत्त और बिना ब्याज दिया हुआ उधार और स्वत्त्व निवर्त्तक ऐहिक पारलौकिक यहदोप्रकार केहैं ३३० औरप्रतिदान पारितोष्य वेतन ऐहि लौकिक भोग्य चार तरह का पारलौकिक है और इस्के अनन्त भेद हैं ३३१ बाकी में पुनरावर्त्तक व्ययको नित्य योजनाकरै मोलकरके जोदियाजाय वह प्रतिदान कहाता है ३३२ सेवा शूरता से सन्तुष्ट होके जो दे वह पारितोषिक क-

हाताहै और मजदूरीके बदले जो दियाजाय वह वेतन है ३३३ धान्य वस्त्र गृह बाग गऊ गज अर्थ विद्या राज्यके मिलनेके अर्थ और धन प्राप्तिके लिये ३३४ और रक्षा के लिये जो खर्च किया जाय यह सब उपभोग्य कहाता है सोना चांदी रत्न अशर्फी शाला अर्थात् गृह ३३५ रथ अश्व गो गज ऊंट बकरा भेंड़ी भेंड़ा का पृथक्२ गृह बाजा शस्त्र अस्त्र बस्त्र धान्य और अन्य सामग्री ३३६ मन्त्री मिस्त्री नाट्य वैद्य मृग पाक पक्षी की रहनेकी जगह शाला और उसके लिये खर्च व्यय कहाता है ३३७ जप होम पूजन दानसे चारप्रकार का पारलौकिक है और पुनर्य्यात और और निवृत्त ये विशेष आयव्यय हैं ३३८ आवर्त्तक और निवर्त्ती **व्यय आय पृथक २ दोप्रकारकेहैं** आवर्त्तक को छोड़के और अन्य **अन्य आय व्ययको लेखक** लिखै ३३९ मोल और कर्ज्जको छोड़ **अन्य नहीं फिरता द्रव्य** लिखके उसको दे और लेके आप लिखै **३४० आय व्ययका** लिखनेवाला न घटै न बढ़ै और हेतु प्रमाण **सम्बन्ध कार्य्याङ्ग व्याप्य** व्यापक से ३४१ आय अक्सर भिन्नहैं और व्यय पृथक् २ मान संख्या उन्मान परिमाण में ३४२ कहीं संख्या कहीं मान उन्मान परिमाण और उसके जाननेवालों के व्यवहार के लिये कहीं सब एकही जगह होते हैं ३४३ अंगुल आदि मान उन्मान तराजू पात्रमान परिमाण और एकदो आदि संख्या ३४४ जहां जैसा व्यवहार हो वहां वैसी कल्पना करै और चांदी सोना तांबा आदि के व्यवहारार्थ मुद्रित ३४५ और व्यवहार के लिये कौड़ी आदि रत्नान्त द्रव्य कहाते हैं और पशु आदि तृणान्त धन संज्ञक हैं ३४६ व्यवहार में लगाया हुआ सोनाआमूल्यता को प्राप्त होता है और कारण के योगसे पृथ्वी में पदार्थ होता है ३४७ जिस व्यय से जो कार्य्य सिद्धहो वह उसका **मूल्य है कठिन या सुलभ से गुण अथवा अगुण से उस्का मू-**

ल्य रक्खै ३४८ जिस पदार्थ की जैसी चाहना हो उसीतरह उसका कम अधिक मोलहोता है मणि और धातुका कहीं हीन मूल्य न कल्पना करै ३४९ इनके मोलकी हानि राजा के दोषसे होती है दीर्घ चतुर्भाग भूतपत्र में तिर्य्यक् बलि को लिखै ३५० त्र्यंशगा अभ्यन्तर्गता अर्द्धगा पादगामिनी व्यापक व्याप्य के लेख में यह पद संज्ञिता करै ३५१ इन सब में अभ्यन्तर्गता श्रेष्ठहै त्र्यंशगा वामन त्र्यंशगतादक्ष उसीतरह अर्द्धगा और पादगा हैं ३५२ अपने में स्वभेद और सदृश पदमें सदृश आरम्भपूर्णता और सदृश ये दोनों सदा पदग हैं ३५३ राजा अपना बिचार और अपने चिन्ह के लेखको देख विचारके लिखने के सदृश दस्तखतकरै ३५४ मंत्री प्राड्विवाक पण्डित दूत इनका लेख स्वा विरुद्ध है ये पहिले लिखें ३५५ यह लिखना दुरुस्त है ऐसा पहिले अमात्य लिखै अच्छी तरह विचार किया ऐसा दस्तखत सुमन्त्र करै ३५६ सत्य और यथार्थ है ऐसा प्रधान लिखै यह अङ्गीकार करनेके योग्य है ऐसा नायब लिखै ३५७ यह अङ्गी कर्त्तव्य है ऐसा युवराज दस्तखत करै यह लेख स्वाभिमत है पुरोहित ऐसा लिखै ३५८ अपनी अपनी मुहर का चिन्ह लेखके अन्तमें करैं तत्पश्चात राजा अङ्गीकार किया यह लिखके अपनी मुहर करै ३५९ और बहुत से कामों में राजा लगा हो अच्छी तरह देखने में समर्थ न हो तो युवराज आदिसे उसलेखको दिखावे ३६० सम्पूर्ण मन्त्री गण लेखको मुहर सहित लिखैं और राजा अच्छीतरह देखनेमें समर्थ नहोतो देखा यह लिखै ३६१ आयको आदिमें पश्चात् व्ययको लिखै बामभाग में और व्ययको दाहिनी ओर लिखै ३६२ बामऊर्ध्वभाग क्रमसेदोनों पत्र व्यापक व्याप्य हैं आधाराधेयरूप अथवा कालार्त्थ हैं यह गणितहै ३६३ क्रम से नीचे बाईं तरफ व्यापक को लिखै और व्याप्य के

मूल्य मानादि उस्की पंक्तिमें रक्खै ३६४ ऊर्ध्वगका गणित क्रमसे नीचे की पंक्ति में होता है जहां व्यापक व्याप्य व्यापकत्व में संस्थित हों ३६५ व्यापक बहु वृत्तिक और व्याप्य न्यून वृत्तिक है व्याप्य अवयव और व्यापक अवयवी है ३६६ सजाति का लिखन समुदायसे करै यथा प्राप्त लिखन आद्यको समुदाय से न लिखै ३६७ व्यापक अथवा पदार्थ जहां स्थल हों तहां व्याप्य आयव्यय को काल से सर्व्वदा करैं ३६८ यह स्थान टिप्पणिका है उस्से अन्य सङ्गटिप्पण है वहां विशेष संज्ञकव्यापकहै ३६९ कितना जमा है कितना खर्च और कितना द्रव्यशेष कितना विशिष्ट संज्ञक है इनका सम्बिज्ञान होता है ३७० जैसे जोप्राप्तहो प्रथम उस्को लिखै पीछेसे उसका हिसाब लिखै स्थान और द्रव्य टिप्पण से अधिक संज्ञक है ३७१ बाकी जमा खर्च का विज्ञान क्रमसे लेखसे होता है और स्थान जमा खर्च का विज्ञान व्यापक स्थान से होता है ३७२ पदार्थके स्थान होते और पदार्थ स्थानके होते व्याप्य तिथिआदि ये मनुष्योंके लेखमें यथेष्ट हैं ३७३ निश्चितान्यस्वामिक जो अन्यकाहो और जो विशिष्टसंज्ञक और पुनरावर्त्तक ३७४ और परलोकान्त खर्च वही अन्तका व्यापक है इच्छासे गुणितकर उसका प्रमाण फल होताहै ३७५ प्रमाणके भागसे जो लब्धहो वही मनुष्योंका इच्छा फल होताहै और संक्षेपसे लेखलेख्य कहाता और सबका स्मृति साधन है ३७६ गुञ्जा मासा कर्ष पदार्द्ध प्रस्थ इनमें एकसे दूसरा दशगुना अधिकहै और पांच प्रस्थका एक आढ़क होताहै ३७७ आठ आढ़कका अर्म्मण और बीस अर्म्मणका खारी यह देश२ में भिन्नहै ३७८ पञ्चांगुला बटपात्र और चार अंगुलका विस्तृत प्रस्थपाद परिमाण मेंहै ३७९ जिस तरह ऊपरका अङ्क लिखाजाय उसी तरह बाईं क्रम से स्वदर्श गुणित परार्द्धान्त कहे हैं ३८०

कालकी दुर्ग्गमताके कारण संख्याकरनेके योग्य नहीं ब्रह्माके द्विपरार्द्धके मनुष्योंने ब्रह्मा और देवताकी आयु कही है ३८१ एकदश शत सहस्र अयुत नियुत प्रयुत कोटि अर्ब्बुद अब्ज खर्ब्ब ३८२ निखर्ब्ब पद्म शङ्ख अब्धि मध्य अन्त परार्द्ध यह काल ज्ञान चान्द्र सौर सावनके भेदसे तीन प्रकार का है ३८३ मजदूरीके देने में सौरमान और व्याजमें चान्द्रमान और रोजमर्राकी मजदूरी देने और अवधिमें सावन मास ग्राह्यहै ३८४ कार्य्यमान कालमान कार्य्यकाल यह तीन प्रकारका है मजदूरीमें जैसी बोली कही हो कहै ३८५ यह बोझा वहां पहुंचा दो इतनी मजदूरी देंगे यह कार्य्यमान है ३८६ वर्ष वर्ष महीने महीने दिन दिन में इतनी मजदूरी तुमको देंगे यह कालिका है ३८७ इतने कालमें यहकाम तुमने किया इसकी इतनी मजदूरी देंगे यह कार्य्य कालमिता है ३८८ मजदूरीका लोप न करै और मजदूरी का विलम्ब करै अवश्य पोषण के योग्य करै वह मध्याभृति है ३८९ इनमें परिपोष्य भृति सबसे श्रेष्ठहै यह समात्राच्छादनार्थिका है जिससे एकका पोषण हो वह हीन संज्ञिकाहै ३९० जैसे २मालिक गुणवान् हो उसी तरह सेवक मजदूरी करताहै इसी तरह राजा अपने हित के लिये करै ३९१ अवश्य पोष्य वर्ग्ग का भरण भृतक से होताहै इस कारण उसके योग्य मजदूरी नियत करै ३९२ जो भृत्य हीन भृतिक हो उनको अपने आप शत्रु बनानाहै वे पराये के साधक छिद्र कोश प्रजा के हरनेवालेहैं ३९३ अन्नाच्छादन मात्र करके जो शूद्रकी मजदूरी करताहै उसका भागी उसका पोषक होताहै ३९४ और ब्राह्मण जिस धन को हरलेताहै वह परलोकद है शूद्र को दिया हुआ भी धन केवल नरक के लियेहै ३९५ मन्द मध्य शीघ्र तीनप्रकार के सेवकहैं और सभा मध्याश्रेष्ठा तीन तरहकी क्रमसे उनकी मजदूरीहै ३९६ सेवकको गृह कार्य्य

के लिये दिनमें एक पहर की छुट्टीदे रातमें तीन पहर की और दिनकी मजदूरी में दो घण्टे की छुट्टीदे ३९७ राजा सेवकों के उत्सवके दिन छोड़के मिहनत करावै और अति आवश्यक कार्य्य होतो उत्सवके दिनभी कार्य्यकरावै परन्तु श्राद्ध के दिनकार्य्य न करावै ३९८ और सेवक बीमार होतो तीन महीने तक एक चौथाई कम तनख्वाह दे और पांच बर्षका नौकरहो कम व बेश कर के मासिक दे ३९९ और बहुत बीमार होतो छः महीने तकका मासिकदे इसके पीछे कुछ न दे और एक सप्ताह तक जो बीमार होतो कुछ मासिक न काटै ४०० और जो सेवक बार २ बीमार होतो उसकी जगह दूसरे को रक्खे और सेवक बड़ा गुणी बीमार होतो आधी नौकरी दे ४०१ बर्ष दिनमें सेवा बिनाभी राजा एक पक्षकी छुट्टीदे और जो चवालीस बर्षतक सेवाकरै ४०२ तिस्से सेवाबिना राजा उस्को मजदूरी का आधादे और जबतक वह जीवै तब तक योग्यहो तो उस्का आधादे ४०३ अथवा सुशीला स्त्री या कन्याको अपने कल्याण के लिये मासिक का अष्टमांश पारितोषिक भृत्यको दे ४०४ अथवा कार्य्यका अष्टमांश दे या कार्य्य अधिक कियाहो और स्वामि कार्य्यमें नष्टहुआ होतो उस्के पुत्रको उस्की नौकरी दे ४०५ और जो बालक में उस्से अधिक गुणहों उसी तरह उस्की मजदूरी मुकर्रर करै छठाअंश या आठवां अंश प्राचीन भृत्यकोदे ४०६ उसके पुत्र को आधी तनख्वाह दे दोतीन बर्षके पीछे पूरा मासिक दे और कटु वाक्य या प्रबल दण्ड में राजा मासिक दे ४०७ राजा अपमान और शत्रुता से शिक्षाकरै और उसी तरह मजदूरी से पोषण कर मान से बढ़ावै ४०८ कोमल बचन शान्ति कराने पै जो सेवक राजाका त्याग नहीं करता ऐसे यथा गुण अपने भृत्यों को राजा प्रसन्न रक्खे ४०९ किसीको शाकदेकर किसीको फल किसीको सुदृष्टि

से किसीको हास्यसे किसीको कोमल बचनसे प्रसन्नकरै ४१० सुन्दर भोजन सुन्दर वस्त्र ताम्बूल धन और कुशल प्रश्न और अधिकार के देनेसे किसीको प्रसन्न करै ४११ किसीको बाहन किसीको योग्याभरण छत्र आतपत्र चमर दीपिका के देनेसे किसीको प्रसन्न रक्खे ४१२ क्षमा नमस्कार मान समीप गमन सत्कार ज्ञान आदर शम से ४१३ प्रेमसमीप बास अपने आधे आसनके देने सम्पूर्णासन के दान स्तुति उपकार कीर्त्तन ४१४ जिसकार्य्यमेंजो मुकर्ररहो उनके कार्य्यके अङ्कसे अङ्कितवहचिन्ह लोह तांबा पीतल चांदी से बनावै ४१५ सुवर्ण रत्न का यथा योग्य स्वलांछन से और दूरसे जानने के लिये वस्त्र और मुकुट ४१६ बाजा और बाहन के भेदसे भृत्योंको अलग २ करै और अपना विशेष चिन्ह राजा किसीको न दे ४१७ पुरोहित आदि सब दश ब्राह्मणहैं उनके अभाव में क्षत्रिय योग्यहै और क्षत्रिय के अभावमें वैश्यकी योजना करै ४१८ राजा गुणवान् शूद्रको कभी न युक्त करै क्षत्रिय भागग्राही और साहसाधिपहै ४१९ ग्रामका रक्षक ब्राह्मण औ हिसाब लिखनेवाला कायस्थ महसूल लेनेवाला वैश्य और द्वारपाल शूद्र को करै ४२० क्षत्रिय को सेनापति करै और क्षत्रिय के अभाव में ब्राह्मण को सेनापति बनावै और कादर वैश्य और शूद्रको कभी सेनापति न करै ४२१ सब जाति में जो शूर हो वही सेनापति योग्य है यवन अर्थात् मुसल्मान को सेनापति न करै ४२२ जिस वर्ण का राजा होताहै वह वर्ण सुखको प्राप्त होताहै वह उपकार को न माने न सेवन से प्रसन्न होताहै ४२३ कथान्तर में न स्मरण करै शङ्का करै लखै जिसका क्रोध न जाय ऐसे राजाको सेवक त्यागकरै ४२४ युवराज आदिका लक्षण और कृत्य संक्षेप से कहा ४२५॥

इतिशुक्रनीतौयुवराजाद्वितीयोऽध्यायः २॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

शुक्रनीति भाषा ॥

तीसरा अध्याय ॥

अथ सबमें साधारण नीति शास्त्र कहतेहैं सब प्रवृत्ति सब भूतों कोसुखके लिये होती हैं १ बिना धर्म्म सुख नहीं होता इस कारण धर्म्म तत्पर होय त्रिवर्ग्ग अर्थात् धर्म्मार्थ काम शून्य आरम्भ नहीं इससे इनके अविरोध से इनका सेवन करै २ प्रति पद धर्म्म ही में चलै वह मध्यम रोम नख दाढ़ी रखके निर्म्मल चरण मल के गृह ऐसे नीचहैं ३ स्नान शील सुगन्धयुत सुवेष नम्र उज्ज्वल सदा रत्न सिद्धमन्त्र महौषधी को धारण किये ४ आतपत्र अर्थात् छतुरी जूता सहित चार नेत्रहों दिनमें फिरतेहैं और रात्रिमें नाशक कार्य्यमें दण्डले मौली सहायवान् होता है ५ वेग युक्तहो अन्य कार्य्य न करै और बलसे वेगको न रोकै इतर दूरगहो भक्तिपूर्ब्बक कल्याण मित्र की सेवा करै ६ हिंसा चोरी अन्यथा काम चुगली कठोर बचन झूंठ पदमें व्यर्थ द्रोह चिन्ता अन्यके नेत्रका फेरना ७ दश प्रकार के पाप कर्म्मों को काय वाक् मनसे त्याग करै शक्तिसे प्रवृत्ति व्याधित शोकार्त्त का अनुवर्त्तन करै ८ कीटसे चेंटी तक सब जीवोंको अपनेही समान जानै अपकार करनेवाले शत्रु मेंभी उपकार करै ९ सम्पत्ति और विपत्ति मेंभी एक मनहो कारण से क्रोध करै फलसे नहीं काल में हितमित कहै जो अविसम्बादी और कोमल हो १० पहिले कहने वाला सुमुख सुशील करुणा से कोमल एकसुखी सर्व्वत्रनहीं विश्वासित न शङ्कित ११

किसी को अपना शत्रु न अपनेको किसी का शत्रु प्रकाशित करै और अपमान और प्रभु की निस्स्नेहता का प्रकाश न करै १२ जनके आशयको देखके जो जिसतरह प्रसन्न होताहो पराराधन पण्डित उसके साथवैसाही करै १३ नइन्द्रियोंको बहुत पीड़ा दे न उनका बहुत पोषण करै प्रमाथी इन्द्रिय जबरदस्ती मनको हरतीहैं १४ मृग हाथी पतङ्ग भ्रमर मछली ये पांच शब्दस्पर्श रूप रस गन्धसे मारे जातेहैं १५ इनमें बरस्त्री का स्पर्श मुनिके मनको भी हरताहै इससे अप्रमत्तहो यथोचित विषयोंका सेवन करै १६ माता बहिन कन्याकेभी साथ एकान्तमें बास न करै यथा सम्बन्ध उसको बुलाके आभाषण आश्वासन करै १७ अपनीहो या परकीयाहो शुभगे भगिनि इस तरह कहै स्त्री अन्य पुरुषके साथ बास और स्पष्टभाषण न करै १८ भ्रातृ पिता राजा पुत्र श्वशुर बान्धवों को छोड़ क्षणमात्रकी स्वतन्त्रा दूसरे गृहमें बास स्त्री न करै १९ स्त्रियोंको गृहकृत्य बिना क्षणमात्रकी स्वतन्त्रता न दे चण्ड षंढ दण्ड शील अकाम परदेशी ॐ दरिद्र रोगी अन्य स्त्री रत ऐसे पतिको देखके स्त्री विरक्ताहोयथवा अन्यको पतिबनावे २१ इन दुर्ग्गुणों को छोड़के यत्न पूर्वक स्त्रियों की रक्षा करै और बस्त्र अन्न भूषण प्रेम कोमल वाणी से शक्तिके सदृश दे २२ अपनी अति नैकट्यसे स्त्री और पुत्रकारक्षा करै चैत्य पूज्यब्रजा स्वच्छछायामें भस्मअमङ्गलहै २३ शुद्धा लोष्ठ बलि स्नान भूका आक्रमण न करै नदी को बाहुसे न तैरै बड़ी अग्निके पास न जाय २४ सन्दिग्ध नाव और वृक्ष पर न यानकी तरह न चढ़ै नाक कोबारबार न सिकोड़ै और अनाया पृथ्वीको न लिखै २५ दोनों हाथ मिलाके शिर न खुजलावै और अङ्गोंसे विगुणकी चेष्टा न करै शीत रहित मुंह न बिगाड़ै ६ देह वचन चित्तकी चेष्टा को प्राक्श्रमसे निवृत्त करै ऊपर ना उठाके देरतक न ठहरै और

रातको वृक्ष पर न चढ़ै २७ उसी तरह चबूतरा अङ्गण चौराहा सुरालय शून्यगृह शून्य जङ्गल श्मशानकोदिनमें नजाय २८ सर्व्वथा सूर्य्यको न देखै और शिर पर बोझा न उठावै और विस्तृत छोटी जलती अशुद्धअप्रिय वस्तुओंको न देखै २९ सन्ध्या में भोजनस्त्री शयन अध्ययन चिन्तन मद्य विक्रय सन्धान दान देना लेना न करै ३० बुद्धिमानको सब श्रेष्ठामें लोकही आचार्य्यहै इस्से परीक्षक लोकके सदृश करै ३१ राजा देश कुल ज्ञाति सद्धर्म्म कोदूषित न करै समर्थ भी लौकिकाचार को मनसे भी न नांघै ३२ अयोग्य कियाहो या कहहो बल और हेतुसे उद्धार न करै और प्रत्यक्ष दुर्गुणके कहने वलेविरल मनुष्य हैं ३३ लोक और शास्त्रसे जानके त्याज्यका त्याग करै नय सङ्काश अनय को मन से भी न विचारै ३४ मैं सहस्रापराधी हूं एक अच्छे काससे क्या होगा अघको मानके थोड़ भी विचार न करै बूंदसे घड़ा पूरा होताहै ३५ इस समय मे रात दिन कैसे बीतते हैं यह जानके दुःखी न हो नित्यही सन्हित स्मृति हो ३६ तर्क समास हेतु आदिके लिये अपनी इच्छको छोड़के स्तुति अर्थवाद को छोड़के यत्न पूर्व्वक सारका ग्रहणकरै ३७ धर्म्म तत्वगहन है इस्से उसकी सेवा करके श्रुतिस्मृति पुराणके कर्म्म करै ३८ अधर्म्म निरत चोर आततायी भ्रूहं तिस परभी राजा शत्रु सुत गुरुको न छिपावै ३९ अग्नि बि देने वाला शस्त्रोन्मत्त धनहारी खेत स्त्री का हरने वाला ये ६ आततायी हैं ४० स्त्री बालक रोग दास पशु धन बिद्याभ्या इनका क्षणमात्र भी अनादर न करै बुद्धिमान् इनकी सेवा करै ४१ जहां राजा धनी श्रोत्रिय वैद्य और देशाचार विरुद्धहो तो एक दिनभी बास न करै ४२ नपुंसक स्त्री बालक क्रोधी मूर्खनाइसी जहां ये अधिकारी हों वहां एक दिनभी बास न करै ४३ जहां राजा अविवेकी और

सभा वाले पाक्षिक हों सन्मार्ग के त्यागी पण्डित हों गवाही झूठ बोलने वालेहों ४४ और दुरामा स्त्री नीच जनों की जहां प्रबलता हो वहां धन मान की इच्छा न करै वहां बसनाही जीवन है ४५ लड़कपन में माता पालन्न करै और पिता साधुन सिखावै और राजा धनको हरै वह क्या पीड़ाहै ४६ अच्छी तरह सेवा किये हुये मित्र स्वजन राजकोप करैं और गृह अग्नि बिजलीसे नष्ट हो तो इसमें क्या चिन्ताहै ४७ अच्छे के वचन का अनादर करके अभिमान से अवथा करै और फलित विपरीत हो उसमें क्या चिन्ताहै ४८ नि सावधान मनहो राजा देवता गुरू अग्नि तपस्वी धर्म्म ज्ञान व की सेवा करै ४९ माता पिता गुरु स्वामी भ्रातृ पुत्र मित्र सेनसे भी क्षणमात्र कहीं न विरोध करै न अपकारकरै ५० स्वजनसे विरोध न करै और बली के साथ स्पर्द्धा न करै और स्त्रबाल वृद्ध मूर्ख के साथ विवाद न करै ५१ स्वादु बस्तु अके न खाय और एक अर्थकी चिन्तना न करै अकेला राह नलै और सोने वालोंमें अकेला न जागै ५२ अन्य धर्म्मकी सेवा करै किसी से द्रोह न करै हीन कर्म्म गुण और स्त्रियोंके स एक आसनपै न बैठै ५३ नींद तन्द्रा भय क्रोध आलस्य दीसूत्रता ऐश्वर्य्य का चाहने वाला इन छः दोषों को पुरुष छो५४ ये निस्सन्देह कार्य्यके विघात के लिये होते हैं उपायज्ञ ज्ञ तत्वज्ञ उस हानि के प्रतिभान होतेहैं ५५ नित्य स्वधर्म्म निरत पर स्त्री पराङ्मुख वक्ता तर्की चित्र कथ सदा अकुण्ठितवन ५६ बहुत देरतक सुनै और शीघ्र जानै जानके अर्थका विचार करै इच्छा पूर्व्वकविभाग न करै५७ खरीदने बेचनेकी चाहनऔर अपनी दीनता न दिखावै बिनाकार्य्य और आशासे किसी घरमें न जाय५८बिना पूछे किसी से अपने गृहका हाल न जिसमें बहुतअर्थहों उनको थोड़े कर-

के खूबसूरतीके साथ कार्य्य साधक कहै ५६ अनुभूतबिना अपना अभिमत न दिखावै अच्छीतरः पर मत देखके उसकी आज्ञा ले उत्तरदे ६० स्त्री पुरुष और पिता पुत्रके कलहमें गवाही न दे गुप्त सलाहदे और शरणागत का त्याग न करै ६१ जैसी शक्तिहो वैसी इच्छा करै और आपत्ति में न बड़ावै किसीके मर्म्म का स्पर्श न करै किसी का मिथ्या वाद न करै ६२ किसी को अयोग्य न कहै अनर्थक किसीको दोष न लावै और धर्म्मकी बात अस्वर्ग्यहो और जो लोक निन्दित हो ६३ किसीके वाक्य को अपने हेतुओं से न काटै बिचार के उत्तर दीघ्रता न करै ६४ शत्रुके भी गुण ग्राह्य हैं और गुरुके दुष्ट गुरत्याज्य हैं सदा न उत्कर्ष रहै न अपकर्ष रहै ६५ पूर्व्व जन्म कर्म्मसे सधन और निर्द्धन होता है इस कारण सब लोक से श्री को न छोड़ै ६६ सदा मनुष्य दीर्घ दर्शी हो और कहीं तत्क्ष मतिहो साहसी सालसी चिर-कारी कभी न हो ६७ जो सुनिष्फल कर्म्म जानके करने का व्यवसाय करता है पहिले कुद्दीर्घदर्शी हो तो बहुत दिनतक सुख पाता है ६८ तात्कालिक बुद्धि वाला प्राप्त काम करने का व्यवसाय करता है तो चपल और कार्य्य गौरव से उसमें कार्य्यसि संशय युक्त है ६९ आलसी कालमें भी क्रिया करनेका यत्न नहीं करता उसकी सिद्धि भी नहीं होती वह सबंश नष्ट होता है ७० क्रिया फलको बिनाने जो यत्न करै वह साहसी है उस काम और फल में वह मूढ़ दुःख भागी होता है ७१ और चिरकारी बहुत दिनमें छोटाकाम करताहै वह थोड़ा फल होनेसे शोच करता इस कारण दीर्घदर्शीहो ७२ कभी जल्दीका किया कर्म्म सुफल होताहै और कुविचार पूर्व्वक किया हुआ कर्म्म निष्फल होजाताहै ७३ तिसपर अनर्थकारी कर्म्मजल्दी में न करै कदाचित्करै तो इष्ट साधनमें वर्ज्य होताहै ७४ अनिष्ट

सत्कार्य्य अकार्य्यका प्रेरक नहींहै अगर ऐसा होतातो भृत्यभ्राता पुत्र पत्नीको न करै ७५ बिना शङ्काका कार्य्य मित्र करतेहैं इस्से मित्रप्राप्तिके लिये यत्न करै मनुष्योंको मित्र प्राप्ति श्रेष्ठहै ७६ पुत्र भाई स्त्री अमात्य अधिकारी ये विश्वस्तभी हों तोअत्यन्त विश्वास न करै७७ धन स्त्री राज्यका लोभ सबसे अधिकहै इस कारण अनुभूत प्रामाणिक प्रतिष्ठित मनुष्यका विश्वास करै ७८ अपनी तरह विश्वास करके एकान्तमें उस कार्य्यकोबिचारै उसकेवाक्यको तर्कसे अनर्त्थ और विपरीत न बिचारै ७९ चौसठिवें अंशकी हानि करै तहां तक क्षमा करै स्वधर्म्म नीति बल उससे मैत्री करै ८० दान मान सत्कार से सुपूज्यों का सदा पूजन करै और उग्र दण्ड और कटुभाषी न हो ८१ भार्या और पुत्रभी कटु वाक्य और बड़े दण्डसे उद्वेग पातेहैं कुछ देने और कोमल बचनसेपशु भी वश्य होतेहैं ८२ विद्या शूरता धन कुल बलसे प्रमत्त औरअतिमानी न हो ८३ विद्यासे मत्त अपने तर्क शिष्टोंके वचनको न मानै और अभिप्रेत अनर्त्थको धर्म्म जानै ८४ शूरता से मत्त कवायद की चतुरता छोड़के शीघ्रता से युद्ध करके प्राणोंको छोड़ताहै८५ लक्ष्मीसे मत्त पुरुष दुष्कीर्त्तिको नहीं जानता जैसे बकरा स्वमूत्र के गन्धको सूंघके अपने मूत्रसे मुखको सींचताहै ८६ उसी तरह परिवारसे मत्तश्रेष्ठ और छोटों का अनादर करताहै और अकार्य्य में भले प्रकार मति करताहै ८७ बलसे मत्त शीघ्र युद्धमें मन लगाता है बल से अश्व आदिको भी बाधा देताहै ८८ और मानसे मत्त जगत् को तृणवत् मानताहै अयोग्य भी हो तो सबसे उच्च आसन चाहताहै ८९ दुर्ज्जनके ये मदहैं और सज्जनोंके ये दमहैं विद्याका फल ज्ञान और लक्ष्मीका फल विनयहै ९० बलकाफल यज्ञदान और सत्का रक्षणहै और शत्रुओंको दबावै और करले यह शौर्य्य फलहै ९१ शम दम कोमलता यह परिवारका फलहै

और मानका फल सबमें समता रक्खै ९२ सुविद्यामंत्रऔषध स्त्री रत्नको दुष्टकुलसे मान छोड़के ग्रहणकरै ९३ प्रनष्टका त्यागकरै और प्राप्त का ग्रहण करै और स्त्री और बालक का न प्यारकरै न ताड़न करै ९४ विद्याभ्यास और गृह्यकृत्य इनदोनोंको क्रम से युक्त करै और पर द्रव्य थोड़ाभीहो तो बिना दिये न ले ९५ किसीके पाप को न कहै और स्त्रीको दूषित न करै झूंठ गवाही न दे और दी हुई गवाही को झूठ न करै ९६ प्राण नाश होने और उत्तम कार्य्य साधन और कन्या दान करने और चोरआदि से धन बचाने के समय में झूठ बोलना दोष नहीं ९७ पाले हुयेको मारने वालेको जान केभी न जनावै स्त्री पुरुष माता पिता भाई भाई स्वामि सेवक ९८ बहिन बहिन मित्र मित्र गुरु शिष्य इनमें भेद न करै जोएक भाषाबोलतेहों तो उनके मध्यमें होके न जाय ९९ सुहृदभाई बन्धुको अपनी तरह जानै और जो कोई अपने गृहमें छोटाभीआवै तोउसकीयथायोग्य पूजाकरै १०० उसके कुशल प्रश्नको पूंछकेशक्तिपूर्ब्बक दान और जलसे आदर करके सपुत्र हो तो गृह में कन्याको न टिकावै और वह सपुत्राहो तो टिकावै १०१ बहिन सौभाग्य में हो भर्त्ता सहित अनाथ हो तो उन दोनों का पालन करै सर्प्प अग्नि दुष्ट राजा दामाद भानजा १०२ रोग शत्रु उपचार से इनको छोटा समझ के अनादर न करै क्रूरता तीक्ष्णता दुस्स्वभाव स्वामित्व पुत्रिका के भयसे क्रम पूर्ब्बक पहिले कहेहुये चीजोंको अनादर नकरै १०३ बंशकी वृद्धि केलिये अपने पितरों कोपिण्डदे और ऋण रोग शत्रुकी बाकी न रक्खै १०४ याचकआदि से प्रार्थित होकर तेज उत्तर न दे और समर्त्थहो तो उसकार्य्य को करै अथवा करादे १०५ दाता धार्म्मिक शूद्र का सदा नाम होता है यत्न पूर्ब्बक उसके कीर्त्तन को करै उसके छिद्र कोन देखै १०६ काल में हित और मिताहार अथवा

द्विज वायज्ञशेषका विहारी अदीनात्मा सुनिद्र शुचि सदा मनुष्य सुखी रहता है १०७ विहार आहार निरहार को एकान्तमें करै सदा परिश्रमी हो सुख कसरत को करै १०८ अन्न की कभी निन्दा न करै जो कुछ उपस्थित हो भोजनकरै आहार को षट्रस से भी मधुर और श्रेष्ठजानै १०९ अपनी स्त्री से बिहार करै वेश्या के साथ बिहार न करै कुस्ती के जाननेवालों के साथ नम्रता पूर्व्वक कसरत सीखना उत्तम है ११० रात्रि का पहिला और चौथा प्रहर छोड़के शयन उत्तमहै और दीन अन्ध पंगुल बधिर को कभी न हंसै १११ कभी अकार्य्यमें बुद्धि न करै और उद्योग बल बुद्धि धीरता साहससे अपने कार्य्य को साधै ११२ पराक्रम कोमलता से मानको छोड़ के साधक अनिष्ट न कहै और किसी काम में किसी के छिद्र को न देखै ११३ बड़ों और राजा की आज्ञाका भङ्गकभी न करै और असत्कार्य्यके सिखलानेवाले गुरू का भी प्रबोध करै ११४ सत्कार्य बोधक छोटाभी हो तो उसका अनादर न करै और तरुण स्त्री को स्वतंत्र करके कहीं न जाय ११५ तरुण स्त्रियां अनर्त्थका मूल हैं मद द्रव्यसे मदान्ध न हो और कुसन्तति में मोहन करै ११६ साध्वीभार्य्या पितृ पत्नी माता बाल पिता स्नुषा बिधवा पुत्र रहित साध्वी कन्या बहिन ११७ मामी भाईकी स्त्री पिता माताकी बहिन अपुत्र नाना गुरु श्वसुर मामा ११८ बाल पिता कन्या पुत्र भाई भगिनीसुत ये अपनी शक्तिके सदृश अवश्य पालनीय हैं ११९ दरिद्रहो या धनी पितृ मातृ कुल सुहृत् पत्नीका कुल दास दासी भृत्यबर्ग्गका पोषण करै १२० बिकलाङ्ग सन्यासी दीन अनाथका पालन करै और जो मनुष्य कुटुम्ब के पोषणमें यत्नवान् न हो १२१ उसके सब गुणों से क्या है और वह जीते मृतक है जिसने कुटुम्ब का पोषण और शत्रुओं को पराजित नहीं किया १२२ जो अप-

ने पास प्राप्त हो उसको रक्षा न करै उसके जीवित से क्या है स्त्रीजित नित्य ऋणी सुदरिद्री याचक १२३ गुण हीन अरिके अधीन इतने मनुष्य जीते मृतकहैं आयु वित्त गृह छिद्र मंत्र मैथुन औषध १२४ दान मान अपमान इन नव बातोंको गुप्त रक्खै देशाटन राजसभाप्रवेश शास्त्र चिन्तन १२५ वेश्यादर्शन पण्डित मित्रता निरालस्य हो इनको करै अनेक धर्म्म और पदार्त्थ पशु नर १२६ देशाटनसे पर्व्वत और देश रीति जानी जाती है राज पुरुष कैसेहैं न्याय और अन्याय कैसाहै १२७ झूंठ बोलने वाले कौनहैं और कौन सत्यवादी हैं और शास्त्र और लोकसे व्यवहार की प्रवृत्ति कैसीहै १२८ और सभाके गमन करने वाले और सभा का ज्ञान होताहै और शास्त्र तत्व विवेचन से अहङ्कारी और धर्म्मान्ध नहीं होता १२९ एक शास्त्रका पढ़ने वाला कार्य निर्णय को नहीं जानता इस्से वह्वागम सन्दर्शी हो इस्से व्यवहार बड़ाहै १३० बुद्धिमान् मनुष्य बहुत शास्त्रोंको निरालस्य हो चिन्तन करै उसके अर्त्थको ग्रहण करके उसके आधीन न हो १३१ जिस तरह वेश्या सब मनुष्यों को सदा वशमें रखती है और आप किसीके वश नहीं होती उसीतरह जगत्को स्वाधीन करै १३२ श्रुति स्मृति पुराण के अर्त्थका विज्ञान पण्डितों के साथ जो होता है उसीसे पण्डा वुद्धि उत्पन्न होतीहै १३३ देवता पितर अतिथि को बिना अन्न दिये कभी न भोजन करै अज्ञान से जो अपने अर्त्थ भोजन बनाताहै वह नरकार्त्थ होताहै १३४ गुरू बली व्याधित मृतक राजा श्रेष्ठ व्रती सवारी वाला इनके लिये मार्ग्ग को छोड़दे १३५ गाड़ीसे पांच हाथ घोड़ेसे दश हाथ हाथी और बैल से सौ हाथ दूर जाय १३६ सींग नख दांत वाले और दुर्ज्जन मनुष्य नदी और स्त्री का बिश्वास कभी न करै १३७ कुछ खाता हुआ राह न चलै और हंसता हुआ कुछ भाषण न करै

और नष्टका शोक और अपने किये हुये काम की बड़ाई न करै १३८ शङ्का वालेका समीप और नीच सेवा न करै और एकान्त में किसीका गुप्त कथन न सुनै १३९ बिना अच्छों की आज्ञाके उनके साथ कार्य्य करनेकी इच्छा न करै क्योंकि देवताओंके साथ अमृत पानसे राहुका शिर काटा गया १४० महात्मा का अकार्य्य काम भी भूषणके लिये होताहै क्योंकि विष शिवका पान और अन्यको मृत्यु कारक है १४१ तेजस्वी मनुष्य सब पचा सक्ताहै जैसे अग्नि और गुरु राजा श्रेष्ठ के सम्मुख कभी न टिकै १४२ राजाको मित्र जानके मन माना काम करने की इच्छा न करै और मूर्खकी स्वामित्व न चाहै और महात्मा की दासता की इच्छा करै १४३ थोड़े ज्ञानियों से बल्कि उन के साथ प्रीति करै आवश्यक और गैर आवश्यक कामको यथाक्रमसे करै १४४ प्राप्त कार्य्यको पूर्ब्ब पर देखके करै पिताकी आज्ञासे मातृ बध में आज्ञा सुपूजिता होती है १४५ गौतम ऋषि के पुत्रने अकार्य्य में देरी की थी प्रेम समीप बास स्तुति नति सेवा १४६ चतुरता कलाकथा ज्ञान आदर कोमलता शूरता दान बिद्या १४७ किसीके आनेपै उठके खड़ाहोना जानेपर कुछ दूरजाना आनन्द सहित स्मित भाषण उपकार स्वाशयसे सदा जगतको बश करै १४८ ये बश्य करने के उपाय दुर्ज्जनों में निष्फल होतेहैं और समर्त्थ तो दुर्ज्जनों को दण्ड से जीतै १४९ छल भूत तद्रूप इन उपायों से श्रुति स्मृति पुराणों का अभ्यास सदा हितहै १५० सकल अङ्ग उपवेद शिकार जुआ स्त्री पान यह मनुष्योंके व्यसन हैं १५१ इन चारों का त्याग करके कभी २ युक्ति पूर्ब्बक कहीं युक्त करै और कपट से व्यवहार और वृत्तिलोप न करै १५२ किसीका अहित कभी मनसे भी न बिचारै वह कार्य्यकरै जिससे तीनों काल में दृढ़ सुख हो १५३ मरने पै स्वर्ग्ग को जाता और

जीवते हुयेदृढ़ शुभ कीर्त्तिको पाता है जो आधि व्याधि प्रपीड़ित सचिन्त हो जागता है १५४ जार चोर बलि द्वेषी विषयी धन लुब्ध कुसहायी कुनृपति और भिन्न हैं अमात्य सुहृद प्रजा जिसके १५५ इनको देखके कार्य्य करै जिस्से सुख पूर्ब्बक मनुष्य सोवैं और राजा और अन्य किसी श्रेष्ठ का काम देख के न करै १५६ सर्प्प व्याघ्र चोरके मारनेके लिये अकेला न जाय मारते हुये आततायी श्रेष्ठको भी मारै १५७ झगड़ालूकी सहायता न करै बहु नायक की रक्षा करै गुरु और राजाके सम्मुख उच्चासन पै न बैठै १५८ प्रौढ़ पाद हेतुओंसे विकारको न प्राप्त करै कर्त्तव्यको कोई न जानै होजानेपै सब जानैं १५९कहै नहीं और कार्य्यको करै वह उत्तम नरहै और स्त्रीकरके कहे हुये काम को अनुभव बिना न करै १६०माता पतोहू भाईकी स्त्री सपत्नी इनको बारह बर्षके ऊपर और पुत्रको सोलह बर्षके ऊपर ताड़न न करै १६१ इनको दुष्ट बचन से ताड़न करै और बहू आदिको ताड़न न करै पोता भानजा भाई ये पुत्रसे अधिक हैं १६२ भाई की स्त्री पतोहू बहिन ये कन्यासे अधिक हैं आगम और रक्षाके लिये सदा यत्नकरै १६३ मालिक कुटुम्ब का पोषण करता उस से अन्य सब चोर की तरह हैं क्योंकि झूठ बोलना साहस मूर्खता और स्त्रियां कामाधिक होतीहैं १६४ काम बिना एकशय्या पै स्त्रीके साथ न सोवै और धन कुल शील रूप बलबिद्या अवस्था देखके १६५ जो इनसबसे उत्तमहो तो अपनी मैत्रीसे कन्या दे और बहुधा भार्य्यार्थी वय बिद्या रूपवाले निर्द्धन भी होते हैं १६६ केवल रूप या अवस्था अथवा धन देखके कन्या न दे प्रथम कुलकी परीक्षा करै तत्पश्चात् विद्या और वयको देखै १६७ शील धन अवस्था रूप देशको देखके पीछेसे कन्यादान करै कन्या रूप को चाहती माता धन को पिता विद्या को चाहता है १६८

बान्धव कुल की इच्छा करते और इतर मनुष्य मीठे भोजन की इच्छा करतेहैं जिसका कुल और गोत्र समान न हो ऐसी कन्या को भार्य्या बनावै १६९ और वह कन्या भाई करके युक्तहो और योनि दोषसे वर्ज्जित हो और प्रतिक्षण विद्या और धनकी चिन्तना करै १७० क्षण मात्र भी विद्या धनार्त्थी पुरुष सुन्दर स्त्री पुत्र मित्रके विद्या धनका इकट्ठा करना न छोड़ै १७१ और दान बिना जन धनसे क्याहैं और आगेकी रक्षाके योग्य धन की यत्नसे रक्षा करै १७२ शत बर्ष जीवेंगे धन कुछ न देंगे इस बुद्धि से धन विद्या आदि को सदा इकट्ठा करै १७३ पच्चीस बर्ष या साढ़े बारह अथवा छः बर्ष विद्या धन श्रेष्ठ है अन्य सम्पूर्ण धन विद्या मूलहैं १७४ दानसे विद्या धनकी वृद्धि होतीहै और विद्या धनसे कुछ भार नहींहोता और अन्य धन जबतक रहताहै तबतक सब सेवा करते हैं १७५ इसीसे निधन मनुष्य स्त्री पुत्र आदि से त्याग किया जाताहैसंसारी व्यवहारके लियेकेवल सार भूत धनहै १७६ मनुष्य इसी से धनकी प्राप्ति के सुन्दर उपाय और साहस सुविद्या सेवा शूरता कृषी करके यत्न करै १७७ ब्याज की वृद्धि रोजगार कला और दान लेना इनसबसे या जिस किसी उपायसे धनवान्हो वैसाकरै १७८ धनीके दरवाजे पर गुणी लोग सेवक की तरह रहते हैं कहीं दोष गुण होते हैं कहीं गुण दोष होते हैं १७९ धनवान् और निर्द्धन सब दरिद्र की निन्दा करतेहैं जैसे यह कोई नहीं जानता कि कितना धन कहांधराहै १८० आप स्त्री पुत्र जो कुछले लिखदे व्यवहार करने वालोंके लिये लेखसे अन्य नहींहै १८१ निर्ल्लोभ धनिक राजा विश्वासी क्षमी इन में भी लेख बिना व्यवहार न करै १८२ अच्छी तरह सञ्चित धनको लेके लिखके धरै और मित्रता के लिये उस धन को बिना व्याजदे १८३ धरे धनमें से बहुत व्याज के लोभ से न दे

नहीं तो हानि होती है अधमर्ण वृद्धि से दे व्यवहार के योग्य सदादे १८४ और नया सम्बन्ध अर्थात् मेलहोतो गवाह करके रुपया दे गृहीत लिखित योग्यमान रुपयेकी आमदमें सुखदेता है १८५ वृद्धि के लोभसे धन दे नहींतो मूल धनभी नष्ट होता है आहार और व्यवहार में त्यक्त लज्जा सुखी होता है १८६ धन देनेमें मित्रता होतीहै और लेनेमें शत्रुता होतीहै मन में उदारता करके कृपणता को दूर करके धनदे १८७ मनुष्य समयपै उचित खर्च को अधिक न करै सुभार्य्या पुत्रमित्रकी शक्ति पूर्व्वक रक्षा करै १८८ और सब पुनः होताहै आत्मा पुनः नहीं होता इस कारण इसकी रक्षा करनी चाहिये क्योंकि जीता रहैगा तो सैकरों शुभ काम देखैगा १८९ भलाई का चाहने वाला पिता बिवाहित समर्त्थ पुत्रों को धन बांटदे सस्त्रीक भाई समर्त्थ होने पै खुद बांट लेतेहैं १९० सहोदर भाई भी बिनाश के लिये होते हैं अर्थात् पृथक् रहते हैं मनुष्य की दो स्त्रियां एकत्र नहीं रहतीं १९१ जब दो मनुष्य एक जगह नहीं रह सक्ते तो बहुत पशु रूप मनुष्य एक जगह कैसे रह सक्ते हैं वृद्धिका कारण जो धन है उसको उनके पुत्र विभाग न करैं १९२ अधर्म्म से स्थापित और जिसको बेबिआज दियाहै जिस्की उत्तम मैत्री चाहै तो ऐसे धन के पाने की इच्छा न करै १९३ जिससे बड़ी प्रीति रखना चाहै उसके पीछे उसके घरमें न जाय और स्त्रीसे वार्त्तालाप न करै और उसके अन्यथा बिवाद न करै १९४ मित्र के कार्य्य में असहाय न करै और बुराई न देखै ब्याजू या बे ब्याजू धन या औत्तमर्णिक १९५ दे तो पानेकी इच्छा न करै नहीं तो दोनोंको क्लेश होताहै और तमस्सुक की पीठपै उसकी गवाही न लिखावै १९६ अपने और पिता माता के गुणसे ख्यात हो तो वह उत्तम मनुष्य है अपने और पिता माताके गुणसे पृथक्पृथक् १९७ उत्तम मध्यम

नीच अधम मनुष्य होते हैं और कन्या स्त्री बहिन की भाग्य से भाग्यवान् हो वह अधमाधम है १६८ और बड़ा धनवान् होके पोष्य वर्ग्ग का पोषण करै बिना कुछदिये दिनको नबितावै १६६ मैं मृत्यु के मुख में स्थित हूं और क्षण भर की भी आयु नहीं है ऐसा मान के इच्छा पूर्व्वक दान धर्म्म करै २०० बिना दान धर्म्मके परलोक में हमारा कोई सहाय न होगा दान शीलाश्रय लोक शठाश्रय नहीं है २०१ दान से शत्रु भी मित्र होजाते औरों की क्या गिन्ती है देवता यज्ञ ब्राह्मण गऊ के अर्त्थ २०२ जो दिया जाताहै वह पारलोक्य और संव्वित् दान कहाता है और बन्दी मागध मल्ल नट आदि को जो दिया जाताहै २०३ वह पारितोष्य और यश के अर्त्थ है और श्रीदान कहाता है और सुहृद सम्बन्धीको दिया जाताहै २०४ अथवा बिवाह में आचार अर्त्थात् व्यवहारमें जोदियाजाताहै वहीदत्त कहाताहै और कार्य्य के लिये कामके बिगाड़ने वाले २०५ अथवा पाप के भयसे जो राजाको दे वहभी दत्त कहाता है और जो हिंस्र वृद्धि के लिये देनष्टहोजाय याजुआमेंजातारहै २०६ चोरसेलियाजाय और पर स्त्री सङ्गमार्त्थक यह पापदहै और जिस देवता की आराधना करै उसको सबसे बड़ा कहै २०७ उसकी न्यूनता कभी न करै प्रीतिसे उसकी सेवा करै बिना देने और कोमलता के बशीकरण संसार में नहीं होता २०८ दान क्षीण बढ़ने वाला चन्द्रमा टेढ़ेभी होते इसीसे शुभहैं स्नेह और द्वेष बिचारके कार्य्य करै करिकै और न करै २०६ न अपकार करै न उपकार करै क्योंकि ये अनर्त्थकारी होतेहैं अति क्रूरता और शठताको न धारण करै और बहुत कोमल न हो २१० अतिवाद कार्य्यमें बहुत आशक्त हठ इनको न करै सम्पूर्ण अति नाशकारण इस्से अतिका त्यागकरै २११ क्रूरता से जनोंको उद्वेग हो और कृपणता से बड़ी निन्दा होतीहै बहुत

कोमलता से कोई गिन्तानहीं और बहुत वाद से अपमान होता है २१२ अति दानसे दरिद्र होता और लोभ से अनादर होता और बहुत हठ से मनुष्य की मूर्खता होतीहै २१३ अनाचार से धर्म्म हानिहोती और बहुत आचार मूर्खताहै सबसे हम अधिक हैं और सबसे हम अधिक ज्ञानवान् २१४ और धर्म्म तत्त्ववेत्ता हमीहैं बुद्धिमान् ऐसा न मानैं देवता गऊ ब्राह्मणों में मालिक न हो २१५ ऐसी मलिकई महानर्त्थ कारी और समग्र कुल नाशन है इनका सदा क्रमसे भजन पूजन सेवा करै २१६ यह नहीं जानाजाता कि किसमें कितना ब्रह्म तेजहै और स्त्री धन पुस्तक को पराधीन न करै २१७ भाग्य है तो भ्रष्टनष्ट विमर्दित बस्तु मिलजातीहै बड़ेकामको छोटेकामके लिये न छोड़ै और छोटेकाम को न करै२१८ बुद्धिमान् मनुष्य अभिमानसे बहुत द्रव्यकाखर्चन करै और बहुत धनके खर्चके डरसे सत्कीर्त्तिका त्याग नकरै२१९ बीरों के क्रूर बचन से क्रोध नकरै जिस सुहृद वर्ग्गसे लाज न करै उससे भेद दुर्म्मना न होय २२० और हसौआ में भी भेदकीबात मित्र से न करै आजन्म दान मानसे उसको प्रसन्नरक्खै २२१ कटु बचन से मित्रभी शत्रुता को प्राप्त होताहै क्योंकि टेढ़ेबचन रूप बाणके निकालने को मन समर्त्थ नहींहै २२२ जब तक शत्रु अपने बलसे अधिक हो तब तक उसको स्कन्ध से ले चलै और नष्ट बल देख पत्थर के ऊपर घटकी तरह भेदन करै २२३ जिस तरह सौजन्य भूषणहै उस तरह आभूषण राज्य पौरुष बिद्या धन नहीं भूषित करते २२४ अश्वमें वेग बैल में धीरता मणिमें कान्ति राजा में क्षमा वेश्यामें हावभाव गायकमें मधुर स्वर२२५ धनिक में दान और सैनिक में शूरता गऊ का दम तपस्वियों और पण्डितोंकी वावदूकता अर्थात् बचन विशेषता २२६ सभा वालोंमें अपक्षपात गवाहों में सत्य बचन सेवक में अनन्य भक्ति

मन्त्रियों का हित कहना २२७ मूर्खमें मौनता और स्त्रीमें पातिव्रत्य भूषणहै इनको छोड़के और दुर्भूषणहैं २२८ एक नायक अर्थात् स्वामी उत्तम होताहै बिन मालिक और बहुत मालिक नहींअच्छे होते हिंसा करने वालेको छोड़ेनहीं समर्थ होतो उसी क्षण मारै २२९ चुगली चण्डता चोरी मत्सर अति लोभ असत्य कामका बिगाड़ना आलस्य २३० ये गुणियों के दोषके लियेहैं गुणोंको ढक के रहते हैं माता स्त्री पुत्र धन इनका बिनाश २३१ बाल्य मध्य वृद्धता में क्रमसे महा पाप फल होताहै अर्थात् लड़क पनमें माता जवानीमें स्त्री पुत्र और धनका नाश दुखदायी होताहै लक्ष्मीवान् अनपुत्र और अधन मूर्ख २३२ स्त्री का नपुंसक पति मित्र का जाना ये सुख के लिये नहीं हैं मूर्ख पुत्र बिधवा कन्या क्रोधवती स्त्री दरिद्रता २३३ नीच सेवा नित्य फिरना इनसे सुख नहीं होता न पढ़ने पढ़ाने और देवता गुरु द्विज २३४ न कलामें न सङ्गीतमें न सेवामें न कोमलता में न स्त्रीमें न शूरता में न तपस्या में न काव्यमें मन लगताहै २३५ जिसका चित्तमुक्तहो अथवा खल ये नर रूप पशुहैं एकतो किसीके उदय को नहीं देखसक्ता और बिनिन्दक छिद्र को देखताहै २३६ द्रोह शील मलिनचित्त प्रसन्न मुख ऐसा खल होताहै एकसे वह परिपूर्ण नहींहोता ब्रह्माण्ड के धनकी चाहना करताहै २३७ त्यागा हुआ आशाबद्ध थोड़ेसे भी परिपूर्ण होताहै और आशावान लोभी अकार्य्य करता और अन्योंसे कहता और प्रसन्न होता २३८ धूर्त्तलोग अन्यके उपदेश के लिये सदा साधु सम रहते हैं और अपने कार्य्य के लिये सौ अकाज करतेहैं २३९ पिताकी आज्ञाका पालनकरै और सेवन में निरालस हो छाया की तरह सदारहै और प्राप्तिके अर्थ सदा यत्नकरै २४० सब बिद्यामें चतुर ऐसा पुत्र पिताको प्रीति कारक होताहै और विपरीत दुष्ट गुणवाला धननाशक दुःखदायी

होताहै २४१ जो स्त्री पति में अनुरक्त और गृहकार्य्य में निपुण पुत्र उत्पन्न करनेवाली सुशीला ऐसी स्त्री पतिको प्रिय होतीहै २४२ पुत्रके अपराधको सहै और पुत्रका पोषणकरै ऐसी माता प्रीतिदा होतीहै और पुंश्चली होतो दुःख देनेवाली होतीहै २४३ पुत्रकी विद्या और वृत्तिके लिये यत्नकरै और उत्तम शिक्षा और प्रीतिका करनेवाला पिता अनृणी होताहै २४४ जो सदा सहायता करै उसके खिलाफ कभी न कहै सत्य और हितकहै और चलै और देनेपै ग्रहण करै वह मित्रहै २४५ नीचकी अति परिचय और अन्यगृहमें सदा गमन जातिके समूहमें विरोध और दरिद्रता ये हानि कारकहैं २४६ व्याघ्र अग्नि सर्प्प और अन्य मारने वालों का सङ्ग अच्छा नहीं होता और राजा सेवा से भी किसी का मित्र नहीं होता २४७ इष्ट मित्रों की अप्रसन्नता और शत्रुकी प्रबलता और पण्डित में दरिद्रता दरिद्रता में बहुत पुत्रादिका होना २४८ धनी गुणी बैद्य नृप जल इनसे रहित स्थानोंमें सदास्थिति और एकभी कन्या और पितासे भी मांगना यह दुःखदहैं २४९ स्वरूप धनवान् पण्डित बलवान् भी स्वामी हो और यथेष्ट स्त्री को न चाहता हो तो स्त्री को सुख नहीं होता २५० जो यथेष्ट चाहना करता है स्त्री उसके वश रहती है जिस तरह ग्रहण और प्यारसे बालक बश रहता है २५१ उस के सायक के द्वारा जो खर्च किया जाय वह सहीहै ज्ञानीमनुष्य विचारके द्वारा खर्च करै अन्यथाकुछ लाभ नहींहोता २५२ बुद्धिमानमनुष्य जिस कार्य्यमें अधिक खर्चहो न करै छोटाभी कार्य्यहो और उसमें अधिकलाभ हो उसको करै २५३ और व्यापार की बस्तु का मोल और परिमाणको सदा यथार्थ ढूंढ़ा करै और तपस्त्री कृषी की सेवा उपभोगसे प्राप्त होतीहै २५४ कार्य्यमें हित मनुष्य को अपने स्थानमें नियुक्तकरै चोर और जार सदा अकेला

रहना और मधुर चीजोंको खाना चाहता है २५५ बलीसे द्वेष करने वाला वेश्या धनी की मित्रता खराब राजा कुल को और कुत्सित भृत्य स्वामी की द्रव्य की चाहना करता है २५६ ज्ञानवान् तत्त्व अर्थात् सिद्धान्तकी और देव जीवक अर्थात् देवता से जीनेवाला दम्भ तप अग्निकी चाहना करता है योगी एकान्तकी कुलटा अर्थात् दुष्ट स्त्री दूसरे पतिकी और रोगी वैद्य की चाहना करता है २५७ रोजगारी महंगी की चाहना करता याचक दानी को और डरा हुआ सहायको ढूंढ़ता और दुर्ज्जन छिद्र को ढूंढ़ता है २५८ मूर्ख मनुष्य नाहक तेज होता कुछ बकता सोता नशा खाता निष्फल कर्म्म करता और अपने इष्ट का नाश करता है २५९ तमोगुणाधिक क्षत्री सत्त्वगुणाधिक ब्राह्मण अन्य सब रजोगुणाधिक होते तिनमें सत्त्वगुणाधिक ब्राह्मण श्रेष्ठ है २६० अपने कर्म्म से ब्राह्मण सबसे अधिक है उसके तेजसे क्षत्रियादि में तेजहै २६१ अपने धर्म्ममें टिके हुये ब्राह्मण को अन्यवर्ण डरते हैं इससे और तरह पर क्षत्रिय आदि धर्म्म का आचरण न करैं २६२ और जिस वृत्ति करके अपने धर्म्मकी हानि न हो वह वृत्ति उत्तम है और जिस देशमें कुटुम्बका पोषण हो वहदेश धन्यहै २६३ उत्तम वृत्ति और नदीके निकटकी खेती माता के तुल्यहै वैश्य वृत्ति मध्यम है और शूद्र वृत्ति अधम है २६४ याचना अधमतर वृत्ति है परन्तु वह तपस्वियों में श्रेष्ठ है कहीं धर्म्मशील राजाकी सेवा वृत्ति भी उत्तम है २६५ जोयज्ञ कराके मजदूरी लेता है वह क्या महाधन के लिये है केवल एक तरहका रोजगारहै २६६ बहुतधन राजा की सेवा बिना नहीं मिलता राजसेवा बहुत कठिनहै बुद्धिमान् बिना वह नहीं हो सक्ती २६७ कदाचित् और कोई राजसेवा करै भी तो तरवारकी धार चाटनेके सदृश रहती है सर्प्प पकड़नेवाला अपने मंत्रके प्र-

भावसे जैसे सर्प्पको बश्य रखता है उसी तरह मन्त्री अपने मंत्र अर्थात् सलाह के बलसे अपने बश्य रखता है २६८ राजाको अधीनभी करले तोभी बुद्धिमान्को राजासे बड़ाभय रहता है बुद्धिमान् में ब्रह्मतेज रहता और क्षत्रिय का तेज राजामें रहता है २६९ बुद्धिमान् मनुष्य दूर भी रहै राजाके निकटही मालूम हो बुद्धिरूपी पाशसे बांधके ताड़न करै और खैंचै २७० राजाके समीप रहै और दूर मालूम हो औ अप्रत्यक्ष सहायवान् हो अनुबाक्हता बुद्धि व्यवहार के योग्य नहीं होती २७१ अव्यवस्थित चित्तवाले की बुद्धि सर्ब्बत्र नहीं पहुंचती और पहिले दरिद्र पीछे धनी यह श्रेष्ठहै २७२ पहिले पैर से चलना उसके पीछे सवारी का मिल जाना उत्तम है जो सुखके लिये हैं उस्से विपरीत दुःखद हैं २७३ लड़के के होके मर जानेसे न होना उत्तम है और दुष्ट सवारी से पैरका चलना उत्तम विरोधसे चुप रहना अच्छा होताहै २७४ देशाच्छादन से चर्म्म करके पैर लपेटना अच्छाहै और किञ्चित् ज्ञान से अज्ञता उत्तम होतीहै २७५ पराये घर में रहने से जङ्गलबास उत्तम है और दुष्ट भार्य्या अर्थात् स्त्रीके साथ गृहस्थी करने से भिक्षा मांगना या मरना श्रेष्ठ है २७६ कुत्ते का मैथुन ऋण गर्भाधान स्वामित्व खलकीमित्रता अपथ्य इनके करने में पहिले सुख होता पीछे दुःख होताहै २७७ खराब मंत्री से राजा रोगी रहता और खराब बैद्य और कुत्सित राजा करके प्रजा रोगिणी रहती खराब पुत्रसे कुल रोगी रहता और कुबुद्धि करके अपना शरीर दिन रात हीन होताहै २७८ जिस तरह हस्ती घोड़ा बैल बालक स्त्री इनके सिखलाने वाले होते हैं उसी तरह जो साथसे गुण धारण करतेहैं वे होतेहैं २७९ अवसर पाके बचन कहै तो जय होताहै और सुन्दर बस्त्रसे जाहिर होताहै सभा में बिद्यासे मान होता और ये तीनों पूर्ब्बोक्त अधिकार पाने

से होते हैं २८० सुन्दर स्त्री अच्छा पुत्र सुन्दरि बिद्या उत्तमधन अच्छे मित्र सुन्दर दास दासी सुन्दर गृह उत्तम राजा २८१ ये दश सदा गृहस्थोंके सुखके लियेहैं और प्रकार ऐसा सुख नहीं होता और वृद्धा सुशीला विश्वासिता सदाचार में निपुण स्त्री पुरुष को २८२ अथवा खोजे को भीतर मकान में रक्खै जवान मिलभी हो उस को न रक्खै और कालका नियम करके कार्य्य अन्यथा कभी न करै २८३ गऊ आदिको अपनी तरह जानै और अर्त्थ धर्म्ममें नियुक्त करै और भोजनके बनवानेमें माताको नियुक्त करै और गुरूको शिक्षा करनेमें २८४ मनुष्य सदा अनियम से अन्तःपुर में जाय अच्छी सवारी और बिना पुत्र की स्त्री भार बाहक सुरक्षक २८५ पर दुःखहरा बिद्या और निरालस सेवक ये छः बिदेशमें सुखदायक होते हैं २८६ समर्त्थभी रास्ता रोक के न ठहरै और राजा भी हो तो उत्तम सवारी पै चढ़के बाजारके रास्तेमें न निकलै २८७ और राजा रास्ते में भी जाय तो बिना सहाय न जाय रास्तेमें जहां से मार्ग्ग और जल निकट हो ऐसे दो गावंके बीच में डेरा करै २८८ ऐसे स्थान में निवास करै मार्ग्गमें जल में न उतरै बहुत चलना न खाना बहुत मैथुन अर्त्थात् भोग २८९ बहुत कसरत करना यह सबको बुढ़ापेका सबब होता सम्पूर्ण बिद्या और कलामें अनभ्यास यह भी बुढ़ापेका सबब होता है २९० दुर्ग्गुणको गुणी करके कीर्तन करै वह प्रिय होताहै जो अधिक गुणको कहताहै वह क्या मित्र न होता होताही है २९१ अगर जो सत्य दुर्ग्गुण को कहै वह अप्रिय होताहै औरजो गुणको दुष्टगुण करके कहताहै वह कैसे प्रिय होसक्ता है २९२ स्तुतिसे देवता बश्य होजाता है मनुष्य की क्या गिन्ती है इसीसे प्रत्यक्ष दुर्ग्गुण कहनेको कोई समर्त्थ नहीं २९३ इसी से बुद्धिमान् को उचितहै कि अपने दुर्ग्गुणोंको

लोक और शास्त्रसे बिचार करै और जो अपने दुर्ग्गुणोंको सुनके प्रसन्न होता और क्रोधनहीं करता है २९४ वह अपने उपहास में यत्न करता है और सुनते हुये त्याग नहीं करता उचित है कि अपने गुणके श्रवणसे सम रहै अधिक प्रसन्न न होजावै २९५ दुर्ग्गुणोंकी मैं खानिहूं गुण मुझमें कैसे आवैं और हमीमें सम्पूर्ण अज्ञानता भी टिकीहै ऐसा जो अपने को मानता है वह सबसे अधिकहै २९६ वही साधुहै उसीके कला लेशको देवताप्राप्त होते साधु मनुष्यमें थोड़ा भी उपकार किया हुआ बहुत होताहै २९७ और खल मनुष्य बड़े उपकार को सरसों के तुल्य जानता है ऐसा खेल किसीके साथ न खेलै जिससे लड़ाईहो २९८ हास्य में भी ऐसा न कहै कि तेरी स्त्री छिनालहै और मित्र भावसे भी किसीको खराब शब्द न कहै २९९ मित्रसे गुप्त बार्त्ता न छिपावै और ऐसी गोप्य बात भी न कहै कि वह शत्रु होके उसी बातको कहै ३०० किसीकी दुष्टताको जानता भी हो उसको न दिखावै उसके दूर करने की यत्न करै और गुप्त उसकी दवा करै ३०१ और बलवान्के विपरीत यथार्थ भी न कहै और देखे को बिना देखा और सुनेको अनसुना करै ३०२ अपनी विपत्तिके समयमें मनुष्य गूंगा अन्धा बधिर लंगड़ा होजाता है व्यवहार से हीन ऐसा मनुष्य और तरह दुःखपाताहै ३०३ वृद्धके सदृश सारांश बोलै बालकोंके सदृश बात चीत न करै और पराये घरजाके उसकी स्त्री का निरीक्षण न करै ३०४ बिना आज्ञा किये दरिद्रसे स्वामी कुछले और अपने लड़केकी शिक्षा करै और अपराधकिये हुये भी परायेके लड़केकी वैसी शिक्षा न करै ३०५ अधर्म्म रत राजनीति रहित अन्तःकरणमें छली लोभी अति दण्डदेनेवाला ऐसा मनुष्य ग्रामको छोड़के अलग बसै ३०६ दो वादियों का मत यथार्थ भी मालूम हो बिना किसीके पूछे कुछ अगर कहैतो

शत्रु होजाताहै ३०७ दूसरे का बिवाद लेकेझगड़ा न करै और बहुत मनुष्योंके साथ मिल के राजमंत्र की तर्कणा न करै ३०८ बिना शास्त्र जाने ज्योतिष धर्म्म निर्णय नीतिदण्ड वैद्यक प्रायश्चित्त क्रियाफलको न कहै ३०९ पराधीनतासे अधिक दुःख और स्वाधीनतासे अधिक सुख नहींहै किसीके बसा न हो स्वाधीन हो ऐसा गृहस्थ सुखीहै ३१० नवीन और पूर्ब्ब जन्म के व्यवहार को जानने वालोंकी बुद्धिका प्रति क्षण नया नया व्यवहार होताहै ३११इसीसे प्रत्यक्ष और अनुमानसे कहनेकेयोग्य नहीं है उसका ज्ञान उपमान अथवा बड़ों के उपदेश से होता है ३१२ नीति शास्त्रके योग्य जो राजामें विशेष करके चाहिये उसके सदृश राजा और देश के सामान्य व्यवहार को संक्षेप करके कहा ३१३ ॥

इति श्री शुक्रनीतौ तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥



॥ श्रीगणेशायनमः ॥

शुक्रनीति भाषा ॥

चौथा अध्याय ॥

इसके अनन्तर मिश्र अर्थात् मिलाहुआ प्रकरण संक्षेप से कहैंगे अब मित्र आदि का लक्षण संक्षेप से सुनों १ उपकार और अपकार में मित्र और शत्रु चार प्रकार के हैं करै करावै सलाह दे सहायता करै ये बातें शत्रु मित्र दोनों में होती हैं २ पराये के दुःख सुननेसे जिसका चित्त द्रवीभूत होजावै और बिनाकहे परायेके हितके लिये यत्नकर सत्कार करै ३ जीवस्त्री धन गुप्त बात की जो समय पर रक्षा करै वह उत्तम मित्रहै औ द्विपद त्रिपद एक पद मित्र होते हैं ४ एक बस्तुमें दो की बहुत चाहनाहो तो जिसके हितकी हानि होगी वह अवश्य शत्रुता करैगा ५ भाई के होते हुये दूसरा भाई कहै कि पिता का सम्पूर्ण धन मेराहै इसमें दूसरेका अखतियार नहीं दूसरा कहै मेराहै ६ एक कहै कि इसका भोग हमीं करैंगे दूसरा कौनहै ये दोनों आपसमें एकतर संज्ञक शत्रुहैं ७ बलनीति करके युक्त उठाने वाले शूरके सम्पूर्ण मित्र गुप्त बैर होतेहैं और राजा समयको देखताहै ८ इसमें आश्चर्य्य नहीं कि वे राज्यके लोभी न हों इसीसे न राजा के कोई मित्रहै और न राजा किसीका मित्रहै ९ बहुधा कृत्रिम मित्र परस्पर होते हैं और कोई स्वभावसे मित्र है और सदा शत्रु रहते हैं १० माता मातृ कुल पिता और उसके माता पिता पिता के चचा अपनी कन्या स्त्री और स्त्री के कुल वाले ११ पिता माता

अपनी बहिन कन्याकी सन्तान प्रजापाल गुरू ये सम्पूर्ण सहज मित्र हैं १२ विद्या शूरता दक्षता बल धीरता ये सब सहज मित्र हैं बुद्धिमान् इनके साथ बर्त्ताव करै १३ ऋण कर्त्ता पिता और व्यभिचारिणी माता और स्त्री ये स्वभावसे पति पुत्रकी मारने वाली दुष्टा चरण होती हैं १४ अपने पिताके भाई उस्की स्त्री और पुत्र शत्रु होते हैं और सास बहू सवति ननंद देवरानी ज्यठानी ये भी परस्पर शत्रु होती हैं १५ मूर्ख पुत्र कुवैद्य अरक्षक पिता ये शत्रु हैं क्रोधी राजा प्रजा शत्रु होता और न देने वाला धनी शत्रु होता है १६ चारों ओर चारों दिशा में सन्निकृष्ट जो राजा हैं जिनको धनकी गर्म्मी होतीहै वे क्रमसे हीन बल और शत्रु होते हैं १७ शत्रु उदासीन मित्र ये स्वाभाविक होते हैं शत्रु मित्र हो वह उदासीन है और शत्रु मित्र परस्पर होतेहैं १८ समीप वर्त्ती सेवक और प्रधान आदि अन्य सम्पूर्ण ये क्रमसे राजाके शत्रु होते हैं १९ थोड़े बल वाले मित्र को राजा बढ़ावै और अधिक बल वाले मित्र को कम कर दे भेद करै बटोर ले फिर इधर उधर करदे इस प्रकार शत्रुके साथ राजा वर्त्तावकरै २० साम दाम दण्ड विभेद इन उपायों अथवा उनके योग्य उपयोंसे अपने बशमें करै २१ जिसतरह उपाय से सर्प्प और हाथी बशमें किये जाते हैं और उपाय सेही भूमि के जीव स्वर्ग्ग को जाते हैं और उपाय से बज्र का भेदन होता है उसी तरह राजा उपाय से शत्रु को बशमें करै २२ मित्रसम्बन्धी स्त्री पुत्र प्रजा शत्रु इनमें अपनी युक्तिसे राजा अलग अलग साम दाम दण्ड भेद का बिचार करै २३ शील वय विद्या जाति व्यसन वृत्त समान हो और कोमलता के साथ इकट्ठा रहै तो मित्र होता है २४ तुम्हारे सदृश हमारे दूसरा नहीं है यह मित्र में साम है और हमारा सब तुम्हारा है यह मित्र में सजीवित दान है २५ अन्य मित्र के सुन्दर गुणका

कीर्त्तन मित्रमें भेदन है अगर तुम ऐसे हो तो हम ऐसी मित्रता नहीं करते यह मित्र में दण्ड है २६ जो हित नहीं चाहता अन्यके अनिष्ट की उपेक्षा करता है वह सुसान्यिक उदासीन शत्रु क्यों न हो २७ हम तुम आपस में एक दूसरे की बुराई न बिचारें एकदू-सरे की सहायता करता रहै यह शत्रु विषयक साम है २८ कर या कुछ गांव बर्ष भर में यथा योग्य शत्रु को देकरप्रसन्न करै वह दाम कहलाताहै २९ शत्रु साधककी हीनताके लिये प्रबलका आ-श्रय से अथवा उस्से हीन के उज्जीवन से शत्रु भेदन कहलाता है ३० चोरों के द्वारा शत्रु को पीड़ा दे धन और धान्य का हरलेना उसका कोई छिद्र देख के नीति पूर्ब्बक सेना लेकर डर दिखाना ३१ और युद्ध आन प्राप्त हो उसका करना त्रासन दण्ड क-हलाता है क्रिया के भेद से उपाय यथा योग्य से भेद न होजा-ते हैं ३२ नीति का जानने वाला राजा सम्पूर्ण उपायों के सा-थ ऐसा करै जिस्से मित्र उदासीन शत्रु अपनेसे अधिक न हो ३३ पहिले साम श्रेष्ठ है उसके पीछे दाम उत्तम और सदा शत्रु का भेद उत्तम है और प्राण के सन्देह में दण्ड दे ३४ प्रबल शत्रुमें साम दाम और अधिक में साम भेद सम में भेद और दण्ड और हीन में केवल दण्ड को करै ३५ मित्रमें साम दाम भेद और द-ण्ड को कभी न करै राजा अपनी जय के लिये प्रजा और शत्रु में भेद और पीड़नको करै ३६ शत्रुसे प्रपीड़ित जनोंकी रक्षा साम दाम से करै और गुणवान् दुष्टों का निकाल देना ही उत्तम है ३७ राजा अपनी प्रजा का पालन दण्ड और भेद से न करै सर्ब्बदा यत्न पूर्ब्बक साम दाम से प्रजा पालन करै ३८ दण्ड और भेद के साथ प्रजा पालन से राज्य नष्ट होजाता है जिस्से हीन अ-धिक प्रजा न हो ऐसे प्रजा पालन करै ३९ जिससे असत् आ-चार से निवृत्तिहो ऐसा दण्ड दमन से होताहै जिस्से जीव दबि

जाय वह उपाय दण्ड कहलाता है ४० राजा सब का स्वामी है इस्से प्रजाका डरदिखाना अपमान नाश कर देना बन्धन ये सब उपाय राजा के आधीन हैं ४१ ताड़न द्रव्यहरण पुरसे निकालना निशान देना मूड़ मुड़ाना गधे पर चढ़ाना अङ्गच्छेद बध ४२ युद्ध ये उपाय भी दण्ड के भेद हैं दण्डके भयसे प्रजा धर्म्म रत होतीहै ४३ दण्डसे कोई जबरदस्ती नहीं करता न कोई झूंठ बोलता क्रूर मृदु होता दुष्ट दुष्टताको छोड़ देताहै ४४ दण्ड से पशुभी भयको प्राप्त होता और शत्रु भागता चुगुल चुपरहता आततायी अर्थात् इच्छाचारी भयको प्राप्त होताहै ४५ अन्यसम्पूर्ण कर देने वाले होते और अन्य डर को प्राप्त होते इस कारण राजा धर्म्मकी रक्षामें दण्डको धारण करै ४६ गर्ब्बित कार्य्य अकार्य्यको न जानते कुमार्ग्ग गामी गुरू का भी राजा शासन न करै ४७ राजाओं की दण्ड नीतिसे सम्पूर्ण कार्य्य सिद्धि होतेहैं दण्ड धर्म्मका परम शरणहै ४८ श्रुति के मत से पशु की भांति दुष्ट हिंसा हिंसा नहींहै दण्ड देनेके योग्यको दण्डदे जो दण्डके योग्य न हो उसे दण्ड न दे ४९ अति दण्ड करनेसे उसको गुणी लोग त्याग करते हैं और वह पातकी होता है थोड़े दान से जो पुण्य होताहै वही दण्ड देने से फल होताहै ५० यह दण्ड मुनिवरों ने प्रवृत्ति और भय के लिये कहा है जो पुण्य अश्वमेधादि से होतावह क्या स्तोत्र पाठसेहोताहै ५१ क्षमासे जोपुण्य होता हैअपनी प्रजाके दण्ड देनेसे राजाका कल्याणकिस तरह होताहै ५२ उस दण्डसे राजाकी कीर्त्ति धनका नाश होताहै और राजा लोग सतयुग में धर्म्म करके परिपूर्ण होताहै इससे सत्ययुग में दण्ड नहींहै ५३ त्रेतायुग में प्रजा एक चरण अधर्म्म करतेहैं इस कारण पूर्ण दण्ड राजादे और द्वापर में अर्द्ध धर्म्म प्रजा होती इससे राजा तीन चरण अर्थात् तीन हिस्से दण्डदे ५४

राजाकी दुष्टता से प्रजा लोग निर्द्धन होतेहैं इससे कलियुग में अर्द्ध दण्डहै धर्म्म और अधर्म्मके सिखलाने से राजा धर्म्म प्रवर्त्तक है ५५ युग और प्रजाका कोई दोष नहीं अधर्म्म से केवल राजाको दोष होताहै जिससे राजा प्रसन्न हो वैसा मनुष्य करै ५६ लोभ या भयसे प्रजा राजा की शिक्षा मानै तो क्याहै पुण्यवान् जहां राजा होता है उस राज्यमें प्रजा धर्म्मिष्ठ होतीहै ५७ और जहां महापापी राजा होताहै वहां मनुष्य अधर्म्म पर होतेहैं वहां न समय पर जल बर्षता और न पृथ्वीमें फल होताहै ५८ महापापी राजाके होनेमें देश की हानि और शत्रु की वृद्धि और धनकी क्षय होतीहै मदिरा पीने वाला राजा अच्छा होता स्त्री लम्पट और क्रोधी राजा उत्तम नहीं होताहै ५९ क्रोधीराजा लोकको दुःख देताहै और स्त्री लम्पट वर्णका लोप करताहै और मदिरा पीने वाला राजा बुद्धि और व्यवहार से भ्रष्ट होता है ६० काम और क्रोध मद्य तम हैं और सब मदिरा से अधिक हैं और अति लोभी राजा प्रजाके धन प्राणको हरता है ६१ इस से इन तीनों को छोड़ के राजा दण्ड को धारण करै और भीतर कोमल और बाहर कठोर होके राजा अपनी प्रजाको दण्ड दे ६२ जो राजा बड़ा दण्ड देता है और स्वभाव से अपनी प्रजाका अहित चाहताहै वह राजा चुगुलों के द्वारा अपने राज्य को नष्ट करताहै ६३ इस कारण राजासे कोई कहै तोभी बिना विचारे काम न करै अपना और प्रजाका दोष देखने वाला राजा उत्तम होताहै ६४ राजा प्रथम अपना नियम करै तत्पश्चात् नौकरों का नियम कर प्रजा का कायिक,वाचिक,मानसिक,सांसर्ग्गिक ६५ यह चार तरह का अपराध दो प्रकारका है एक स्वबुद्धि कृत दूसरा बिना जाने किया फिर भी दो प्रकार का अपराधहै एक कराया दूसरा अनुमोदन करना ६६ स्वभाव से एक

बार या बहुत बार कियाहुआ चार प्रकारका है नेत्र मुख आदिके विकार आदि भावोंसे मानसिकहोताहै ६७ क्रिया करके कायिक होता है और कठोर शब्द से वाचिक होता है सांसर्गिक साथ से इसमें गुरु लघु देखले ६८ पैदा हुआ या पैदा होने वाले कार्य्यों का दण्डकरै प्रथम साहस करने वाला उत्तम भी दण्ड के योग्यहै ६९ न्याय करने वाले से पूछै कि तुम्हींने ऐसा अनादर कियाहै उपहास करै यथा योग्य कहै तो द्विगुण अथवा त्रिगुण दण्डदे ७० मध्यम साहस को करते हुये उत्तम भी दण्डके योग्य है प्रथम साहस में पहिले धिक्कार का दण्ड करै उसके पीछे ७१ यथोक्त यथा वृद्धि भली भांति दण्ड दे अनन्तर बड़े अपराध को करता वह उत्तमभी दण्ड योग्यहै ७२ प्रथम साहस होतो आदि में तत्पश्चात् मध्यम तत्पश्चात् यथोक्त द्विगुण दण्डदे तत्पश्चात् मार्ग्ग रोंकै ७३ मनुष्य के मारने बिना यह दण्ड कल्पना बुद्धि पूर्ब्ब है यह दण्ड उत्तम मध्यम नीच के भेद से तीन प्रकार का है ७४ गुण कुल धनकरके मुख्य हो और प्रथम साहस करै तो मध्यम दण्ड दे ७५ धिक् दण्ड अर्द्ध दण्ड पूर्णदण्ड इनको क्रमसे द्विगुण त्रिगुण करके दे तत्पश्चात् संरोध और नीच कर्म्म करै ७६ मध्यम साहस करता हुआ मध्यम जाति दण्ड के योग्य है जैसा कहा है द्विगुण या त्रिगुण अर्द्ध तत्पश्चात् बन्धन ७७ मध्यम साहस अर्थात् अपराध करते हुये मध्यम जाति दण्ड के योग्य है और पहिले अपराध कर चुका है तो यथोक्त द्विगुण दण्ड दे ७८ उत्तम साहस को करते हुये मध्यम जाति दण्ड के योग्य है और मध्यम अपराध आदि में हो तो यथोक्त दण्ड दे ७९ तत्पश्चात् द्विगुण या त्रिगुण तदनन्तर यावज्जीव बन्धन दे पहिला अपराध करता हुआ मध्यम जाति दण्ड के योग्य है ८० सड़क के संस्कार अर्थात् बनानेके लिये नित्य उसको क़ैद

रक्खै अधम जाति बड़े अपराध के करने से दण्डके योग्य होता है ८१ आदि में मध्यम अपराध हो तो यथोक्त द्विगुण दण्ड दे तत्पश्चात् यावज्जीव बन्धन करके नीच कर्म्म करावै ८२ जो मनुष्य धनके गर्ब्बसे अपराध करै तो राजा पहिले आधा वा सम्पूर्ण धनले जब तक जीवे तबतक बन्धन में रक्खै ८३ सहाय के गौरव विद्याके मद बलके घमण्ड से जो मनुष्य पाप करता है राजा उसको बंधवावै और ताड़ना दे ८४ स्त्री पुत्र बहिन शिष्य दास पतोह छोटा भाई ये अपराध करैं तो छोटी रस्सी अथवा छड़ी से दण्ड दे ८५ ऐसा दण्ड देह की पीठ में करै शिर में कभी न करै इससे अन्यथा मारने वाला चोर के तुल्य दण्ड के योग्य होता है ८६ राजा पापी को बांध के मास भर तीन मास छः महीना अथवा वर्ष दिन तक नीच कर्म्म करावै ८७ यावज्जीव बन्धन और बधके कोई योग्य नहीं है और मनुष्यों को न मारै यह श्रुति है ८८ इससे सर्ब्ब यत्न से पण्डित राजा बध दण्डका त्यागकरै रोकने बन्धन ताड़न से दण्ड दे ८९ राजा लोभसे प्रजा को धन दण्ड न दे और जो पिता आदि की सहायता से रहित हैं वे अपराधी भी हों तो दण्ड न दे ९० क्षमावान् राजा का दण्ड ऐसा होताहै प्रचण्ड धन हरने वाला राजा अपराधको नहीं सहता ९१ ऐसे राजा के रहने से लोक दुःखी और शत्रुओंके आधीन होजाता है इससे राजा सुभाग दण्डी क्षमावान् प्रीति करानेवाला हो ९२ मदिरा पीने वाला धूर्त्त चोर परस्त्री गामी मारने वाला वर्ण धर्म्म त्यागी नास्तिक शठ ९३ झूठा कलङ्क लगानेवाला चुगुल बड़े और देवता का दूषने वाला झूंठा कहने वाला न्यासहारी वृत्ति विनाशक ९४ और की वृद्धि न चाहने वाला घूस लेनेवाला अकार्य्य कर्त्ता सलाह और काम का तोड़ने वाला ९५ अनिष्ट वाक्य क्रोधी जल और बाग को बाधा करने वाला

केवल नक्षत्र बताने वाला राज द्रोही कुमन्त्री झूंठे कार्य्य करने वाला ९६ कुवैद्य अमङ्गल अपवित्र राह रोकने वाला खराब गवाही देनेवाला अपूर्ब्ब वेष धारी स्वामि द्रोही बहुत खर्चीला ९७ अग्नि देने वाला विष देनेवाला वेश्याशक्त दण्ड देनेवाला पाक्षिक सभ्य जोर से लिखवाने वाला ९८ अन्यायकारी कलही युद्ध में भगा गवाही का बिगाड़ने वाला पिता माता सती स्त्री मित्रसे द्रोह करने वाला ९९ पर द्वेषी शत्रु की सेवा करनेवाला मर्म्मका भेदक बञ्चक इष्ट मित्रों से द्रोह करने वाला गुप्त वृत्ति शूद्र ग्राम कण्टक १०० परिवार पोषण बिना तप और विद्या का चाहने वाला तृण काष्ठादि के इकट्ठा करने में समर्त्थ भी है भीख मांग खाता है १ कन्या का बेचने वाला परिवार की वृत्ति को छोटा करने वाला अधर्म्मी सूचक राजा का अनिष्ट चाहने वाला २ पुंश्चली पति पुत्र की स्त्री स्वतंत्र वृद्ध निंदित गृह कार्य्य को छोड़ने वाली दुष्टाचार प्यारी बहू जिस्की हो ३ इन सबको स्वभाव दुष्ट जानके राज्य से निकालदे अथवा द्वीप के किसी किले में बसावै ४ या कदन्न थोड़ा भोजन देके रास्ता रखवावै या तत्तज्जाति के लिये जो कर्म्म हैं करावै ५ ऐसे संसर्ग्ग दूषित दुष्टोंको राजा दण्डदेके सन्मार्ग्ग में लगावै ६ राजा और राज्य उसीतरह मन्त्री की शत्रु सम्बन्ध से बुराई की इच्छा करता है उस का राजा बध करै ७ समूह की दुष्टता से कभी किसी की बुराई न करै जिस तरह बत्स ढूंढ़ २ स्तन को पीता है उसी तरह एक एक को राजा मारता है ८ धर्म्मात्मा बलवान् शत्रु के आश्रय से अधर्म्मी राजा को मनुष्य डर दिखावै ९ वह राजा जब तक धर्म्म शील हो तभी तक उत्तम है अगर राजा धर्म्मात्मा न हो तो राज्य और राजा दोनों नष्ट होते हैं १० माता पिता स्त्री इनका जोकोई त्याग करके आपरहता उसको बेरी डार के घोड़ा

और हाथी के मार्ग्ग में रक्खे ११ उस की मजदूरी का आधा यत्न पूर्ब्बक राजा उस के माता पिता को दे और हजार पण उस उत्तम साहस का दण्ड ले १२ दश मासे राज मुद्रित ताम्र का पण होता है और डेढ़सौ कौड़ीका मोल कार्षापण कहाता है १३ उसका आधा और उसका आधा क्रम से मध्यम प्रथम होते हैं प्रथम अपराध में प्रथम दण्ड और क्रम से अन्य दो १४ मध्यम अपराध में मध्यम दण्ड और उत्तम अपराध में राजा उत्तम दण्ड करे इस मिश्र प्रकरण में उपाय सहित मित्र उदासीन शत्रु कहा १५ अथ मिश्र प्रकरण में दूसरा कोश प्रकरण कहते हैं बहुत सी चीजें एक अर्त्थ में जहांहों उसे कोश कहते हैं १६ जिस किसी प्रकार से राजा धनको इकट्ठाकरै उसी धनसे राज्य सेना यज्ञादि क्रिया की रक्षा करै १७ सेना प्रजा यज्ञ की रक्षा के लिये खजाने का इकट्ठा करना परलोक और इस लोकमें सुखद होता है अन्यथा दुःखद है १८ और स्त्री पुत्र के लिये जो धन इकट्ठा करता है वह केवल भोग के लिये है या नर्क के लिये है परलोक में कुछ सुख नहीं देता १९ अन्याय से जो धन उपार्ज्जन करता है वह पाप भागी होता सुपात्र से जो ले अथवा दे वह बढ़ता है २० अपने वेद के सदृश सुन्दर व्यय करै वह पात्र इससे अन्यथा अपात्र होता है अपात्र का धन लेतेहुये राजा दोषी नहीं होता २१ छल बल चोर के द्वारा सब तरह अधर्म्मी राजा का धन हरै २२ जो कोई राजा नीति और बल को छोड़के अपने प्रजा पीड़न से धन को इकट्ठा करता है उसका राज्य शत्रु के आधीन होता है २३ दण्ड भूभाग कर की आधिक्य और तीर्थ देवता के करसे बिना विपत्ति पड़े खजाने को न बढ़ावै २४ जब राजा शत्रु के नाश के लिये सेना रखने को हो तब विशेष दण्ड और कर प्रजा से ले २५ राजा धनी को मजदूरी देके

विपत्ति में धनले विपत्तिसे छुटीपाके धनी का द्रव्य वृद्धि सहित दे २६ अन्यथा करने से प्रजा राज्य कोश राजा नष्ट होते हैं और प्रबल दण्डसे राजा लोग सुरथ आदि से हीन होते हैं २७ दण्ड भू भाग महसूल बिना खजाना बीस वर्ष तक भली भांति रक्षा होतीहै २८ राजा को चाहिये कि इतना खजानारखै जिससेप्रजा कीरक्षाहो बलमूल कोशहै और कोश मूलबल अर्थात् सेनाहै २९ सेना की रक्षा से खजाना राज्य वृद्धि शत्रुक्षय ये तीन होते और प्रजा पालन से स्वर्ग्ग होताहै ३० यज्ञ के लिये द्रव्य उत्पन्न हुआ है और यज्ञस्वर्ग्ग सुख और आयुर्ब्बल के लिये और यह तीनों शत्रुनाश सेना खजाना राज्य वृद्धिको करतेहैं ३१ उसराज्यकी वृद्धि क्षमावान् नीति निपुण राजा से होती है इसकारण राजा अपनी बुद्धिबल भर प्रजा वृद्धि करै ३२ राजा माली की तरह अपनी प्रजाके रक्षणके लिये शत्रुको तुच्छ समझ के उस प्रजाके धनसे खजाने को बढ़ावै ३३ इसप्रकार जो राजा कोश को बढ़ाताहै वह नृपों में श्रेष्ठहै और जो राजा रोजगार से खजाना जमा करता है वह मध्यम और सेवा दण्ड और तीर्थ देवताके करलेने से जो राजा खजाना इकट्ठा करता है वह अधम है ३४ राजा करके हीनधन प्रजारक्षाके योग्यहै और मध्यधन भृत्य रक्षणीयहै जैसे स्थानापन्न अधिकारी की रक्षा राजा करै उसीतरह उत्तमों की रक्षाकरै ३५ जिसका उत्तम धन हो वह धनी है बहुतोंसे अधिक हो वह कुछ नहीं बारह बर्ष का धन नीच धन है ३६ और बराबर सोलह बर्षसे चला आताहो वह मध्यम धनहै और तीस बर्ष से बराबर चलाआता हो वह उत्तम धनहै ३७ अपनी विपत्ति में इन धनोंमें से आधे की रक्षा करै आधे मूल से व्यवहार करै न व्याज ले न बनियई करै ३८ महंगीमें बेचै और सस्ती में खरीदै रोजगारी बनियां उस धन के बिना न लगावै ३९

और तरहसे प्रजाका ताप बंश सहित राजा का नाश करता है धान्य का बटोरना तीन बर्ष को पूर्ण करता है ४० तत्तत्काल अर्थात् जिसकाल में जो पैदा होता है उस को अपने देश और अपनेलिये पुराना और अधिक भी होतो उसको बढ़ातारहै ४१ सुपुष्ट शोभायमान जाति में उत्तम सूखा नया जिस में सरस हो ऐसे धान्यको देख रक्खै ४२ अच्छी तरह से बढ़ा बहुत काल तक महंगा भी होतो ले बिष अग्नि पाला का मारा कीड़ोंसे युक्त कभी न धरै ४३ जबतक निस्सार न हो तबतक उसको खर्चमेंलावै और जितना खर्च होजाय उतना नया ४४ बर्ष बर्ष में राजा ले और उसीतरह औषधि धातु तृण काष्ठादिका संग्रह करै ४५ उसीतरह शस्त्र अस्त्र बारूद बर्त्तन बस्त्र नो जो जिस २ कार्य्यमें साधक हों ४६ उनकी संग्रह करै क्योंकि इनसे कार्य्य सिद्ध होते हैं और बटोरेहुये धन आदि की यत्नसे रक्षाकरै ४७ बटोरने में बड़ा दुःख है औ रक्षामें उससे चौगुना दुःख है क्षणमात्र भी उसको भुलावै तो नष्ट हो जाता है ४८ धन के बटोरने में जो दुःख होता है उसीतरह नाशमें भी दुःख होता स्त्री पुत्र और अन्य को उस तरह नहीं होताहै ४९ जो अपने कार्य्य में सुस्त हो तो अन्य से क्या होता है और जो अपने कार्य्य में चैतन्य रहता उसको उसी के समान बहुत सहायक मिलजाते हैं ५० जो मनुष्य धनका बटोरना भलीभांति जानताहै और रक्षाकरना नहीं जानता उससे दूसरा कोई मूर्ख नहीं है उसके बटोरने का फलवृथा है ५१ जोमनुष्य एक अधिकारपर नियुक्तहो और दो काम को करै वह मूर्खजोती हुई दो स्त्रियों को विश्वाससे उत्पन्न कराता है ५२ अत्यन्त लोभी है और स्त्रियोंकरके जितहै वही चोर जार आततायी से गवाही पूंछता है ५३ कृपण की तरह धनकी रक्षाकरै और समय पर विरक्त की तरह दे और बस्तु के

ज्ञानमें आपही यत्नकरै ५४ राजा परीक्षकोंके द्वारा रत्न आदि को देखके रक्खै हीरा मोती मूंगा गोमेद इन्द्रनील ५५ वैदूर्य्य पुष्कराग पाचि माणिक्य इन नवोंको पण्डितलोग महारत्न कहते हैं ५६ लाल रत्न सूर्य्य को प्रिय है और माणिक्य पीला है लाल पीला सुपेद काला मोती ये चन्द्रमा को प्रिय हैं ५७ पीला लाल रुक्मङ्गल को प्रिय हैं और मूंगा उत्तम है मुरैला चाष पत्र के सदृश हरित पाचि बुध प्रिय है ५८ सोने के सदृश देदीप्यमान् पीलेरङ्गका पुष्कराग वृहस्पतिको प्रियहै अत्यन्त उज्ज्वल तारा के सदृश हीरा शुक्र को प्रिय है ५९ सघन मेघ सदृश काला इन्द्र नील मणि शनैश्चरको प्रियहै कुछ पीला लाल गोमेद मणि राहु को प्रिय है ६० बिलार के आंख के सदृश चलत्तन्तु वैदूर्य्य मणिकेतु को प्रियहै सब रत्नों में हीरा श्रेष्ठ और सबसे नीच गोमेद और मूंगा है ६१ पाचि माणिक्य मोती ये श्रेष्ठ हैं इन्द्र नील पुष्कराग वैदूर्य्य ये मध्यम हैं ६२ महा तेजवान् रत्नों में श्रेष्ठ सर्प्पका मणि दुर्ल्लभ है जिस के मध्यमें जाल न हो सुन्दर वर्णहो रेखा और बिन्दुसे वर्ज्जित ६३ सुन्दर कोनेदार सुन्दर दीप्ति ऐसे रत्नको रत्न पारखी रत्नों में श्रेष्ठ कहते हैं शर्करा और दल के सदृश चिपटागोल ६४ रत्न के वर्ण की प्रभा सुपेद लाल पीत कृष्ण जैसा वर्णहो उसीतरह छाया और दोष वर्ज्जित ६५ लक्ष्मी पुष्टिकी शौर्य्य अर्थात् शूरता आयुको देता अन्य अशुभहैं पद्मराग मणि माणिक्य का भेदहै उसकारङ्ग लालपद्मके सदृश होता है ६६ पुत्रकी चाहनेवाली स्त्री हीरा कभी न पहिनै और समय पर धारण किया हुआ मोती और मूंगा हीन होजाता है ६७ गरुआई दीप्ति वर्ण बड़ाई बैठक स्वरूप इनसे दोष वर्ज्जित रत्न अधिक मौल्य होता है ६८ मोती और मूंगा को छोड़के और रत्नमें लोहेसे रेखा न करै बहुधा पत्थरसे रेखा करते हैं यह रत्न

के जानने वाले कहते हैं ६६ छोटा और चौड़ा रत्न बड़े मोल का होताहै हलका और वर्णमें हीन थोड़ेमोलका होता है जो उत्तम गुण हों ७० खड़ा हो उसका थोड़ा मोल है और चिपटा रत्न हो वह मध्यम है और पत्ते सदृशहो उसका अधिक मौल्य है और गोल रत्न अपने प्रीतिके सदृश है ७१ मोती और मूंगा को छोड़ के और कोईरत्न पुराने नहीं होते राजा की दुष्टतासे रत्नोंका मोल कम सिवाय होजाता है ७२ मछली सर्प्प शङ्ख शूकर बांस मेघ सीपी इन सबमें मोती उत्पन्न होता परन्तु बहुत सीपिही से मोती उत्पन्न होता है ७३ काला और दोपर्त्तके भीतरका मोती नीच और सुपेद चारपर्त्तके भीतरका मोती मध्यम पीला लाल सातपर्त्तके भीतरका मोती श्रेष्ठ होता है ७४ वही बेधने के योग्य होता है और अन्य सम्पूर्ण बेधने के योग्य नहीं होते और सिङ्गलद्वीप बासी कृत्रिम मोती बनाते हैं ७५ कृत्रिम मोती का सन्देह दूर करने के लिये मोती की परीक्षा करै कि लोन सहित गर्म्म मीठे तेलमें रात्रिको रक्खै ७६ और चावल डालके उसका मर्द्दन करै जो दूसरे रङ्ग का न होजाय वह मोती असली है असली दीप्ति श्रेष्ठहै दूसरी शोभा मध्यम शोभा है ७७ गोमेद मणि को छोड़के अन्यरत्नोंमें तोलने से दाम लगाया जाताहै और मोती को छोड़ के रत्न तोलने की रत्ती बीस अलसी की होतीहै ७८ चार कृष्णल की मोतीकी तीन रत्ती होतीहै और उन्हीं चौबीस रत्तियों का एक रत्न टङ्क होताहै ७९ और चार टङ्क का सोना और मूंगा का तोला होताहै एक रत्तीका एकहीरा ८० सुविस्तृत दलका मोल पांच सुवर्ण होताहै रत्ती और दलके बिस्तार से पचगुना होतो श्रेष्ठ है ८१ जैसे २ कम होता है उसी तरह दाम में कम होता है इसमें आठ रत्ती का मासा और दशमासे का सुवर्णकहोताहै ८२ पांच सुवर्णका मोल अस्सी कर्ष होता

है जितना गम्भीर हीरा होताहै उसी तरह रत्तियोंके हिसाब से अधिकदाम होता है ८३ और चिपटे हीरे का एक तिहाई कम होताहै और अंकवरिके सदृश हीरेका दाम आधा उत्तम कहाहै ८४ एक रत्ती के दो हीरेहों तो आधे दामके योग्य है अपने २ गुणके सदृश उसी तरह आधे मोल का होता है ८५ गुणकरके हीन हीरा उत्तमार्द्ध या उसके आधेका होताहै और रत्ती भरका हीरा शतसे अधिक का होताहै और बीस रत्ती को जीत लेताहै ८६ जो हीरा बड़े दल का हो अथवा चिपटाहो तो सैकड़े पीछे दाम कम होजाता है ८७ अंकवरिके सदृश हीरा हो तो पचास अथवा चालीस कम होजाते हैं और काला लाल बिन्दुयुत रत्न को न धारण करै ८८ उत्तम पाचि और माणिक्य मोल में उत्तम सोने के तुल्य गम्भीर होतो उत्तम है ८९ और रत्ती भर का पुष्कराग और नीलमणि स्वर्णार्द्धके तुल्यहैं तीन सूतका वैदूर्य्य उत्तम मोल का होता है ९० तोला भरका मूंगा स्वर्णार्द्ध मोलका होताहै और गोमेद मणिका कोई प्रमाण मुकर्रर नहींहै इससे बहुत थोड़ा मोल कहा है ९१ हीरा को छोड़के छोटे छोटे रत्नोंके मोलकी संख्या कही और अतीव रमणीय दुर्ल्लभ रत्नोंका मोल इच्छा से होता है ९२ बहुत उत्तम रत्नोंका दाम तोल से नहीं होता ब्यंघ्रि चौदहका हतवर्ग्ग मोती की रत्ती होतीहै ९३ और चौबीससे भागदे लब्धि जो मिलै उससे मोल जानै सुवर्णार्द्ध का रत्न उत्तम है जैसा गुणहो वैसा दाम कम होता जाता है ९४ मोतीकी रत्तियों में प्रति रत्ती नव कला होतीहै पांचभाग करके तीसका भागदे ९५ जो कुछ लब्ध मिलै उसको कला में जोड़ के कलामें सोलहका भागदे और मोलको लब्धिमें जोड़दे वही यथा गुण मोती का मोल होताहै ९६ लाल पीला गोल सुपेद मोती उत्तम होताहै और चिपटा अधम अंकवरि के तुल्य और

अन्य मध्यम है ६७ रत्नमें स्वाभाविक दोष होते और धातु में कृत्रिम दोष होतेहैं इससे धातुकी परीक्षा करके उसके मोलकी कल्पना करै ६८ सोना चांदी तांबा बङ्ग सीसा ये रंजकहैं और लोहा ये सात धातुहैं अन्य मिलीहुई धातु हैं ६६ एक से पहिला श्रेष्ठहै और सोना सबसे उत्तम धातुहै बङ्ग और तांबा मिलकेकांसा होताहै और तांबा और रांगा मिलके पीतल होताहै २०० सोना मानमें समहै जितना देखने में आताहै उतनाही तोलमें होताहै और थोड़ा होताहै और अन्य बहुत होतेहैं एक छिद्रसे दोनोंका तार खींचै तो १ धातु का सूत्र मान के समान होजाय और जिसका यंत्र शस्त्र अस्त्र बनताहै वह बड़े मोलका लोहा होताहै २ सोलह गुना चांदी सुबर्ण का मोल होता है और सोलह गुणा तांबा चांदी का मोल होताहै बहुधा अस्सी गुणा होता है ३ तांबे से अधिक डेढ़ गुना बङ्ग होता है उसी तरह अन्यरांगा और सीसा दोतीन गुना अधिक होता और तांबेसे लोहा छगुनहै ४ यह रत्नों का विशेष मोल कहा प्रथम रत्न का मूल्य कल्पना करै और सुन्दर शृङ्ग और वर्णहो सुखसे दुहने दे बहुत दूधहो उत्तम बछड़ा हो ५ ज्वानि दुबली हो या मोटी हो अधिक मोल होतीहै पीला बछड़ाहो पसेरी भर दूध देतीहो ऐसी गऊकाचांदी का पल मोल है ६ बकरीका मोल गऊ के मोलसे आधा होता है और बकरी से आधा भेड़का मोल और मोटे लड़नेवाले भेड़े का मोल चांदीका एक पल होता है ७ दश या आठ चांदी का पल गऊका उत्तम मोलहै और भेड़ी भेड़ेका चांदीका एकपल होताहै ८ और गऊ के सदृश डेढ़ गुना भैंस का उत्तम दाम है और सुन्दर सींग उत्तम वर्ण वाला जल्द चलनेवाला ६ अष्ट ताल हृष का साठपल मोलहै सात अथवा आठ पल भैंसाका उत्तम मोलहोताहै १० दो तीन चार हजार हाथी घोड़े का उत्तम मौल्यहै और

ऊंटका भैंसे के सदृश उत्तम दाम कहा है ११ जो घोड़ा दिन भरमें चारसौ योजन जाय वह उत्तम घोड़ाहै और सुन्दर वर्ण हो श्रेष्ठहो उसका पांचसौ रुपया मोल है १२ और तीस योजन अर्थात् एकसौ बीस कोशका चलनेवाला ऊंट उत्तमहै और उस का चांदी का सौ पल मोल कहा है १३ चारमासे सोने की निष्कसंज्ञा है और पांचरत्ती का मासा हाथी के दाममें कहाहै १४ और पृथ्वी में जिस के सदृश दूसरा न हो वह रत्न भूत कहाता है यथा देश और यथा सब रत्नों का मोल रक्खै १५ व्यवहारके अयोग्य गुणहीन पदार्थ का मोल नहीं होता और सबके मोल कल्पना में नीच मध्य उत्तम होता है १६ खरीदने और बेचने वालों से जो राज भाग लिया जाताहै वह शुल्क है इसको लोकरीतिसे बिचारै १७ करलेने के स्थान को चौड़ी सड़क बनवावे क्योंकि वह कर सीमाहै और सम्पूर्ण वस्तुमात्र का महसूल एक बार ले १८ और राजा छल से राज्य से दुबारा कभी कर न ले और खरीदने और बेचने वाले से राजा बत्तीसवां हिस्सा करले १९ और बीसवां या सोलहवां हिस्सा कर मूल विरोध कारी है सम मूल्यसे हीन बेचने वाले से कर न ले २० खरीदने वाले के लाभको देखके राजा करले बहुत या मध्यम अथवा थोड़ीजमीन मानके लिये नियत करै २१ जानने वाला पहिले जानके पीछे भाग की कल्पना करै किसीपै जास्ती न हो कि जिससे वह नष्ट होजाय २२ राजा माली की तरह प्रजा से पोत ले अङ्गार कारवत् न ले बहुत मध्यम छोटे फल की तारतम्य देखके पोत ले २३ राज भाग के देने से द्विगुण फल होता है और खेती उत्तम होतीहै और कम देना मनुष्य को दुःखद होता है २४ तालाब बावली कुआं स्वतन्तालाब देव क्षेत्र नदी मातृक देशसे अनुक्रम करके २५ तृतीयांश चतुर्थांश

अर्द्धांश करले और पत्थर आदि का महसूल छठां हिस्सा ले २६ रजत या शत कर्षमित राजभाग है और कर्षक जो मिलै उसमें बीसवां हिस्सा राजा छोड़ दे २७ सोना अथवा चांदी का कर तृतीयांश और तांबे में चौथा हिस्सा करहै लोह और वङ्गका छठां हिस्सा कर है २८ रत्न और क्षार वस्तु में अपने खर्च करने से जो बचाहो और खेती करने वालेको आदिकी लाभादिको देखके करले २९ तीन पांच सात दश प्रकार करै तृणकाष्ठ आदिके लेनेवाले से बीसवां हिस्सा करले ३० बकरा भेड़ा गऊ भैंस वृद्धि से अष्टांश करले और भैंस बकड़ी भेड़ी गऊ इनके दुग्धका सोलहवां हिस्सा करके करले ३१ काम करनेवाला और थवईसे दिनका काम करावै और उसकी वृद्धिमें तड़ाग बावली या कृत्रिम नदी तैयारकरावै ३२ और जिस खेतीकरनेवाले को निकासै उसके सदृश करै जो नवीन भूमि जब तक उससे द्विगुण भाग न दे तब तकउसको न दे ३३ जमीनमें भाग भृतिशुल्क वृद्धि उत्कोचकर इतने नामकरकेहैं इन कोशीघ्र वसूलकरै देरी न लगावै ३४ हर एक खेती करने वाले को चिन्ह सहित भाग पत्र अर्थात् पट्टा दे और किसी धनीसे नियम कराके भूभाग का पट्टा दे ३५ जो कुछ उस के ज़िम्मे बकाया या हालका पोत बाकीहो वह माल जामिनसे वसूल किया जाय और वह कर महीने महीने या ऋतु २ में ले ३६ सोलह बारह दश आठ अथवा इन से अधिक अपने अंशते अथवा छठें थाम पाल बनावै ३७ गऊ आदि का दुग्ध अन्न फल कुटुम्बार्थ राजाले और उपभोग में धान्य वस्त्र खरीदने से फल राजा न ले ३८ वृद्धि जीविका करने वाले और बयाज लेना बत्तीसवां अंश करले और गृह आदि आधार का कर जोती भूमि के तुल्य होता है ३९ रोजगारी मनुष्य से रोजगार के तुल्य जमीनसे कर लगावे मार्ग्ग संस्कार और रक्षा के लिये

मार्ग्ग में चलनेवालों से कर ले ४० सर्व्वत्र फल भोक्ता है उस को रक्षाकरने में दासवत् होना चाहिये यह खजाने का प्रकरण संक्षेप में कहा ४१ अथ मिश्रमें तीसरा राष्ट्र प्रकरण संक्षेप में कहेंगे राष्ट्र शब्द से स्थावर जङ्गम का ग्रहण है ४२ जब तक जिसके जो अधीनहै वह उसीका होजाताहै कुबेरता शतगुणाधि का सर्व्व गुणा अधिक होती है ४३ ईशता अधिक तर है यह छोटी तपका फलनहीं है वही पृथ्वी तलमें नाचताहै अन्य देवता नहीं ४४ उसी राजा के आश्रित लोक हो के राजा की आज्ञानुसार प्रजाकरै और इसीसे राजा देशकाफल और पापभोगकरता है ४५ और जो जो राज्य जिस के राज्य में हों वहां के सम्पूर्ण प्रजा धर्म्म पर हों धर्म्मनीति पर राजा बहुत दिन तक यश को पाताहै ४६ जब तक भूमिमें कीर्त्ति रहती है तब तक वह प्राणी स्वर्ग्ग में रहता है अकीर्त्तिही नरक है और दूसरा नरक स्वर्ग्ग में नहीं होता ४७ पाप मूल नर देह बिना अन्य देह नरक है व्याधि आधि महा पाप रूपक हैं ४८ राजा आप धर्म्म पर होकर प्रजा को धर्म्म में लगावे और प्रमाणभूत धर्म्मिष्ट का प्रजा उप सर्प्पणकरै ४९ देश जाति सनातन कुल धर्म्म और मुनियों करके प्राचीन अथवा नये जो धर्म्म कहेहैं उनको करै ५० राजा राष्ट्र अर्थात् देश वृद्धिके लिये यत्न पूर्व्वक इन नियमोंको धारण करै धर्म्म संस्थापन से राजा लक्ष्मी कीर्त्तिको प्राप्त होता है ५१ ब्रह्माजीने कर्म्मकरके पूर्व्वही चार भेदकियाहै उसकी साङ्कर्य्यकी साङ्कर्य्यता प्रति लोम और अनुलोमसे ५२ जाति अनन्तहैं ऐसी कोई वस्तुनहींहै ऐसा मनुष्य कोई नहीं जिसके जन्म सेजाति भेद है ५३ अलग २ वही लोग जानते हैं जो जरायुज अण्डज स्वेदज और उद्भिज की जाति को जानता है ५४ नीच के साथ से उत्तम नीच होताहै जन्मसे अन्ध नहीं होताहै और उत्तम मनुष्य

नीचता से नीच नहीं होता जन्म से नीच होताहै ५५ गुणकाल के कर्म्मसे उत्तमकी नीचता होतीहै विद्या कलाश्रय या उसके नामसे जाति होती है ५६ यज्ञाध्ययन दान ये ब्राह्मण के कर्म्म हैं और लेना देना पढ़ाना पूजा इतने कर्म्म ब्राह्मण में अधिक हैं ५७ सत् रक्षण दुष्ट नाश क्षत्रिय की भांति कर लेना खेती गो रक्षा वाणिज्य या अधिक बनियां करै ५८ दान और सेवा नीच कर्म्म स्वभावज है क्रिया भेदसे सबको मज़दूरी की वृत्ति अनिन्दितहै ५९ सीरके भेदसे कृषि और मनु आदि ब्राह्मणोंमें और ब्राह्मण करके सोलह गऊ अथवा बारह की गिन्ती करै ६० द्विगव अर्थात् गऊ बैल और सीरको अन्त्यजसे सीर और जमीन की कोमलता देखै और ब्राह्मणको छोड़ अन्य जाति को भिक्षा मांगना निन्दित है ६१ तपो विशेष विविध और बिधि पूर्व्वक व्रत करै और सरहस्य सम्पूर्ण पढ़ै ६२ जो सम्पूर्ण विद्या पढ़ लेताहै वह सबमें श्रेष्ठहै और बे पढ़ा जाति करके केवल गुणके योग्य नहींहै विद्या और कला अनन्त हैं इनकी संख्या नहीं हो सक्तीहै ६३ विद्या अनन्तहैं संख्या नहीं होसक्ती विद्या सहित बत्तीस और चौंसठकलाहोतीहैं ६४ जोजो वाचिककर्म्महैं वह सम्यक्विद्याभि संज्ञकहैं जो मूककरनेको समर्त्थ होताहै तौन कला कहाता है ६५ संक्षेप से लक्षण कहा है विशेष पृथक् कहते हैं और विद्या और कलाका पृथक्२ कहतेहैं ६६ ऋक् यजुः साम अथर्व्वण वेद आयुर्व्वेद धनुर्व्वेद गान्धर्व्व तंत्र ये उपवेद हैं ६७ शिक्षा व्याकरण कल्प निरुक्त ज्योतिष छन्द ये वेद के षड़ङ्ग हैं ६८ मीमांसा तर्क सांख्य ये वेदान्त योग कहाते हैं इतिहास पुराण स्मृति ये नास्तिकहैं ६९ अर्थ शास्त्र काम शास्त्र शिल्प अलङ्कार काव्य निदेशभाषा अवसरोक्ति यावनमत ७० धर्म्म या देश विद्या संज्ञित इन बत्तीस को जानै और ऋक् आदि वेद में

मंत्र और ब्राह्मणमें ब्राह्मण को वेद करके वर्णन किया है ७१ जिस का जप होम देवतों का प्रीतिद है जहां ब्राह्मण के लिये ब्राह्मण का विनियोग हो वहां मन्त्र शब्द का उच्चारण होता है ७२ जिस के पास ऋक् रूप मन्त्र हों और पादशः अर्चशः हो और जहां जेपा हौत्र हो और समाख्यान जहां हो ७३ जहां मिले हुये मन्त्र वृत्त और गीत बिना पढ़े जातेहैं अध्वर्य्यु का जहां कर्म्म होता त्रिगुण जहां पाठहोताहै ७४ मन्त्र और ब्राह्मण में यजुर्व्वेद कहाजाता है शस्त्र आदि की यज्ञमें उद्गीथ यज्ञ में वही साम है ७५ अथर्व्वा और अङ्गिरा उपास्य उपासनात्मक करें ये संक्षेप में चारवेद कहे गये हैं ७६ सम्यक आकार और औषधी को जानताहै उसका आयुर्व्बल बढ़ताहै जिसमें ऋग्वेद का उपवेद है वह आयुर्व्वेद कहाता है ७७ युद्ध के शस्त्र अस्त्र निपुण और उसके बनाने में चतुरहो वह यजुर्व्वेदोप वेद धनुर्व्वेद कहाता है ७८ उदात्त आदि स्वर और तन्त्री कण्ठोत्थित स्वर सताल ज्ञान विज्ञान गान्धर्व्ववेद कहाता है ७९ विविध उपास्य मन्त्रका विभेदसे प्रयोग कहे हैं उपसंहार सहित तद्धर्म्म नियम से छः प्रकार का है ८० स्वरकाल स्थान प्रयत्न अनु प्रदान से अथर्व्वण वेदका उपवेद तन्त्ररूप है ८१ सवनआदि करके वर्णों का पाठ शिक्षण होताहै और जहां यज्ञोंका प्रयोग कहा है वह ब्राह्मण शेष कहा जाता है ८२ एकश्रौत कल्प और दूसरा स्मार्त्त कल्प होताहै व्याकरण प्रत्ययादि धातु सन्धि समास से जानों ८३ शब्द शब्द जहां कहा जाय एक बचन द्वि बचन बहु बचन वहां व्याकरण जानों और जहां बहुत शब्द इकट्ठाकहे जायं वह वाक्यार्थका एक संग्रह है ८४ उस्के समान दूसरी वार्त्ता कहने से श्रोत्र संज्ञकको वेदाङ्ग कहतेहैं और नक्षत्र और ग्रह गमनका कालजिस से जानाजाय वह निरुक्तहै ८५ संहिता और होरा से

जहां गणित कहाजाय वह ज्योतिष है और मगणआदि गणोंसे गुरुलघु जो पद्यका प्रमाण जानै ८६ कल्पान्त अर्थात् छन्द शशास्त्र वेदोंका पाद धारणकरनेवालाहै विधिभेदसे अर्थ कल्पना होतीहै ८७ मीमांसा वेद वाक्योंका न्याय करताहै भावाभाव पदार्थ प्रत्यक्ष प्रमाण को प्रसिद्ध करता है ८८ जहां विवेक सहित तर्कहो जो कणादआदि का मतहै पुरुष और आठ प्रकृति सोलह विकार ८६ तत्व आदिकी संख्याकी विशेषता से सांख्य कहाताहै ब्रह्मएक और अद्वितीयहै बहुत नहींहै ६०वेदान्तियोंका सब मत मायिकहै यह अज्ञानसे मालूम होताहै क्योंकि इस में प्राण संय्यमन आदि से चित्त वृत्ति निरोध कहते हैं ६१ जो एक राजा के कृत्यके मिषसे कहाजाय ध्यान समाधि से वह योग शास्त्र पूर्ब्ब वृत्तान्त कहनेके लियेहै ६२ जिस इतिहास सहित पूर्ब्ब वृत्त कहा जाय वह सर्ग्ग प्रति सर्ग्ग वंश मन्वन्तर कहा जाताहै ६३ जिस में वंशानुचरित होवह पुराण कहाताहै और वर्णोंका धर्म्मादि स्मरणहै क्योंकि वेदवर्ण धर्म्म के अविरोधी हैं ६४ अर्थ शास्त्र का कीर्त्तन स्मृति कहाती है जिसमें युक्ति वलीयसी और सम्पूर्ण स्वाभाविक मत है ६५ किसीका ईश्वर कर्त्ता नहीं है न वेद है न नास्तिक मत है श्रुति स्मृति के अविरोधसे राज वृत्त शासन है ६६ शशादि भेद और पुरुष के अनुकूलादि भेदसे सुयुक्तिसे धनका इकट्ठा करना अर्थ शास्त्रहै ६७ पद्मिनी आदिके भेदसे स्त्रियों के स्वीयादि भेद हैं जिसमें स्त्री पुरुष दोनों का चिन्ह हो वह कामशास्त्र है ६८ प्रासादप्रतिमा बाग घर बापी करना जहां हो वह शिल्प शास्त्र है ६६ सम न्यूनाधिकत्व समान रूप भेद से परस्पर गुण भूषण का वर्णन जहां हो वह अलङ्कार है ७०० विलक्षण चमत्कार वीजपद हो सरसा लंकृत जहां ऐसा हो वह दुष्ट शब्दार्थ

काव्यहै १लोकके संकेतसे अर्थों काघटना दैशिकीवाक् कहातीहै बिना कोशके कार्य्यको सिद्ध करतीहै २यथा कालोचितजो बाक्य है वह अव सरोक्ति कहातीहै अदृश्य जगत्के कारण ईश्वरहैं ३ धर्म्म अधर्म्म बिना श्रुतिस्मृति अर्थात् श्रुत्यादि मत भिन्नजहां धर्म्महै वह यावन मत है ४ श्रुति में कहा हो अथवा लोक वैसा करता सो वह देशादि धर्म्महै वही देशदेश कुलकुलमेंहै ५विद्या के पृथक् पृथक् लक्षण कहे हैं और कला के अलग नाम नहींहैं केवल लक्षण हैं ६ पृथक् क्रिया करके कला भेद होताहै जिस २ कला में जो प्राप्त होउसी नाम से जाति होतीहै ७ अनेकबाद्यके बजाने को कला कहते हैं हावभावादि संयुक्त नाचना भी कला कहाती है ८ बस्त्र अलङ्कारस्त्री पुरुषोंका भूषित होनाकलाकहाती और अनेक रूप का बनाना इसको भी कला कहतेहैं ९ अच्छी शय्याका बनाना और पुष्पका गूंथनाऔर जूआ आदिका खेलना भी कला कहाती है १० अनेक आसन करके रति का ज्ञानकला कहाती है यहसात कला गन्धर्वोंमें प्रसिद्ध हैं ११ फूलका रसआसव निकालना मदिरा बनाना कला कहाती है टूटे शल्य अर्थात् हड्डी का निकालना रुधिर निकालना कला है १२ कम या अधिक अन्नरस के पचाने को कला कहते वृक्षादि को बना के वृक्षादिका लगाना कलाहै १३ पाषाण आदि की भट्टी बना के पाषाण औ धातुके भस्म करनेको कला कहतेहैं और जितने ऊखके बिकार हैं उनका करना जानना कला कहाती है १४ धातु और औषधीके संयोग की क्रिया का ज्ञान कलाहै धातु एक में मिली हुईहो उसका जुदा करना कलाकहातीहै १५ किसी धातुमें कोई धातुमिली हो उसका अलग करना कला है और नमकके निकालनेका ज्ञान कला है १६ ये दश कला वैद्यकमेंहैं शस्त्र चलाने में पैर का रखना भी कला है १७ दांव पेंचके साथ मल्ल युद्धभी

कला है और कला आदिसे दिखाये हुये स्थानमें निशाना लगाना भी कला है १८ बाजा के ऊपर सेना का किला आदि बनाना भी कला है हाथी घोड़े रथ की चालपै युद्ध करना कला है १९ ये पांच कला धनुर्व्वेद में हैं अनेक तरहके आसन और मुद्रा से देवता का प्रसन्न करना कला है २० हाथी घोड़ा आदिकी सारथ्य और उनकी शिक्षा कला है मट्टी काष्ठ पत्थर धातु आदिके बर्तनकी सत्क्रिया २१ वा अलग २ इन चारोंका तसवीरमें लिखना भी कला है तालाब बावली अटारी की सम भूमिकी क्रिया भी कला है २२ घड़ी आदि अनेक यन्त्रों का बनाना कला है हीन मध्य आदि संयोग वर्ण आदि से रंगना भी कला है २३ जल वायु अग्नि के संयोग के रोकने से क्रिया को कला कहतेहैं नाव रथ आदिक यान बनाना भी कला है २४ सूत आदि की रस्सी बनाना अथवा उसका जानना कलाहै और अनेकसूत्रके संयोग से वस्त्र बनाना कला है २५ अच्छा या बुरा अथवा बेधे रत्न आदिका जानना और सुवर्ण का ठीक २ जानना कला है २६ सुवर्ण या रत्न आदि से भूषण बनाना कला है और सोने और चांदी आदि के भूषण में मुलम्मा करना भी कला है २७ मृदङ्ग आदिके कड़े मुलायम चमड़े का जानना और पशुके अङ्गसे चमड़े का उतारना कला है २८ दूध दुहना आदि ले घी निकालने तक कला और चोली आदिका बनाना यहभीकलाहै २९ हाथ पैर आदिसे जलमें तैरना और गृह और पात्र आदि साफ करना कलाहै ३० वस्त्र धोना बार बनाना ये दोनों कलाहैं तिल और मांसादि से तेल निकालने में कला है ३१ हल आदि के चलाने और वृक्ष आदि के चढ़ने अनुकूलकी सेवा इनका जानना कलाहै ३२ बांस और तृणका पात्र बनाना और कांचका पात्र ढालना यह कला है ३३ सींचना और जलका रोकना लोहा-

भिसार और शस्त्र अस्त्रके बनाने की क्रियाका जानना यह कला है ३४ गज घोड़ा बैल ऊंट पर्ब्बत पै छोड़ना और बालक की रक्षा और उनके साथ खेलना और धारण करना कला है ३५ अपराधी मनुष्य का युक्ति पूर्ब्बक ताड़ना और नाना प्रकार के देशों के अक्षरों का लिखना कला है ३६ ताम्बूल की रक्षा और सूरतका जानना कलाहै और शीघ्रकरने वाला और देरमें करने वाले के प्रति दान हैं ३७ कला में दो गुण हैं और दो कला हैं यह चौंसठि कला संक्षेप से कहा ३८ जिस २ कला के आश्रितहो उसको सदाकरै ब्रह्मचारी गृहस्थ बानप्रस्थयतीये क्रमसे हों३९ क्रमसे ये चार आश्रम सदा ब्राह्मणकेहैं अन्य सबको यतिकोछोड़ और सम्पूर्ण आश्रम होतेहैं ४० बिद्या सीखने के लिये ब्रह्मचारीहो सबके पालनकेलिये गृहस्थ इन्द्रियोंकेदबानेके लिये बानप्रस्थ और मोक्ष साधनमें संन्यासी हो ४१ अन्यथा करनेसे बर्णआश्रम जाति बचनसे दण्डके योग्य है जप तप तीर्त्थ सेवा संन्यास मंत्र साधन करै ४२ खेती बनिज आदिक कार्य्य में वे कार्य्य साधिका होतीहैं मीठे गानसे जैसे अपने आधीन पतिहो ताहै ४३ माया कार्य्य हास्यसे स्त्री ऐसाकरै कि पति प्रसन्न हो न पति के समान नाथहै नपतिके समान सुखहै ४४ सर्ब्बस्व धन छोड़के स्त्री का भर्त्ता शरणहै पिता भाई पुत्र प्रमाण भर देते हैं ४५ ऐसी कौन स्त्री है जो अमित दान देने वाले पति की पूजा न करै शूद्र चौथा बर्णहै इससे धर्म्म करने के योग्य है ४६ परन्तु शूद्रवेदमंत्र स्वधा स्वाहा वषट्कार बिना कर्म्मकरै और पुराणादिके नमोन्त मन्त्रोंसे कर्म्मकरै ४७ ब्राह्मणी में उत्पन्न पुत्र ब्राह्मण के सदृश और क्षत्रियामें उत्पन्नक्षत्रवत् कर्म्मकरै और वैश्या स्त्रीमें उत्पन्न पुत्र वैश्यवत् कर्म्म करै ४८ बनिन में ब्राह्मण क्षत्रिय से उत्पन्न पुत्र वैश्यवत् और शूद्रास्त्रीमें तो शूद्र नीचजाति

के पतिसे उत्तम जातिकी स्त्री में उत्पन्न शूद्रसे भी नीच होताहै ४६ वह नाम गोत्रमें शूद्रके ही सदृश करैं ये संकर चार वर्णए-क एकत्र यावन हैं ५० ये वेद भिन्न प्रमाण हैं पश्चिम और उ-त्तर दिशामें रहते हैं उनके आचार्य्योंने उनके हितके लिये उनका शास्त्र बनाया है ५१ व्यवहार के लिये जो स्त्री पुरुष की नीति क-ही तो उसमें कहीं बीजकी माहात्म्य है कहीं क्षेत्रकी माहात्म्य है ५२ नीच उत्तम श्रेष्ठ क्षेत्र बीजसे होताहै जैसे विश्वामित्र बसिष्ठ मातङ्ग नारद आदि ५३ अपनी २ जाति के लिये जो धर्म्म कहाहो और पुराने लोगोंने जिसतरह कियाहो उसीके सदृश वह **जाति करै अगर न करैतो राजा दण्ड दे ५४ जाति वर्ण आश्रम** के सम्पूर्ण चिन्हों को दिखावै यंत्र धातु कारों को रात्रि को र-क्षा करै ५५ राजा अपने राज्य में कारु शिल्पी की कार्य्य के **सदृश रक्षा करै और अधिक को खेती करने वालेकी सेवा और** भृत्य वर्गों में योजित करै ५६ और सोनार **आदि चोरों के** बापहैं और मदिरा गृह ग्रामसे बाहर रक्खै ५७ **राज्य में कोई दिनमें मदिरा न पीवे ग्राममें ग्राम्य वृक्षों को राजा लगावै ५८ उत्तम वृक्षों को बीस हाथपर और मध्यम वृक्षों को पन्द्रह हाथ** पर सामान्य वृक्षोंको दश हाथ पर और छोटे वृक्षोंको पांचहाथ पर लगावै ५९ बकरी भेड़ी गऊ का गोबर मांस से वृक्षों का पालन करै गूलर पीपर बट इमली चन्दन जम्भल ६० कदम्ब अशोक बकुल बेल हिर्डा कैथा राजादन आम्र पुन्नाग तूत अम्ल चम्पा ६१ नीप कोक आम्र सरल अनार अखरोट भिस्सटा सिरसा शिंशुबेर नींब जम्भीरी क्षीरक ६२ खजूर देवदारु कंजा फलगु तापिच्छ सिंभला हर्फारेवड़ी कचनार आंवला सुपारी बि-जौरा ६३ बड़हड़ नारियर केला अन्य अच्छे फल वाले और जो सुपुष्प जो वृक्ष इनको ग्राम केनिकट लगावे ६४ और जो

कण्टकी और खैरआदि वृक्षहैं वे आरण्यक कहातेहैं उनको ग्राम के निकट लगावै ६५ खदिर अपटा शाखू टेटू बेल बबूल तमाल शाल इकुड़ा धव अर्ज्जुन पलाश ६६ सप्त पर्ण शमी तून देवदारु बहेरा करौंदा इङ्गुदी भूर्ज्ज विषमुष्टिकरील६७ शिवणी काश्मरी पाढ़ा तेंदु दुबिया हरैं भ्यलावा शम्पाक पुष्कर ६८ अरिमेद पीत वृक्ष शाल्मलि बहेड़ा नरबेल महा वृक्ष अन्य महुआ आदि ६९ फैलीहुई और खम्भे पै फैलाई हुईलता और ग्राममें ग्राम्य और बनमें बनयाले वृक्षोंको लगावै ७० कुआं बावली तलैया तालाब इनको सुन्दर सीढ़ी लगाकेबनावै ७१ जिसतरह राज्य में अधिक जलहो उसीतरह सुन्दर सेतुआदि बनावै ७२ और नदी में नौका आदि जलयान बनावै और जिस जाति में जो पूज्य देवताहै उस विद्याका जो पूज्य गुरू ७३ उस का स्थान उस जातिकी पंक्ति में बनावै और ग्राम के चौराहे अथवा ग्राम के मध्य में विष्णु या महादेव का ७४ गणेश जी अथवा देवी जीका मेरुआदि सोलह लक्षण युक्त सुमनोहर स्थान बनावै ७५ गोल अथवा चौकोना या यन्त्र के सदृश मण्डप कोट गोपुर गण युत द्विगुण या त्रिगुण ऊंचा बनावै ७६ यथोक्तान्तः प्रतिम अर्थात् जैसी कही हुई मूर्त्ति सहित जल मूल विचित्रित रम्य सहस्त्र शिर सपाद शत भूमिक ७७ हजार हाथ का विस्तृत और मेरु के सदृश ऊंचा और उन से अष्टमांश हीन अन्य मन्दिर आदि बनावै ७८ मन्दर ऋक्षमाली द्युमणि चन्द्र शेखर माल्यवान् पारियात्र रत्नशीर्ष धातुमान् ७९ पद्म कोशः पुष्प हास श्री कर स्वस्तिक महापद्म पद्म कूट सोलहवां विजय ८० जिस देवता का जो मण्डपपाद न्यून आगे ऊंचा बनाके अपने आराधनीय देवता कीमूर्त्ति उसमें धरै ८१ विष्णु आदि की सात्विकी राजसी तामसी तीन प्रकार की मूर्त्ति होती हैं जो जहां योग्य हो वहां वैसी पूजा करै

८२ योग मुद्रा से युत स्वस्थ वर और अभय हाथ में लिये और देवेन्द्र आदि करके स्तुति और नमस्कार की हुई सात्विकी मूर्त्ति कहाती है ८३ बैठीहो या सवारी पर स्थितहो अनेक प्रकार के आभरणों से युक्त शस्त्र अस्त्र अभय हाथ में लिये तामसी मूर्त्ति कहाती है ८४ शस्त्र अस्त्रको लिये दैत्यों की मारनेवाली उग्र रूपको धारण किये युद्धमें आनन्दित तामसी मूर्त्ति कहाती है ८५ अब संक्षेप में विष्णु आदि की मूर्त्ति का ध्यान और मूर्त्ति का प्रमाण मूर्त्ति की अङ्गका विस्तार कहते हैं ८६ अपनी२मुष्टि का चौथा अंश अंगुल कहाता है उन्हीं बारह अंगुलों करके ताल का विस्तार होता है ८७ बामन की मूर्त्ति सात ताल और मनुष्य की मूर्त्ति आठ ताल देव मूर्त्ति नवताल की और राक्षसी मूर्त्ति दश ताल की होती है ८८ सात तालकी ऊंचीहो या देशके भेदके सदृश हो सदा स्त्री की मूर्त्ति सात तालहो और बामन जी की मूर्ति को भी सात ताल का बनावे ८९ नर नारायण राम नृसिंह जी की मूर्ति दश तालकी होती और सतयुग में दश तालकी मूर्त्ति और त्रेतायुगमें नव ताल की मूर्त्ति होती है ९० और द्वापर में अष्ट ताल की मूर्त्ति और कलियुग में सात तालकी मूर्त्ति होती है और नव तालकी मूर्त्ति मुख एक ताल प्रमाण होता है ९१ चार अंगुल का ललाट और उसी तरह अधोनाशा करै और नाकके नीचे से दाढ़ी तक चार अंगुल होताहै ९२ चार अंगुल का गला और एक ताल का हृदय होता और एक तालकी शोभित नाभी होतीहै ९३ और नाभी के नीचे एक भागका लिङ्ग होताहै और दो तालकी चौड़ी जंघा और चार अंगुल जानु होती है ९४ जङ्घा और ऊरू सम करै और गुल्फ के नीचे चार अंगुलकरै यहनव तालका बुध लोग ऊर्द्धमान कहा है ९५ और शिखा से लेके केशान्त तीन अंगुल का सब

प्रमाणहै सात या आठ तालका जो मार्ग में बिभाग न हो ९६ चार तालकी भुजा अंगुली सहित कहीहैं और स्कन्धसे कोपरान्त बीस अंगुल उत्तम है ९७ और कांखसे नीचे कोपरान्त तेरह अंगुल यह अट्ठाईस अंगुल मध्यमान्त कर कहाता है ९८ सात अंगुल का करतल और बीचकी उंगुली पांच अंगुल की साढ़े तीन अंगुल का अंगूठा तर्ज्जनी उतनीही करै ९९ और अन्यका पर्ब्बद्वयात्मक तीन२पोरका करै और अर्द्धांगुल या अंगुल करके हीन तर्ज्जनी होती है १०० कनिष्ठिका अनामिकासे न्यून होती है और चौदह अंगुल का पैर और एक अंगुल का अंगूठा होता है १ दो अंगुल की छंगुनी होती और डेढ़ अंगुल की अन्य सम्पूर्ण अंगुलियां होतीं और शिरको छोड़ पाणि,पाद,गूढ़,गुल्फ होते हैं २ मूर्त्तिके जानने वाले जो मूर्त्तिके अङ्ग कहे हैं वे मानसे न अधिक हों न कम तो उत्तमहै ३ मूर्त्ति न मोटी हो न बहुत पतली हो सब अंग मनोरम हों सर्ब्बाङ्ग से सर्ब्ब रम्य कोई लक्षण में होता है ४ शास्त्रमान से जो रम्य हो वही रम्य है अन्य नहीं शास्त्रमान बिहीन पण्डितों को अरम्य है ५ और एक किसी को वही जिसमें जिसका चित्त लगै वहां अष्टांगुल का ललाट होता और तावन्मात्र भौंह ६ अर्द्धांगुल धन्वा के सदृश आयत लिखै और तीन अंगुल का लम्बा और दो अंगुल का चौड़ा नेत्रहो तो शुभ है ७ उसका तृतीयांश पुतली काली होती भौंहका बीच दो अंगुल और नाक का मूल एक होता है ८ और नासिका अग्र भाग और उसके दोनों छिद्र दो अंगुलका होता है शुकके मुख के सदृश या सीधी नासिका शुभ है ९ निष्पाव के सदृश नासिका के दोनों पुट सुन्दर हों और कान भौंह के समान और बड़े चार अंगुल के हों १० कर्णपाली दो अंगुल की हो और मोटी हो तो आधअंगुल और नाक का बांसा आध अंगुल सुन्दर अग्र

भाग और कुछ उठाहो ११ गलेकी जड़से कन्धे तक आठअंगुल हो और दोनों भुजाका अन्तर दो ताल और एक ताल स्तन का अन्तर हो १२ दोनों कानों का अन्तर सोलह और कर्ण दाढ़ीका अन्तर आठ अंगुल का कहा है १३ और उसी तरह नाक और कान का अन्तर जानना और उसका आधा नेत्र और कान का अन्तर कहा है मुख चार अंगुल ओष्ठ और मुख से अर्द्ध अंगुल का अन्तर हो १४ और शिरका घेरा बत्तीस अंगुल का कहा है दश अंगुल का चौड़ा और बारह अंगुल का लम्बा १५ और ग्रीवा मूल की परिधि अर्त्थात् घेरा बाईस अंगुल का और हृदय के मूलमें जो घेरा होताहै वह चौवन अंगुल का हो १६ एक अंगुलकम चार तालका हृदय का घेरा होता और स्तनसे पीठ तक बारह अंगुल की मोटाई हो १७ साढ़े तीन ताल दो अंगुल अधिक कमर का घेरा हो चार अंगुल उंचाई और छः अंगुल का बिस्तार हो १८ स्त्री के नितम्ब के पिछले भाग में एक अंगुल अधिक होता है और भुजा के अग्र भागका घेरा सोलह या अठारह अंगुल का होता है १९ हस्त मूलके अग्र भागका घेरा चौदह या दश अंगुल और पैर और हाथके तलका विस्तार पांचअंगुल का हो २० जांघके मूलका घेरा बत्तीस अंगुल काहो और जांघके आगे उन्नीस अंगुल का होता है २१ जंघा मूलके अग्र भाग की परिधि अर्त्थात् घेरा सोलह या बारह अंगुल का होता है और चार अंगुल की मध्यम मूल परिधि है २२ तर्ज्जनी अनामिका अंगुलियों की परिधि अर्त्थात् घेरा साढ़े तीन अंगुल हो और कनिष्ठिकाकी परिधि मूल में तीन अंगुल हो २३ और अपनी मूल परिधि से पाद हीन आगे की परिधि कही है और हाथ पैर अंगूठा की परिधि क्रम से चार और पांच अंगुल परिधि जानो २४ और पैर की अंगुलियों की परिधि तीन अंगुल कहीहै और

स्तन मण्डल और नाभी डेढ़ अंगुल अथवा एक अंगुल कहा है २५ जैसे सब अंग शोभित हों वैसा यथायोग्य बनावै ऊर्द्धदृष्टि अधो दृष्टि आंख मुंदी ऐसी मूर्त्ति न बनावै २६ और कठोर दृष्टि की मूर्ति न बनावै प्रसन्नाक्षी मूर्त्ति बनावै और मूर्त्ति का तृतीयांश या अर्द्धांश देव पीठ बनावै २७ प्रतिमाका दूना तिगुना या चौगुना द्वार बनावै एक या दो या तीन अथवा चार हाथ देवालय का पीठ बनावै २८ और पीठ से दशहाथ ऊंची दीवार करै और द्वार से ऊंची दुमंज़िले की दीवार बनावै २९ उंचाई के सदृश दूना या तिगुना शिखर बनावै एकभूमिको लेकै सवासै गुनाऊंचा करै ३० अपनी शक्तिके सदृश अष्टपत्र कमल के माफिक प्रासाद बनावै और चारों दिशा में मण्डप अथवा चारशाला बनावै ३१ हज़ार स्तम्भ से युक्त प्रासादउत्तम अन्यसम और अधमहैं और प्रासाद या मण्डप में जो शिखर बनावै ३२ तो उसमेंस्तम्भ न लगावै वहां भीतिही सुख प्रद है और प्रासाद मध्य बिस्तार प्रतिमाके चारों तरफ हो ३३ छगुना या अठगुना आगे विस्तारहो और बाहन मूर्त्ति के सदृश या डेढ़ दुगुना कहाहै ३४जहां देवता का रूप नहीं कहाहै वहां चतुर्भुज बनावै और जहां आयुधनहीं कहावहां अभय और बरदे ३५ नीचे और ऊंचे के हाथों में शङ्ख चक्र अंकुश पाश वा डमरु शूल कमल कलश माला ३६लड्डू, मातुलुङ्ग, बीणा, माला, पुस्तक जिसमूर्त्ति में बहुत मुखहों वहां पंक्ति से अस्त्रादि दे ३७ वह मुखग्रीवा और मुकुट ही भिन्नहो परन्तु मुख आंख, कान सुन्दरहों और भुजा जहां बहुतहों वहां स्कन्ध भेदन नहीं है ३८कूर्प्परके ऊपर अङ्ग छोटा चिपटा मजबूत बनावै और पक्ष मूल के सदृश भुज मूल करै ३९ ब्रह्माजीकी मूर्त्ति में चारों ओर मुख बनावै और हयग्रीव, बाराह, नृसिंह, गणेशजी४०इनके मुखको छोड़ अन्य सब नराकार बनावै और नृसिंहको नख बिना

नराकार बनावै ठहरी हुई आसन पै बैठीहुई बाहन पै स्थित४५ इष्टदेव की प्रतिमाको पहिलेकहेहुये के सदृश बनवावै दाढ़ी और पलक मारने से रहित सदा सोलह वर्ष की मूर्त्ति ज्ञात हो ४२ दिव्याभरण और दिव्य वस्त्र संयुक्त दिव्य वर्ण और दिव्य क्रिया सहित होऔर हीनाङ्गी और अधिकाङ्गी देवताकहीं न बनावै ४३ हीनाङ्गीमूर्त्ति स्वामी को मारती और अधिकाङ्गी बनाने वालेको दुबली मूर्त्ति अकाल को देती और मोटीमूर्त्ति रोगकी देनेवाली होती है४४ जिस मूर्त्ति के सन्धि,हड्डी,शिरा गुप्त हों वह सदा सुख देनेवाली होती है और वर,अभय,कमल,शङ्ख से विष्णु की सात्विकी मूर्ति बनतीहै ४५ मृग,बाजा,अभय,बर हाथमें लिये चन्द्रमाकी सात्विकीमूर्तिहोती और बर,अभय,कमल,लड्डुआहाथ में लिये गणेश जीकी सात्विकी मूर्ति होती है ४६ पद्म, माला अभय,बर हाथमें लिये सूर्य्यकी सात्विकी मूर्ति होती और बीणा बिजौरा,अभय,बर हाथमेंलिये लक्ष्मीजीकी सात्विकी मूर्ति होती है ४७ शङ्ख, चक्र, गदा,पद्म आयुधों से अलग अलग विष्णु आदिकी मूर्ति के कःकःभेदहैं४८जिसतरह उपाधिभेदसे संय्योग और बिभाग होता है उसी तरह समस्त व्यस्त वर्ण आदि का ज्ञान होता ४९ लेख्या अर्थात् लिखीहुई लेप्या सैकती अर्थात् बारूकी और मिट्टीकी पीठेकी इन मूर्तियों में लक्षण नहो तो कुछ दोष नहीं कहा ५० नर्म्मदेश्वर स्वयंजात चन्द्रकान्त समुद्भव रत्नकी मूर्ति शालग्राम इन में मान दोष नहीं होता ५१ पाषाण और धातु की मूर्ति में मान का दोष विचारै श्वेत, पीत,रक्त,कृष्ण इन पत्थरों की मूर्ति युग भेद से है ५२ यथा रुचि बनाने वाला बनावै या और कोई कहै श्वेत मूर्ति सात्विकी और पीली लाल राजसीमूर्त्ति होती है ५३ और काले रंगकी मूर्त्ति तामसी जो कहे हुये लक्षणोंसे युक्तहो सोना

चांदी, तांबा, पीतल वा कृतादि की ५४ शङ्कर की श्वेत बर्ण और विष्णु की मूर्त्ति कृष्ण बर्ण सूर्य्य, शक्ति, गणेश ताम्र बर्ण कही हैं ५५ लोहा या शीशा की चल हो अथवा स्थिर हो जैसा बुधों ने कहा है बनावै और प्रासादादि पहिले कहे हुये लक्षणों के सदृश बनावै ५६ सर्ब्ब सुखकी नाश करने वाली अन्य प्रतिमा का स्थापन न करै सेव्य सेवक भाव में प्रतिमा का लक्षण कहा है ५७ प्रतिमा के जो दोष वह सर्ब्बत्र ईश्वर चित्त पूजक के तपोबल से क्षण में नाश को प्राप्तहोते हैं ५८ देवता के सम्मुख मण्डप में बाहनको धरै सुन्दर चोंच और आंख से युक्त द्विबाहु गरुड़जी कहे हैं ५९ नराकार चोंच, मुख, मुकुट, कवच, बजुल्ला धारण किये हाथ जोड़े नम्र शिर और सेवा करने के योग्य चरण में दृष्टि लगाये ६० जो जो पक्षी देवतों के बाहन हैं और सिंह वृष आदि ये काम रूप धरहैं जब जैसा रूप चाहतेहैं धर लेते हैं ६१ इन के नाम के सदृश बुध लोग सदा बनावैं सुन्दर भूषण पहिने देवता के आगे मण्डप में ध्यान तत्पर रहैं ६२ बिलार के सदृश पीला काले चिन्ह बड़ा शरीर गलकेश रहित ब्याघ्र कहाता है और सूक्ष्म कटि सिंह होता है ६३ बड़े भौंह, कपोल, नेत्र, भाल रेख मनोहर गलकेश युक्त धूसर अकृष्ण लांछन महा बली ६४ ब्याघ्र और सिंह में गलकेश और लांछनों से भेदहै कामसे भेद नहा गजाननको नरके सदृश छोटा कान बड़ा पेट ६५ बहुत पुष्ट और सघन कन्धा चरण हाथ हों और बड़ी सूंड़ टूटा बायां दांत बाहन को देखते हुये ६६ थोड़ी टेढ़ी सूंड़ को बाजूमें डारे बिराजित सन्धि और धमनी की हड्डीगूढ़ सदा मान संयुत ६७ साढ़े चार तालमित समस्त शुण्डा दण्ड दश अंगुल मस्तक भ्रूगण्ड चार अंगुल ६८ बाकी सूंड़ नाक और ऊपरका ओष्ठ रूप सपुष्करा कहाती है दशांगुल कानकी लंबाई

और ओंठ अंगुल बिस्तार ६९ कानोंके बीचका व्यास दो अंगुल एक ताल और मस्तक का घेर छत्तीस अंगुल हो ७० नेत्रो-पान्तमें परिधि अर्थात् घेरा मस्तकके तुल्य सदा जानना और नेत्र के नीचले भाग की दो अंगुल दो ताल ७१ कर और करा-ग्र पुष्करमें दश अंगुल परिधि तीन अंगुल गले की लम्बाई और परिधि तीस अंगुल ७२ पेट में तोंद चार ताल का और ब-नाने वाले को चाहिये छः अंगुल या अष्टांगुल बनावै ७३ छः अंगुलका लम्बा दांत और उसके जड़का घेरा भी छःअंगुल करै नीचे का ओष्ठ छः अंगुल अकमल युत पुष्कर ७४ जांघ की जड़की परिधि छत्तीस अंगुल और जांघके आगेकी परिधि तेईस अंगुल ७५ जंघा के मूल की परिधि बीस अंगुल और बाहु मूल आदि की परिधि दो अंगुल अधिक दो अंगुल ७६ काननेत्र का अन्तर सदा चार अंगुलका और मूल मध्य अग्र का अन्तर दश सातछःअंगुल काहो ७७ नेत्रके जानने वाले गणेशके नेत्रमें विशेष कहाहै उंचाई और मोटाई जैसी स्त्रियोंके कुचमें होतीहै उसी तरह हो ७८ स्त्रीकी कटि में दो अंगुल अधिक तीन ताल की परिधि होतीहै और अन्य सम्पूर्ण स्त्रियोंके अंगको सात ता-लमें विभावना करै अर्थात् विभाग करै ७९ सात तालके मान में भी मुख बारह अंगुल का होता और बाल आदि की दीर्घता पृथक् पृथक् ले ८० लड़के का गला छोटा होताहै शिर बढ़ाहो-ताहै बालकके गलेके नीचे जिस्तरह बढ़ताहै उस तरह शिर न-हीं बढता ८१ कण्ठ के नीचे मुख के प्रमाण से साढ़े चार गुना बढ़ताहै द्विगुण लिंग पर्य्यन्त बाकी नीचेका शेष हड्डियों से ८२ सवा दूना हाथ पांय और मुखमें दुगुना नले मुटाईमें मान न-हीं है जैसा देख पड़ै कल्पना करै ८३ पांच बर्षके ऊपर बाल-क नित्य बढ़ताहै सोलहवें बर्ष बालक सर्वाङ्ग पूर्ण स्त्रीके योग्य

पुरुष होता है ८४ तबसे सप्ततालादि प्रमाण के योग्य होताहै कोई लड़कपन में शोभा युक्त होता कोई जवानीमें कोई बुढ़ापेपें ८५ मुखके नीचे तीन अंगुल गला और नव अंगुल हृदय और पेट, बस्ति, सक्थि अठारह अंगुल ८६ घुटना तीन अंगुल और जंघा अठारह अंगुल गुल्फके नीचे तीन अंगुल यही सात तालहैं ८७ चार अंगुलका गला हृदय दश अंगुल दश अंगुलका पेट औ दश अंगुल की बस्ति ८८ इक्कीस अंगुल सक्थि और जानु चार अंगुल इक्कीस अंगुल जंघा और गुल्फके नीचे चार अंगुल ८९ आठ ताल प्रमाण का यह सदा प्रमाण कहाहै तेरह अंगुल मुख और तेरह अंगुल हृदय होता है ९० उदर और बस्ति को दश ताल सदा ले गुल्फ के नीचे और गला पांच अंगुल कहेहैं ९१ छब्बीस अंगुल सक्थि उसी तरह छब्बीस अंगुल जंघा एक अंगुल मस्तक का मणि इस तरह दश तालमें कल्पना करै ९२ पचास अंगुल भुजा दश तालमें कहेहैं और हीन प्रमाणमें दोदो अंगुल न्यून करता जाय ९३ शोभा के सदृश चतुरता के साथ सम्पूर्ण मानोंमें कल्पना करै नव तालके प्रमाणसे न्यूनाधिकय देखै ९४ दश तालमें चरण पन्द्रह अंगुल और हीन प्रमाण में एक एक अंगुल न्यून करदे ९५ मूर्त्ति भेदके जाननेवाले श्रेष्ठमान में भी हाथ की मध्यमा अंगुली को पांच अंगुलसे कम और छः अंगुल से अधिक नहीं कही है ९६ मूर्त्ति बनाने वाला कहींतो बालक के सदृश और सदा जवानके सदृश बनावे वृद्धके सदृश कभी न बनावै ९७ इस प्रकारके देवताको राजा अपने राज्यमें स्थापित करै और प्रति वर्ष उन देवताओं का उत्सव देखै ९८ देवालय में मान हीन और टूटी हुई मूर्त्ति स्थापित न करै और देवोंके पुराने स्थान और पुराने देवता का यत्नसे उद्धार करै ९९ देवता को आगे करके नाच आदि को देखै अपने भोग में मदा-

ध न हो सदा यत्न पूर्वक राजारहै५०० प्रजाओंने जो २ उत्सव धारण किया है उस को राजा पालता रहै प्रजा के आनन्द में प्रसन्नरहै और प्रजा के दुःख में दुःखी हो १ व्यवहार को देख के दुष्टों का निग्रह करै ऐसी प्रजा आज्ञाको मान्ती और अधीन रहती है २ शत्रु अपने इष्ट प्रयोजन का हानि कारक होता और दुष्ट पाप का प्रचार करताहै प्रजाका पालन यही इष्ट सम्पादन है ३ शत्रु के अनिष्ट करणसे निवृत्ति शत्रुनाश है और जिस राजाने दुष्टों को निकाला उसने पापाचार को निकाला ४ प्रजा का धर्म्म पै चलने का कारण सदसद्विवेक है और जिस्से अर्थ सिद्धि हो वह व्यवहार है ५ धर्म शास्त्रके अनुसार क्रोध लोभ वर्जित व्यवस्थापक मन्त्री ब्राह्मण पुरोहित सहित ६ एकाग्र चित्त हो क्रम से व्यवहारों को देखै एकमनुष्य कार्य्य को न दे और दोनों बादियों के बचन को सुनै ७ राजा एकान्त स्थित हो या सभा वालों को अपने निकट बैठाके पक्ष पाताधि रोप के पांच कारणों को देखै ८ राग,लोभ,भय, द्वेष दोनों बादियों से सुनै और जो राजा सुखी होके पड़ा रहता है पुरके कार्य्यको नहीं देखता ९ वहराजा प्रत्यक्ष घोर नरकमें पड़ताहै जो अधर्म्म या अज्ञानसे कार्य्य करता है १० ऐसे दुष्ट राजा को थोड़े दिनमें शत्रु जीतलेते हैं अस्वर्ग्य लोक नाश शत्रुकी सेना का भय देने वाला होता है ११ राजा के बचन की कृति आयु और बीज हरहै इस्से राजा शास्त्रानुसार कार्य्य करै१२ जो राजा आप कार्य्य विनिर्णय न करै तो वेदके जानने वाले अपने स्थान पर ब्राह्मणको नियुक्त करै १३ इन्द्रिय जित कुलीन मध्यस्थ अनुद्वेग कर स्थिर परलोक से भीतधर्म्मिष्ठ उद्युक्त क्रोध बर्जित वह ब्राह्मण ऐसाहो १४ और जो ब्राह्मण पण्डित न हो तो क्षत्रिय को नियुक्त करै या धर्म्म शास्त्रज्ञ वैश्यको नियुक्त करै शूद्रको कभी न करै १५ जिस बर्णका राजा

हो उसी वर्ण वाले को अपनी जगह पर नियत करै क्योंकि उस वर्ण में बहुधा बुद्धिमान् लोग उत्पन्न होते हैं १६ व्यवहार का जानने वाला प्राज्ञ वृत्त शील गुण युक्त शत्रु और मित्र में समान धर्म्मज्ञ सत्यवादी १७ निरालस जित क्रोध काम लोभ प्रिय बोलने वाला ऐसे मनुष्यों को सब जाति में राजा मुसाहिब करै १८ किसान काम करने वाला राज ब्याज लेनेवाला नाचनेवाला चिन्हीं चोर ये लोग अपने धर्म्म के सदृश निर्णय करैं १६ इनका निर्णय आपस में न हो तो अन्य अपनी जाति वाले से निर्णय करावै और ब्राह्मणों के आश्रम में झगड़ा हो २० तो अपना हित चाहने वाला राजा कुछ न कहै और तपस्वियों के कार्य्यको त्रैविद्य करावै २१ मायावी योगियों और अच्छे ज्ञानी को क्रोध करके उपदेश न करै २२ उत्तम जाति वाले और आचार्य्य गुरू तपस्वी आरण्यक आपस में करैं और सार्थिक सार्थिक के साथ काम करै २३ सेना वाले सेना वालों के साथ और गांववाले दोनों तरफ के लोगों के साथ जो जिस काममें नियुक्तहो वह उसको पूर्ण करै २४ वहांके गुण दोष को वहीलोग बिचार सक्तेहैं और राजा परीक्षा लियेहुये सभासदों को मुकर्र्र करै २५ व्यवहार के बोझे के लेजानमें जो बैल के सदृशहो लोक वेद और धर्म्म के जानने वाले सात पांच अथवा तीन को नियुक्त करैं २६ जहां ब्राह्मण लोग सभामेंहों वह सभा यज्ञसमान है वहां अच्छे चतुर बनियोंको श्रोता नियुक्त करै २७ अनियुक्तहो अथवा निधर्म्मज्ञ धर्म्म कहने के योग्य है यथार्त्थ शास्त्रका जानने वाला देववाणी कहता है २८ सभा में जाय नहीं असमंजस न कहै कहै या चुप रहै तो मनुष्य पापी होता है २६ जिसका भली भांति राजा कुल पांति गण जानताहो वे लोग साहस और चोरी को छोड़ अन्य कार्य्य करैं ३० श्रेणीवाले बिचार करके करैं ज

कुल वालों ने न बिचारा हो और जो श्रेणी वालों ने न जाना हो तो उसको गणवाले करैं और गणवालों ने जाना हो तो उसको नियुक्त करैं ३१ कुलवालोंसे सभावाले अधिकहैं और सभावालों से नायब अधिक है और धर्म्म अधर्म्म का नियोजक राजा सब से अधिक है ३२ उत्तम अधम मध्य बिवादोंके बिचारसे सब बुद्धियों के ऊपर ईश्वर बुद्धि होती है ३३ एक शास्त्र का पढ़ने वाला कार्य्य निर्णय को नहीं जानता इसलिये बहुत शास्त्र जानने वाले को बिवाद में राजा नियुक्त करै ३४ आत्मज्ञानी जो कहता है वही धर्म्म है और एक या दो अथवा तीन बारका बिचार करता है ३५ राजा श्रेष्ठ सभासदों को अलग कार्य्यदे अर्थी और प्रत्यर्थी को राजा सभा वालों के द्वारा देखता रहै ३६ सभा के लोग धर्म्मवाक्य से उनका रंजन करैं और उनका भय छुड़ावैं राजा ऐसे सभासद नियत करै जो स्मरण रक्खैं गणक औरकारकुनहों ३७ सोना अग्नि जल और स्वपुरुष दश साधन ये दशाङ्ग करण जिस राजामें हों ३८ जिस सभाकी न्यायमें मति हो वह सभा यज्ञके समान है और इन दशोंके अलग २ काम कहे हैं ३९ मालिक वक्ता शिक्षा करनेवाला सभा वाले कार्य्यकी परीक्षा करने वालेहों स्मृति निर्णयके करने वाले जयदान अथवा दम ४० शपथ के लिये सोना और अग्नि और तृषित और क्षुब्धके जल गणक अर्थको गिनै और लेखक न्याय लिखै ४१ शब्दके तत्त्व के जानने वाले गिन्तीमें निपुण पबित्र अनेक तरह के लेखके जानने वाले ऐसे गणक लेखक को राजा नियुक्त करै ४२ धर्म्म शास्त्र के अनुसार अर्थशास्त्र विवेक करै स्थानमें यात्रा करै वही अधिकरण है ४३ ब्राह्मण और मन्त्रज्ञ मन्त्रियोंके साथ राजा नम्रता सहित सभा में जाय ४४ धर्म्मासन पै स्थित कार्य्यका प्रारम्भ कर पूर्व्व उत्तर में सम होके राजा बिवादीसे पूछै ४५ प्रतिदिन देश दृष्ट और

शास्त्रदृष्ट हेतुओंसे जाति देश और श्रेणीके धर्म्म ४६ कुल धर्म्मको देखके अपने धर्म्मका पालन करै और देशजाति कुलमें जोधर्म्म प्रथम प्रवृत्त होरहे हैं ४७ उनका उसी तरह पालन करै अन्यथा प्रजा घबड़ा जातीहै दक्षिणी ब्राह्मण मामाकी लड़कीके साथ बिवाह करते हैं ४८ मध्य देश में कर्म्म कर शिल्पी विषादक मछली खानेवाले मनुष्य और स्त्री व्यभिचार रतहैं ४९ उत्तरदेशमें स्त्री मद्यप हैं और रजस्वला स्त्रीको सब स्पर्श करते हैं और खसदेश वाले बिना स्वामीकी भाईकी स्त्रीका ग्रहण करतेहैं ५० इन कर्म्मोंसे ये प्रायश्चित्तके योग्य नहीं होते जिनके परम्परासे प्राप्त प्राचीनों ने किया है ५१ वे लोग उनसे दूषित नहीं होते दूसरे के आचार को नहीं करते और राजा मध्यान्ह में न्याय को देखै और पूर्व्वान्ह में स्मृति को ५२ मनुष्य मारण साहस चोरीके काम में इसमें काल नियम नहींहै शीघ्र विवेक करै ५३ मन्त्रियोंके साथ धर्म्मासन पै बैठे राजाको देख निकट जाके जो अधर्म्मसे घिरा हो कहै ५४ सत्य बिचारके या लिखवाके एकाग्र चित्त हो हाथ जोड़ नमस्कार कर अपने प्रयोजन को कहै ५५ ब्राह्मणों सहित राजा यथायोग्य आदर करके सान्त्वसे समझाके अपने धर्म्मको कहै ५६ समय पै कामवाले नम्रसम्मुख खड़े हुये से राजा पूछै कि तुम्हारा क्या कामहै डरोमत कहो ५७ किस्से कहां कब केहि दुरात्मासे तुम पीड़ित हुये इसप्रकार पूछके राजा उसके बचनको सुनै ५८ प्रसिद्धलेख और भाषा करके उसके कहे हुयेको लेखक लिखै और जो अर्थी प्रत्यर्थीका बचन उसको अन्यके कहेके सदृश भी लिखै ५९ राजा चोरकी तरह लेखकको त्रास दिखावै अगर लिखने वाला अच्छी तरह नहीं लिखा तो सभा वाले कभी न कहैं ६० जबरदस्ती उससे लिखवाया है तो लिखनेवाले को चोरकी तरह दण्ड दे और राजा न हो तो प्राड्वि-

वाक सभामें पूछै ६१ अथवा प्राड्विवाक दोनों बादियों से पूछै और सभावालोंके साथ बिचार करके धर्म्म अधर्म्म कहै ६२ सभा के हित योग्य सभ्य उत्तम हैं और स्मृति आचार से हीन मार्ग्ग करके दूसरेके कहने में न आवैं ६३ जो राजासे कहा जाय वह व्यवहार है राजा और राजपुरुष स्वयं कार्य्य न उत्पन्न करैं ६४ प्रेम लोभ क्रोध से किसी को राजा न दबावै अपनी बुद्धि से पराये अर्त्थ को भङ्ग न करै ६५ छल और अपराध राजा के स्थान हैं बतलाने वाले बिना राजा इनका ग्रहण करै ६६ सूचक और स्तोभक से उसकी मुख्यताको देखै शास्त्र अर्त्थी की निन्दा कर राजा कुछ नहीं करता जो पहिले कहि दे वह स्तोभक कहलाता है और परायेके दोष देखने के लिये राजा जिसको मुकर्रर करै ६७ और आके राजा से कहै वह सूचक है और राह बिगाड़ने वाला पराक्षेत्ता कोटका लांघने वाला ६८ जल स्थान और घरका बिगाड़ने वाला भरी खन्दक भाठनेवाला राजा छिद्रका प्रकाशक ६९ अन्तःपुर बासगृह भाण्डागार रसोई इन स्थानों में बिना भेजा हुआ जाय और भोजन को देखै ७० बिष्टा मूत्र थूक बात इनको जानके राजाके आगे छोड़ै और पलंग पर आसन लगावै और आगेकी जगह रोकै ७१ राजासे भी उत्तम पोशाक पहिननेवाला धरे पै छिप जाय और जो छोटे दरवाजे होके कुबेलामें जाय ७२ शय्या आसन पादुका शयनासन पर बैठना राजा के सोने के समय जो समीप रहै ७३ राजशत्रु सेवी बिना दिये हुये आसन पै बैठने वाला अन्य का बस्त्र आभरण सोनेका पहिरने वाला ७४ अपनेआप ताम्बूल लेके खानेवाला बिनापूछे कहनेवाला राजनिन्दक ७५ एक बस्त्र तेल लगाये बालखोले अवगुण्ठित बिचित्रिताङ्ग माला पहिने ऊपरका बस्त्र बेकायदे ओढ़े ७६ शिर के बल झांकनेवाला छिद्रके ढूंढ़नेमें तत्पर आसङ्गी बाल

खोले नाक कान नेत्रका दिखानेवाला ७७ दांतको रंगे नाकका-
नको सिकोरनेहारा राजाके समीप ये पचास कुलहैं ७८ आज्ञाके
न माननेवाले स्त्री बध बर्ण संकर पर स्त्री गमन चोरी पतिबि-
ना गर्भ ७९ बचनकी कठोरता थोड़े अपराधमें बड़ा दण्ड गर्भ
का पतन ये दश अपराध हैं ८० उत्कृती सस्यघाती अग्नि देने
वाला राजद्रोह कर्त्ता राजमुहर का ताड़नेवाला ८१ राजाकी स-
लाह तोड़ने वाला बंधेहुये को छुड़ानेवाला अस्वामि धान्य का
बेचनेवाला या किसीका देडालै जो दण्डको ढूंढ़ै ८२ नकारेके बा-
जनेका ढाकनेवाला बिना मालिक का द्रव्य लेने वाला राजाकी
बस्तु लेनेवाला अपराध बिनाशन ८३ इनबाईस पद को पण्डि-
त लोग राजाके जानने योग्य कहते हैं उन्मत्त क्रूर वाक् क्रूरवेष
गर्ब्बित तेज ८४ साथ बैठनेवाला अतिमानी बादी दण्ड पाता है
किसी अर्थीने जिसकी नालिशकीहो ८५ सबकेसमझनेवालीजो
प्राड्बिवाक आदिमें पहिलेअर्थीसे पूछके यथार्थबिचारकरके८६
प्रार्थितहोके हीनकी पूर्णताकरके बहुत गवाही न दे और बादीको
गवाहोंके सहित राजा मुहरकरै ८७ पक्षका प्रयोजन बिना जाने
जो उत्तर दिलाताहै प्रीति लोभ भय बिरुद्धस्मृति जो अधिकारी
उत्तर देताहै ८८ ऐसे सभावालेको दण्डदेके राजा अधिकार से
गिरादे जिस्से ग्राह्य अग्राह्यका सबलोग समाश्रय करैं ऐसे बि-
वादको विचारै८९ जिसनेपूर्ब्ब पक्षकियाहो उसको राजा रोक ले
राजाकी आज्ञासे सत्पुरुष सत्यमीठे बचनसे९० निरालस दिलकी
बात जाननेवाले दृढ़ शस्त्र अस्त्रके धारण करनेवाले बक्तव्य अर्थ
में न टिकनेवाला उनके बचनका टालने वाला ९१ अर्थी जबतक
बुलाया न जाय तबतक प्रत्यर्थीको शपथ अथवा राजाज्ञा से बाद
वालेको निषेधकरै ९२ कालकृत स्थानासेध प्रवासके कर्म्मसे हो
वह आसेध चार तरहकाहै असिद्धनहीं टालसक्ता९३ जो इन्द्रिय

के निरोध बाणी और स्वासके बात अनासेधसे आसेधकरै वह दण्ड्यहै अति क्रमी नहीं ६४ आसेधका समय आसिद्ध है आसेध को जो टालताहै वह अन्यथा करनेके योग्यहै और आसेध करते हुये दण्डके योग्य नहीं होता ६५ राजा जिस पुरुषका अभियोग तत्त्व या आशंकासे करताहै उसको चपरासी या सेवकसे बुलावै ६६ असत् के साथ से शङ्का होती है अथवा जिसमें शङ्का होचुकी है उस्के करनेसे वोढ़ाके अभिदर्शन से चतुरलोग तत्वको जानतेहैं ६७ अयोग्य बाल वृद्ध बिषम क्रिया कुल कार्य्य घात में व्यसनी नृप कार्य्योत्सवा कुल ६८ प्रमत्त मत्त उन्मत्त दुःखी सेवकों को राजा न बुलावै और हीन पक्षा युवती कुलीन बच्चेवाली ऐसी स्त्री को भी राजा न बुलावै ६९ ब्राह्मण की कन्या और जाति की स्त्री बिवाहोद्यत रोगार्त्त यज्ञ कर्त्ता बिपद्गत इनको राजा सभामें न बुलावै ६०० किसी के कामपर बैठा और राज कार्य्य पै उद्यत और गऊ चराते गोपाल बीज बोतेहुये खेती वाला १ कारीगर काम करता सिपाही युद्ध करता अब्यात्त व्यवहार दूत दान देता हुआ वृती २ सङ्कट स्थान स्थित आसेध्या इनको राजान बुलावै नदी तरने वाला बन कुदेश उपद्रवमें पड़ा ३ पराधीन आसेध अपरार्धी नहीं होता काल देश जानके राजा कार्य्य का बलाबल देखै ४ अकल्प बालक आदि को राजा सवारी पर चढ़ाके बुलावै और जो बनमें संन्यासी आदि रहते हैं उनके गौरव के सदृश ५ व्यवहारका नजाननेवाला अन्य कार्य्यसे आकुल राजा संन्यासी आदिको प्रसन्नता पूर्वक ले आवे ६ बादी और प्रतिबादी दोनों को बुध मुख्तार करै जो खुद अधृष्ट जड़ उन्मत्त वृद्ध स्त्री बाल या रोगीहो ७ पहिले या पीछे बन्धु कहै या मुख्तार कहै पिता माता हित बन्धु भाई सम्बन्धी अथवा ये कहै ८ जो अर्ज़ी देतो बाद प्रवृत्त होता है और जो कोई अज्ञान से कोई कर्म्म करावै

९ वह उसीका किया समझा जायगा उसका अपराध न मिटैगा जो उस मुकद्दमेमें नियुक्तकिया जाय उसकी बिवादसे सोलहवां अंशमजदूरीदे १० इस्से अधिक मजदूरी ले तो दण्डके योग्य होता है और राजा अपनी बुद्धिसे मुख्तार न करै ११ लोभसे मुख्तार अन्यथा करै तो दण्डपावै जो भाई पिता पुत्र न होय और मुख्तार न होय १२ व्यवहार में कहता हुआ जो परार्थ बादी है वह दण्ड के योग्य है क्योंकि कुटुम्बिनी स्वैरिणी गणिका उसके आधीन रहती १३ बिना कुल की स्त्रियां पतित होतीं उनको सभा में राजा बुलावै और झगड़ेको जारी करके बादी प्रतिबादी मर जायं १४ तो उनके पुत्र जानते होंतो बिवाद करैं नहीं तो झगड़ा निवृत्त किया जाय और मनुष्य घाती चोरी पर स्त्री गमन १५ अभक्ष्य भक्षण कन्या हरण दूषण कड़ाई कपट राजद्रोह साहस १६ ऐसेपापों में आपही बिवाद कर सक्ता है कोई उस्की जगह पर दूसरा नहीं कर सक्ता है और अहङ्कार बन्धु बलसे युक्त जो राजा के बुलाये न आवै १७ तो उसके अपराधके सदृश राजा दण्ड दे और सिपाहीके बुलाने से जो क़ैदी न आवै और उस्से बिवाद करै १८ ऐसा हाल देखके राजा सिपाही और क़ैदीका ज़ामिनले और वह ज़ामिन कहैकि जो इनको देना पड़ैगा वह देंगे या हाज़िर करदेंगे १९ यह शिक्षा हम तुम को देते हैं कि इससे तुमको कुछ भय न होगा और जो नहीं किया वह करैंगे इसीसे तुम सत्यहोगे २० यह इसी तरह है मिथ्या नहीं है इस्से निरालसहो अङ्गीकार करै धृष्ट बहु विश्वासी आधीन विश्रुत धनी २१ कार्य्य निर्णय में समर्थ दोनों का ज़ामिन ले और विवादियों को राजा रोकके फैसला करै २२ स्वपुष्ट हो अथवा राजपुष्ट हों स्वभृत्य हों या पुष्ट रक्षक हों ससाधन कपटकी शङ्काकरके तत्वकी इच्छाकरै २३ प्रतिज्ञा दोष निर्मुक्त

साध्य साधन से युक्त निश्चित लोक सिद्ध पक्ष जानने हारे पक्ष कहते हैं २४ अन्यार्थ अर्थहीन प्रमाण और आगम से बर्जित लेख्य हीन बहुत भ्रष्ट ये भाषा दोष हैं २५ निर्बाध अप्रसिद्ध निरर्थ निष्प्रयोजन असाध्य बिरुद्ध ऐसा पक्षा भासहै सेा बर्जित है २६ न किसी ने देखा न सुना वह अप्रसिद्धकहाता है गूंगे ने हमको शाप दिया और बन्ध्या पुत्र ने हमको मारा २७ यह हमारे घर के निकट पढ़ता और सुन्दर स्वर से गाता और अपने घरमें बिहार करता है और हमारे घरके निकट मार्ग होकर जाता है २८ यह निराबाध और निष्प्रयोजन है और सदाहमारी दी हुई कन्यामें यह बिहार करता है २९ यह कन्या गर्भ को धारण किये मारने के योग्य नहीं है और यह जामाता मरने पैभी न कहैगा इसने ऐसा क्यों किया यह असाध्य बिरुद्धक है ३० हमारे दिये हुये दुःख सुखसे लोक दुःखी और सुखी होता है यह निरर्थ या निष्प्रयोजन है ३१ और काम सुना के उसका त्याग करके और सुनावै अन्यके पक्षाश्रय से कहै वह हीन दण्डय कहाता है ३२ पूर्व पक्षके निश्चय होने और ग्राह्याग्राह्य से बिशुद्ध होने प्रतिज्ञा के अर्थ स्थिरी भूत होने उत्तर पक्ष लिखावै ३३ इस में पहिले मुद्दई तत्पश्चात् मुद्दाअलेह से पूछके प्राड्विवाक और सभा वाले उत्तर दिलावें ३४ सुने हुये अर्थ का उत्तर लिखै और बादी के सम्मुख कहै पक्ष का व्यापक सार असन्देह और अनाकुल है ३५ जिसके बयान को टीका बिना सब समझैं वह निर्दोष है सन्दिग्ध अन्य की बोली में हो थोड़ाहो अथवा अधिक हो ३६ पक्ष के एक देश में जो व्याप्य हो वह कभी उत्तर नहीं हो सक्ता और जो बुलाया हुआ कुछ न कहै वह हीन दण्ड के योग्य है ३७ पूर्व पक्ष यथार्थहै उसमें जो उत्तर न दे तो साम आदि उपायोंसे प्रतिवादी उत्तर

दिलावै ३८ मोह अथवा शठता से पूर्व्व बादी ने जो नहीं कहा तो बाकी उत्तर दोनों के प्रश्न से ले ३९ उत्तर चार प्रकार का होता है सत्य मिथ्या प्रत्यवस्कन्दन पूर्व्व न्याय बिधि ये चार प्रकार के उत्तर हैं ४० बादी का कहा हुआ यथार्त्थ का अङ्गीकार सत्योत्तर कहाता है और उसी को प्रतिपत्ति कहते हैं ४१ बयानको सुन के दूसरा निषेध करै और शब्द और अर्त्थसे भी वही मालूम हो वह मिथ्या उत्तर कहाता है ४२ यह मिथ्याहै हम नहीं जानते उस समय वहां हम नहीं थे तब हमारा जन्म ही नहीं हुआ था ये चार प्रकार के मिथ्या हैं ४३ बादी ने जो अर्त्थ लिखाहै उसको प्रतिबादी भी उसी तरह कहै और मानने का कारण कहै वह प्रत्यवस्कन्दन कहाता है ४४ इस में पहिले हमारा और इनका झगड़ा हो चुका है यह जीत गये थे ऐसा कहै तो वह पूर्व्व न्याय हुआ ४५ जय पत्र सभा वाले और गवाहों से सत्य जानके पूर्व्वहीं हमने जीता है यह प्राङ् न्याय तीन प्रकार का है ४६ बादी प्रतिबादी के सम्मुख जो सभा वाला पक्षका उत्तर ग्रहण न करै तो चौरवत् दण्ड के योग्यहो ४७ लिखि कै भली भांति शोधै जो निर्दोष उत्तर हो तो वह बादी प्रतिबादी का क्रिया कारण कहलाता है ४८ आद्य पाद पूर्व्व पक्ष दूसरा उत्तरात्मक तीसरा क्रियापाद चौथा निर्णयात्मक ये चारों चरणोंके नामहैं ४९ कार्य्य को साध्य कारण को क्रिया कहते हैं तीसरे पाद में क्रिया करके कहा जाता है ५० प्रतिपत्युत्तर बिना चतुष्पाद व्यवहार है क्रम से आये हुये बादों को कार्य्य गौरव से देखै ५१ जिसमें अधिक पीड़ा होयतो उस में कार्य्य भी अधिक होताहै वर्णके अनुक्रम से प्रथम पूछै ५२ सभावाले उत्तर की कल्पना करके भावनादे साध्य के साधनके लिये जो किया जाय वह भावना है ५३ सम्पूर्ण प्रतिज्ञात को

लिखितम आदिसे बिचार करै एकही बिवाद में दोनों बादी की क्रिया नहीं होसक्ती ५४ पूर्व्वबादी खराब क्रिया कारण प्रतिपादन करै तब तक न्याय से पहिले प्रतिबादी बयान करै ५५ मुकद्दमा दो प्रकार का है एक सत्यानुसारी भूत दूसरा छलानुसारी भव्य सत्य सत्य अर्थ को कहता और छल झूंठा होताहै ५६ कारण से पूर्व्व पक्ष उत्तरत्व को प्राप्तहोता है इससे बादी शीघ्रही अपने अर्थ साधनको लिखावै ५७ वह साधन दो तरह का है एकमानुष दूसरा दैविक और लिखितभी तीन प्रकारकाहै भुक्ति अर्थात् १ भोग २ साक्षी ३ मानुष ५८ दैवघटादि सो भव्य मानुषमें युक्त करै युक्ति और अनुमानसे सामादिक उपाय करै ५९ राजा साधनके देखने कालको न देखै कालके देखनेसे धर्म्मकी हानिमें राजाको बड़ादोष होताहै ६० बादी प्रतिबादी के सम्मुख अपना साधन दिखावै दोनोंके एकत्र न रहने पै राजा उनका बाद न सुनै ६१ बिवादी बादीके साधनमें जितनेदोषहों सम्पूर्ण गूढ़ हों या प्रकट काल शास्त्रके मुताबिक कहै ६२ और वृथा दोषदेतो दण्ड पावै जो साध्यके लिये हीनहो साधन को भली भांति बिचारके कार्य्यका निर्णय करै ६३ झूंठ साधन करने वाला कार्य्य के सदृश दण्डके योग्य होताहै और झूंठी गवाही देनेवाला और गवाही देके और कुछ कहने वाला ये दूना दण्ड पावैं ६४ यह अभीका लिखाहै यह मैं ठीक कहता हूं यह मुझको ऐसा यादहै कि ब्रह्माजीने लिखाहै ६५ लिखित दो प्रकारका है एक राजकीय दूसरा लौकिक वह अपने हाथसे लिखा हो औरसे लिखाया हो ६६ गवाही बिना या गवाही इस हित इसकी सिद्धिलोक व्यवहारके मुताबिकहै भोग दान क्रिया यान प्रतिज्ञादास ऋण आदि भेदसे ६७ सात प्रकारका लौकिक है और तीन तरहका राज शासन एक शासनार्थ दूसरा ज्ञापनार्थ तीसरा निर्णयार्थ

६८ राजा के हाथ से संयुक्त मोहर या चिन्हित कहाता है और राजा का लिखाहुआ प्रजाओं के लिये मुद्रित कहाता है ६९ लिखने का काल वर्ष मास पक्ष तिथि बेलादेश विषय स्थान जाति सूरत उम्र ७० साध्य प्रमाण द्रव्य संख्या अपना नाम और राजा का क्रम से नाम निवास और साध्य नाम ७१ क्रम से तीन पुरुषा का नाम और एक पक्षमें क्षमा चिन्ह अन्य पितरोंका नाम कहके लिखावे ७२ जहां ये सम्पूर्ण न लिखे वह हीन लेख है क्रम और अर्थमें भिन्न या व्यर्थ हो वह लेख निरर्थक है ७३ बहुत कालका लिखाया जो है वह साधन के योग्य नहीं है और अनजान और स्त्रीसे जबरदस्ती से लिखाया भी साधन योग्य नहीं ७४ उत्तम लेख और दिव्य भोग गवाहीसे लेख प्रमाणीक होता है इससे व्यवहारमें मनुष्य इस लोक में सुखी होता है ७५ स्वेतरकार्य्य विज्ञामी ऐसे साक्षी बहुतहैं दृष्टार्थ श्रुतार्थ कृत और अकृत दो प्रकार के हैं ७६ बादी प्रतिवादी के निकटमें अनुभूत ऐसा दर्शन और श्रवणसे जो साक्षी देता हो वह प्रमाणीक गवाह है ७७ जिसकी बुद्धि और स्मृति उपहत न हो और सुनेहुये को बहुत दिन तक याद रक्खे वह साक्षी होने के योग्य है ७८ यह बात प्रसिद्धहै कि सत्य बचन गवाह एक आधे मनुष्यहैं और दोनों तरफ धर्म्मसे कहनेवाला ऐसाभी एकही है ७९ यथा जाति यथा वर्ण सब सबमें साक्षी होतेहैं गृहस्थ पण्डित जो किसीके बसा न हो ये पराधीन नहीं होते ८० जवानका जवान स्त्री की स्त्री सम्पूर्ण साहस और चोरी और संग्रह में साक्षी करै ८१ कठिन बचन और कड़ाईमें गवाहीकी परीक्षा न करै अज्ञानसे बाल असत्यतासे स्त्री और पापसे छली ८२ बान्धव स्नेह से गवाही देता और बैरसे शत्रु और अभिमानसे विजाति और लोभसे शठ गवाही देता ८३ जीविका के सङ्कोच से भृत्य लोग गवाही

के योग्य नहीं हैं और उसी तरह धन विद्या जवानी के सम्बन्ध वाले भी गवाही के योग्य नहीं ८४ किसी श्रेणी या वर्ग्गमें जो कोई शत्रु हो तो उसकी उनके लिये गवाही नहीं होसक्ती क्योंकि वे सब आपसमें शत्रुहैं ८५ राजा गवाहोंके कहने पर समय को न लगावै बादी प्रतिबादी को अपने सम्मुख ८६ प्रत्यक्ष में गवाहीले परोक्षमें न ले जो गवाही अङ्गीकार न करै वह दण्डपावै ८७ जो प्रत्यक्ष गवाही न दे और बुलाने पर न आवै और झूंठ सांच कहदे वह नराधम दण्डके योग्यहै ८८ बहुत आदमियों के बचनमें दुविधा होतो गुणीका बचन ले और उनमें जो सबमें अधिक गुण हो उसका बचन सदा ले ८९ जो बिना बुलाये देखै अथवा सुनै पूछने पर वहभी जैसा देखा या सुना हो कहै ९० भिन्न २ काल और अंश से पृथक् कहै तो एक एकको अलग २ करके पूछै यह सनातन बिधिहै ९१ गवाह जो अपने स्वभावसे कहै उसको सुनै जास्ती न करै साक्षीके कहतेहुये पुनःपुनः न पूछै ९२ साक्षीको बुलाके पुराण सत्य बचन धर्म्म माहात्म्य कीर्त्तन शपथसे पूछै ९३ झूंठके दोषसे गवाहीको अच्छीभांति डरावै देशकालमें तुमने क्यादेखा और क्यासुना ९४ जो लिखा या लिखाया हो वह सत्य २ कहो जो सत्य गवाही देता है वह उत्तम लोक को जाता है ९५ और सत्य बोलने वालेकी इस लोकमें उत्तम कीर्त्ति होती और बाणीही ब्रह्मपूजित है सत्य साक्षीकी पूजाहोती और धर्म्म बढ़ता है ९६ इस कारण सब वर्णों में उचित है कि साक्षी सत्यबोलै आत्माही अपना साक्षी है और आत्माही अपनी गति है ९७ अपना अभिमान न करो मनुष्यको साक्षित्व उत्तम है पापकारी अपनेको देखता है पुण्यात्मा नहीं ९८ सौ जन्ममें जोपाप और पुण्य मनुष्य करता है उसको देवता और अन्तरात्मा पुरुष देखता है ९९ जिसको अनायास पराजय दोगे उसकेसम्पूर्ण पाप

तुमको होंगे ७०० यह सम्पूर्ण सभाके मध्यमें गवाहीको सुनावै और साधनके देखने में देशानुरूप कालदे १ देवता या राजकृत उपाधिको देखके लेखके विनष्ट होनेसे राजा साक्षियों से विचार करै २ और लेख और गवाही के नष्टहोने से सद्भोगसे चिन्तना करै और सद्भोगके अभावसे साक्षी और लेखसे विचार करै ३ केवल भोग लेख साक्षीकरके राजा कार्य्यको न करै लोक औरदेश के धर्म्मको भी देखके कार्य्यको करै ४ होशियार लोग लेखके सदृश दूसरा लेख बना सक्तेहैं इस कारण लेखकी सामर्थ्यसे एकान्तिकी सिद्धि न करै ५ स्नेह लोभ भय क्रोधसे झूंठी गवाहीकी शङ्कासे केवल साक्षी पै राजा सदा कार्य्य सिद्धि न राखै ६ अपना हो या पराया जो बलके घमण्डसे भोगकरै इसके बल शङ्कित भोगसे कार्य्य सिद्ध नहीं होता ७ शङ्कित व्यवहार में अन्यथा शङ्का न करै और जिस सभावाले में अन्यथा शङ्का हो राजा उसको चोरकी तरह दण्ड दे ८ अन्यथा शङ्का करनेसे नित्य अनवस्था रहती है लोक भेदको प्राप्तहोता और धर्म्म हीन होताहै ९ आगम बहुत दिनका हो और अपवाद विघ्न जनहो समक्ष प्रतिवादी हो ऐसा भुक्तभोग प्रमाणवत् होता १० सम्भोगका कीर्त्तन करै आगम न कहै वह भोग छलापदेशसे तस्करहै ११ और आगममें बल नहीं और जहां थोड़ा भोगभी न हो जिस किसी को दशबर्ष निकट देखता है १२ पराये करके भोग किये हुये धनको वह नहीं पा सक्ता और जिसकी भूमि कोई बीसबर्ष भोग करताहै १३ राजाके होतेहुये उस समर्थ को भी वह भूमि नहीं मिलती और बिना आगमके जो जिसका भोग करता है १४ उसको चोरकी भांति राजा दण्डदे और अनागम जो भोगहै और अपवाद नहीं है १५ और वह भोग साठ बर्ष होगयाहै तो कोई हरनहीं सक्ता आधिसीमा बाल धन निःक्षेप स्त्रीकी उपनिधि १६ राज धन बै-

दिकधन ये भोगसे नष्ट नहींहोते और इनका निरादर करता और चुपका होरहता १७ तो काल बीतने पै इनका फल नहीं संक्षेप से भोग कहा अब दिव्य कहते हैं १८ जहां प्रमादसे धनीके त्रिविध साधन न हो अर्थ के लिये झूंठ बोलै तहां तीन बिधि करै १९ प्रेरणा समयबिताना सौगन्द इनसे कार्य्य सिद्धकरै २० जो शास्त्रके अविरुद्धहो ऐसा यत्न अपने अर्थकी सिद्धिके लियेकरै अन्यथा युक्ति न करै २१ देना फोड़ तोड़ लोभ दिखाना चित्तका लेना ये स्वार्थ साधक उपाय हैं २२ बारम्बार कहने परभी उत्तर न दे तीन चार पांच दफेके कहने पर किसी से अर्थ दिला देगा २३ युक्ति कार्य्य साधनमें असमर्थ हों तो दिव्य उपाय से उसका बिमर्दन करै क्योंकि देवतों करके प्रयुक्त दुस्साध्य अर्थ महात्माओंको प्राप्तहोतेहैं २४ इसीसे परस्पर विशुद्ध्यर्थ सप्तर्षियोंने स्वीकारकिया २५ अपने माहात्म्य और ज्ञानके घमण्डसे बसिष्टादि कृत दिव्य साधन नहीं करता वह ज्ञान तस्करहै २६ ज्ञान दुर्ब्बल ब्राह्मण देवबलके प्राप्त होनेपै शाप न दे शापदेनेसे आधा धर्म्म देवता हर लेते हैं २७ जो अपनी शुद्धि की इच्छा करके निरालस हो दिव्य साधन करता है वह विशुद्ध हो कीर्त्ति और स्वर्ग्गको प्राप्त होता अन्यथा नहीं २८ अग्नि बिष घट जल धर्म्माधर्म्मके तण्डुल मुनिलोग दिव्य निर्णयमें इनको शपथ कहतेहैं २९ एक एकसे पहिला गम्भीरतरहै जैसा कार्य्य हो वैसा निर्णय करै लोकके विश्वासके लिये कहाहै सम्पूर्ण दिव्य निर्णय गुरुतर हैं ३० जलता हुआ लोहे का गोला हाथ में लेचलै नहीं तो तप्त अङ्गारों में सात पग चलै ३१ लोह के छर्रे को ताते तेलमेंसे निकालै अथवा जलते हुये लोहपत्रको जीभसे चटावै ३२ हाथसे बिष खिलावै या काले सांप को पकड़ावै अथवा तुला पै चढ़ा कमीबेशी का शोधन करै ३३ अपने इष्ट देवता के स्नान से

उत्पन्न जल को पिलावै या कुछ समय का नियम करके जल में डुबोवै ३४ बिना देखीहुई धर्म्म अधर्म्मकी मूर्त्तियोंका स्पर्श करावै या निश्शंकहो तोले भर चावल चबवावै ३५ पूज्यके चरणका स्पर्श करावै अथवा पुत्रादि के शिरका स्पर्श करावै अथवा अपने धनका स्पर्श करै या सत्यका शपथकरै ३६ हमको पाप प्राप्तहो और हमारा सम्पूर्ण पुण्यनष्टहो ऐसाकहै हजार मुद्राकी परीक्षा अग्निसे करै और एक तिहाई कम होतो विषसे परीक्षाकरै ३७ और हजारमें तीनभाग कम हो तो घटसे परीक्षा करै और पांच सौकी परीक्षा जल से करै और ढाईसैकी परीक्षा धर्म्माधर्म्म मूर्त्तिसे करै और आठवें भागका निर्णय चावल चबवाके करै ३८ और सोलहवें भागका निर्णय हो तो शपथ खिलावै इस प्रकार दिव्य बिधि कहाहै इन निकृष्ट और मध्यकी संख्या द्विगुणाकही है ३९ और परीक्षक लोग उत्तम की संख्या चतुर्गुण कल्पना करैं जबतक शिरोवर्त्ति न हो तब तक दिव्य परीक्षा न करैं ४० दिव्य निर्णय में अभियोक्ता अर्थात् प्रेरणा करने वाले को सिर स्थानमें जानै और अभियुक्तको अर्थात् मुद्राअलेह को दिव्य परीक्षा दे ४१ मुद्राअलेहको कोई दिव्य परीक्षा में युक्त न करै दूसरेकी इच्छासे दूसरा शिरोवर्त्ती हो ४२ जो राजा से शङ्कित हों और शत्रुने उनको बतला दिया हो और अपनी शुद्धि चाहते हैं तो बिना शिरोवर्त्ती के भी अपनी परीक्षा करा सक्ते हैं ४३ पर स्त्री और अगम्यागमन अर्थात् जो गमन के योग्य न हो और अन्य महापापों में दिव्य परीक्षा करै और परीक्षा न करै ४४ जिसपर चोरीका सन्देह हो उस्से जलते तेलमें से लोह के छरे निकलवावै और जोकोई किसी के प्राण लेनेकी इच्छा करै ऐसे और साधनों में ४५ बादी दिव्य परीक्षा करै और साधन उसमें न पूछै कुल सहित साधन हो और राजाको सुना दिया हो ४६

तो राजा धर्म्मासन पै बैठके दिव्य निर्णय से शोधन करै और जिसके नाम गोत्र से तुल्य लेखहो ४७ और रुपया न लियाहोतो उसकी निर्णय दिव्य से करै इसमें मनुष्य साधन न करै केवल दिव्यही निर्णयकरै ४८ अरण्य निर्ज्जन स्थान रात्रि घरके भीतर साहसकरै और स्त्रियोंके बीचमें असत्यभाषणकरै ४९ और प्रदुष्ट प्रमाणोंमें दिव्य निर्णयसे कार्य्य शोधन करै महापापाभिशप्त या निक्षेप हरणमें ५० राजाअच्छे गवाहोंके होनेपर दिव्यपरीक्षा करै पहिला और अन्य गवाह फूट जाय ५१ इस तरह सब गवाहों के भिन्न होजाने में सौगन्द खिलावै स्थावर विवाद और मुख्य गणोंके विवादमें ५२ स्वामी के भृत्यको नौकरी न देनेके निर्णय में व्यापार में माल लेके दाम न दे ५३ इनको गवाही या लिखे हुयेके सदृश या जैभोगके तुल्य साधन करै और बिवाहोत्सव जुआ इनमें कोई बिवादहो ५४ इनमें गवाहों से साधन करै न दिव्य निर्णय न लेख और द्वार मार्ग्ग क्रिया भोग्य जल बहने आदि में ५५ भोगही प्रमाण है न दिव्य निर्णय न गवाह जो एक मानुषी परीक्षा कहै और अन्य देव परीक्षा कहैं ५६ तो राजा मानुषी परीक्षाका ग्रहण करै दैवी परीक्षा न करै यद्यपि मानुषी क्रिया एक देश प्राप्ता हो ५७ वही ग्राह्य है और पूर्ण भी दैवी परीक्षा नहीं ग्राह्य है और प्रमाण हेतु चरित शपथ नृपाज्ञा ५८ वादी या सम्प्रति पत्ति से निर्णय आठप्रकार की है जहां लेख और भुक्ति अथवा साक्षी न हों ५९ और दिव्य अवतार न हो वहां राजा प्रमाण है कि वही सम्पूर्ण सन्देह रूप वादों का निश्चय करै ६० सीमादि प्रमाण राजा है क्योंकि वह स्वामी है और स्वतन्त्र अर्थोंको साधता हुआ राजा पापी होता है ६१ धर्म्मशास्त्रके सदृश अर्थशास्त्रका विचार करै और मन्त्रीके लोभ से राजा और व्यवहार दोनों दूषित होतेहैं ६२ और लोकभ्रष्ट

होता और कपटमें प्रवृत्त रहता अति काम क्रोध लोभमें व्यवहार होता ६३ दोष कर्त्ता साक्षी सभावाले राजा को व्याप्तहोता है इस कारण उसके मूलसे बिचार करके करै ६४ और अनर्त्थ को अर्त्थवत्करके जो राजा को दिखलाते हैं और राजा उस के कहनेके मुताबिक सत्य मानता है६५ तो राजा पाप करनेवालेसे अष्टगुण पाप भोगता है जोकोई अधर्म्ममें प्रवृत्तहो और उसका निरादर सभासद न करैं ६६ निरादर करनेवाले सभा के लोग राजा सहित अधोमुख हो नर्कको जातेहैं सभावालों के आधीन धिक् दण्ड या बचन दण्ड कहाहै ६७ और धन दण्ड और बध दण्ड राजा के आधीन है राजाके हुक्म और फैसला को विधर्म्मसे मानता है ६८ उसे द्विगुण दण्ड लेके पुनः राजा उसकार्य्यको करै और जिस कार्य्यमें गवाह और सभावालोंकी तरफ से कुछ सन्देह होतो उसकोभी राजा पुनः देखै ६६ और जिस मुकद्दमेमें राजा करतेहुये भूलगयाहो उसको फिरसे देखै अमात्य या प्राड्विवाक जोकोई अन्यथा कार्य्यकरै ७० उसको राजा पुनः करै और करने वालेपर एक हजार जुरमाना करै बिना दण्ड कोई सन्मार्ग्ग गामी नहीं होता ७१ सभावालोंका दोष देखके उसदोष को राजा निकाल डालै प्रतिज्ञा भावनाही हो प्राड्विवाकादि पूजन से ७२ जयपत्र के लेने से संसार में जयी कहलाता है सभा के लोग जो निर्णय करैं उस को प्रतिवादी मानिले ७३ राजा देखके जीतवाले को जयपत्रदे अन्यथा मुद्दई को बहुत दिनतक कैदरक्खै ७४ मिथ्या अर्जीके समान प्रतिवादी की अर्हणा करै और काम क्रोध को बटोरके जो अर्त्थको धर्म्म से देखता है ७५ ऐसे राजा के पीछे प्रजा फिरा करती है जैसे समुद्रके पीछे नदी और माता पिताके जीतेहुये वृद्धभीही स्वतंत्र न हो ७६ माता पितामें भी वीर्य्यकी प्रधानता से पिता श्रेष्ठ है और

पिता के अभाव में माता श्रेष्ठ है और माता भी न हो बड़ाभाई श्रेष्ठ है ७७ ज्येष्ठ में स्वतन्त्रता होती और ज्येष्ठता गुण और अवस्था से होती है और जो बड़ों की स्त्रियां हों उनमें माता के तुल्य बर्त्ताव करै ७८ और अपने समभाग से वे सम्पूर्ण स्त्रियां भी पालन करैं और सब प्रजा अस्वतन्त्र और राजा स्वतंत्र होताहै ७९ शिष्य अस्वतंत्र और आचार्य्य स्वतंत्र होताहै पुत्र और पुत्र स्त्रियों की शिक्षा में स्वतंत्रता होतीहै ८० पिताके बेचने या देडालने में पुत्रका कुछ बशनहीं और परतन्त्रों में सुत स्वतन्त्र होता है ८१ सिखलाना या देडालने में और मणि मुक्ता मूंगा सम्पूर्ण का स्वामी पिताहै ८२ स्थावर गृहआदि सबका स्वामी न पिता न पितामह भार्य्या पुत्र दास ये तीन अधन कहलाते हैं वही मालिक हैं ८३ जो कुछ इनको मिलता है जिसके वे होते हैं उसीका वह धन होताहै और जिस किसीको दियाचाहैं बिना धनीकी मर्जी नहीं दे सक्ते ८४ चोरीके द्वारा अन्यका धन और के हाथमें देखै इसकारण शास्त्रसे स्वाम्यहै अनुभवसे नहीं ८५ इसका धन इसने लिया यह और तरह कहनेको योग्य नहीं है अलग अलग वर्ण के लोग धनकी आमद को जानते हैं ८६ शास्त्रके लिखेहुये धर्म्मको म्लेच्छादिकों को सिखलावै जिसको कि पूर्व्व आचार्य्यों ने लोक की स्थिति के लिये कहाहै ८७ पुत्र और स्त्री को मालिक बराबर धन दे अपने भाग में आधा धन कन्या को दे और उसका आधा कन्या पुत्रको दे ८८ मालिक के करनेके पीछे कहेहुये मार्ग्ग के मुताबिक करै माता को चतुर्थांश और बहिन को माता का आधादे ८९ बहिन का आधा भानजे को दे और बाकी सम्पूर्ण धन पुत्रले जो पुत्र न होतो स्त्री यथा कन्या या उसका पुत्र ले ९० माता पिता भाई पूर्व्वके न मिलनेसे उनके पुत्र धनलें अपने हिस्से का धन पाने से स्त्री की

स्वतन्त्रता होती है ९१ कन्या के बिवाह होजानेपै पति अथवा पिता के घरसे जो मिलता है उसके बेच डालने और देडालने का अख़्तियार है ९२ माता पिता का दिया हुआ जो धनका भाग मिलता है वह पिता आदि के धनसे अलग होता है ९३ उसको इच्छा पूर्ब्बक भोग कर सक्ता है किसीके बांटनेका धन नहीं है जल चोर राजा अग्नि से ९४ जो अपनी शक्ति से धन की रक्षा करै उसका दशवां भाग धन है और सोनार आदि जितना बनावै उसकी मेहनत उसी के सदृश पावै संस्कार करै और उस की कला को जानै वह शिल्पी कहाता है ९५ गृह देवस्थान बाग के बनाने में और कारीगरोंसे दूनी मजदूरी शिल्पी पावै ९६ अच्छे लोगों ने नाचने वालों का यही धर्म्म कहा है कि तालज्ञ चौथाई और गानेवाले समभाग पाते हैं ९७ पराये के राज्य से चोर जो धन लावें उसमेंसे छठा अंश राजाका निकाल के बराबर बांटलें ९८ उन में से कोई चोर कहीं पकड़ा जाय तो अपने २ हिस्सेमेंसे बरावर धन देके छुड़ावैं ९९ सोना आदि रस से जो प्रयोग करते हैं समन्यून अंश के सदृश जैसा करता है उसीतरह लाभ होता है ८०० समन्यून अधिक जितना अंश लगावै और खर्चा दे कर्म्म करै उसीतरह लाभ होता है १ बनियां और खेतीकरनेवालोंकी यही बिधिहै कि पूराधनतो आप लेतेहैं और कुछ हिस्सा दासको देतेहैं २ गुप्त गड़ाहुआ धन बंश के होने पर भी किसी को न दे नबीन बस्तु विपत्ति मेंभी पण्डित किसी को नहीं देते ३ जो अदेय को लेता है और फिर देय को देडालता है उनकी चोर की तरह शासना करै और उत्तम साहस का दण्ड ले ४ बिना मालिक अथवा चोर से जो कोई गुप्त धन लेता है और कोई चीज मोल लैताहै उसको राजा चोर की भांति दण्ड दे ५ ऋत्विक् और याजक अपराध करैं तो

ऋत्विक् और याजक दोनोंको राजा दण्ड दे ६ बत्तीस या सोल-हवां अंश बाजारू बस्तुओं पर महसूल लगावै अन्यथा उसका खर्च देखके देशावरके हिसाबसे महसूल लगावै ७ नफाछोड़के आये धनसे रोजगार करै मूल से दूना ब्याज लेना अधम ऋण देनेवाले धनी का काम है ८ इस कारण उत्तम ऋण देने वाले से मूललेके अधिक ब्याज न दे धनी लोग चक्र वृद्ध्यादि क्रम से प्रजाका धन ले लेते हैं ९ इस तरह की विपत्तियों से राजा प्रजा की रक्षा करै समर्त्थ हो तो आप धनी का धन देडालै १० राजा साम या दण्ड कर्षणसे धन दिलवावै जिससे कि धनी का धन खराब न हो ऐसा उपाय राजा करै ११ गवाहों से भली भांति यांच के राजा धनी का धन दिलावै और जो बिना दिये लेताहै और दिये हुयेको फिर चाहता है १२ वह दोनों धर्म्मज्ञ राजा करके दण्ड देनेके योग्यहैं और खोटी बस्तुका बेचने वाला चोर की तरह दण्ड देने के योग्य है १३ शिल्पियों का कार्य्य देखके उनके गुणके सदृश मजदूरी मुकर्रर करै रुपया का पञ्च-मांश चतुर्थांश अथवा तृतीयांश दे १४ या राजा रुपया का आधा अर्थात् आठ आनादे प्रति दिन अधिक न दे जो गलानेसे चारतोले सोनेसे कम न हो १५ चार सौ भाग चांदी सौ भाग तांबेसे हीन होताहै शीशा और जस्त सोलहभाग हीन होताहै १६ और अष्टमांश लोहा कम होता है अन्यथा हो तो राजा शिल्पीको दण्ड दे और सुवर्ण दो शत और एक शत चांदी १७ मोड़ने वाली बस्तु में घट जाती और जोड़ने वाली बस्तु में सोलहवां हिस्सा बढ़ जातीहै और तरह हो तो सोनारको दण्ड दे १८ जोड़ और मोड़ को देख के कमी बेशी की कल्पना करै सुवर्ण के उत्तम कामों में तीसवां भाग मजदूरी दे १९ और साठवां हिस्सा मध्य कार्य्य में और हीन कार्य्यमें उसकी आधी

उसकी आधी कड़ा आदि में और शुद्ध गलाने में उसकी आधी मजदूरी दे २० उत्तम चांदी में अर्द्ध मजदूरी और मध्यम में उसकी आधी और हीन चांदी में उसकी आधी यानी आठवां भाग और कड़ा आदि में सोलहवां भाग मजदूरी दे २१ तांबे में चौथाई मजदूरी उसी तरह बङ्ग में लोह में आधी या सम द्विगुण या त्रिगुण मजदूरी दे २२ धातु का कपट कर्त्ता द्विगुण दण्ड के योग्य है यह व्यवहार लोकके प्रचारके सदृश मुनियों ने कहा है २३ व्यवहार अनन्त पथ है वह कहने के योग्य नहीं और संक्षेप में पञ्चमराष्ट्र प्रकरण कहा २४ और इस में जो गुण है वे लोक और शास्त्र से कहे अब छठां दुर्ग्ग प्रकरण संक्षेपसे कहते हैं २५ खात कण्टक पाषाणसे दुष्ट मार्ग्ग दुर्ग्गम चारों ओर भारी खन्दक हो वह पारिख दुर्ग्ग कहाताहै २६ ईंट पत्थर मृत्तिका की भीत का खावां हो वह पारिघ कहाता है और महाकण्टक के वृक्षके समूह से व्याप्त बन दुर्ग्गम कहाता है २७ और चारों ओर जलाभाव हो वह धन्व दुर्ग्ग कहाताहै और जिसमें चारों ओर महा जल हो वह जल दुर्ग्ग कहाता है २८ सुन्दर जल से युक्त पीछे ऊंचा पहाड़ से दुर्ग्गम किसी के भेदन करने के योग्य नहीं कवायदी बीरों से युक्त यह सैन्य दुर्ग्गम कहाता है २९ शूर बीर बन्धु युत सहाय दुर्ग्ग कहाता है और खावां और ऊसरसे बर पारिघ बन कहाताहै ३० तदनन्तर पहिले जलका अभाव पुनः जल उस्से पीछे गिरि दुर्ग्ग सहाय सैन्य और दुर्ग्ग सर्ब्ब दुर्ग्ग साधक हैं ३१ इन दोनों के बिना राजाके और दुर्ग्ग निष्फल होतेहैं और अन्य सर्ब्ब दुर्ग्गों से सेना दुर्ग्ग श्रेष्ठ है ३२ और सम्पूर्ण सेना दुर्ग्ग के साधक हैं उसकी राजा सदा रक्षा करै जिस राजा के सेना दुर्ग्ग होता है उस के यह पृथ्वी बश रहती है ३३ सैन्य दुर्ग्ग बिना अन्य

दुर्ग्ग बन्धनहैं और आपत्कालमें अन्य दुर्ग्गों का आश्रय उत्तम है ३४ किलेके भीतर एक मनुष्य शस्त्र को धारण कर सैकरों के साथ लड़सक्ता है और किले में सौ मनुष्य हों तो दश हजार के साथ युद्ध करसक्ते हैं इससे किलेका आश्रय करै ३५ शूर और सैन्य दुर्ग्गको सबस्थान दुर्ग्ग है और युद्धकी सामाग्रीसे भरा राजा किला राखै ३६ गल्ला बीर अस्त्र खजाना सहाय से पुष्ट किला सबसे श्रेष्ठतरहै ३७ सहायसे पुष्ट किलेसे निश्चय करके बिजय होताहै और जो जो सहाय पुष्ट हैं वह सब सफल होते हैं ३८ किलों का आपसमें परस्पर मेल बिजय प्रदहै यह दुर्ग्ग प्रकरण संक्षेपसे कहा अब सातवां सैन्य प्रकरण कहतेहैं ३९ शस्त्र अस्त्रसे संयुक्त मनुष्यों का गण सेना कहाताहै और वह स्वगमा अन्यगमा भेदसे दोप्रकारकी है और अलग तीन तरहकी है ४० दैवी एक आसुरी दो मानुषी ये तीनों एकसे पहिली सेना बलाधिक है स्वगमा वह सेना है जो आप चलै और जो बाहन पै चलै वह अन्यगमा कहाती है ४१ पैदर स्वगम और रथ घोड़े हाथी पै चढ़के चलने से तीन तरह के हैं सैन्य बिना राज्य धन पराक्रम नहीं होता ४२ सैन्य से दुर्ब्बल राजा के सम्पूर्ण बली शत्रु बशरहते हैं थोड़ी सेनावाले राजा का किया कुछ नहीं होता ४३ शरीरका बल शूरताते बल सैन्य बल चौथा शस्त्र बल पांचवां बुद्धिबल कहा है ४४ छठां आयुर्बल इनबलों से युक्त विष्णु के तुल्य है बिना सेना के छोटे शत्रु को भी नहीं जीत सक्ता ४५ देवता असुर मनुष्य ये अन्य उपाय से बशमें होते और शत्रु केवल बलही से बश होता है ४६ इससे राजा को चाहिये कि बहुत सेना रक्खै और सेना और बल ये दो प्रकार की है और स्वीय मैत्रकेभी दो भेद हैं ४७ मौलसाद्यके भेद से सार असार दोप्रकारकी सेनाहै और एक अशिक्षित और शिक्षित और गुल्मी

भूत अगुल्मक ४८ एक फौज जिसको अस्त्र दिया जाय एक वह जो अपना अस्त्र अपने साथ लेआवै और जिसको घोड़ा दिया जाय वह दत्तबाहन जो घोड़ा आप ले आवै स्ववाहि सुजनतासे साधक मैत्र और मासिक देके पालित स्वीय ४९ मौलं बह्वानु बन्धी अर्थात् समय मोल देकर रक्खीजाय वह साद्यस्क कहातीहै जो सेना युद्धकी इच्छा करै वह सार इस्से बिपरीत असार कहलातीहै ५० कवायदी फौज शिक्षित कहाती इस्से और अशिक्षित किसी आज्ञासे कामकरै वह साधिकारी और सेनाहीका कोई स्वामी हो वह अगुल्मक सेना कहातीहै ५१ स्वामी ने जिस को दिया हो वह दत्तास्त्र और दूसरी जो अपने पास से अस्त्र ले आवै वह स्वशस्त्रास्त्रसेनाहै वह कृत गुल्म और स्वयंगुल्म उसी तरह दत्त बाहन भी कहाती है ५२ और जङ्गली किरातादि जो अपने तेजसे स्वाधीन रहते हैं और जिस सेना को शत्रु ने छुड़ा दिया हो उन को नौकर करना ५३ फोडिली हुई शत्रु की सेना शत्रुबल कहाती है ये दोनों पूर्व्वोक्त दुर्बल हैं केवल साधक नहीं हैं ५४ समान नियुद्ध में चतुर कसरत और नम्रता से बाहु युद्ध के लिये भोज्य से शरीर के बलको बढ़ावै ५५ शरके शिकार से शस्त्र अस्त्रका अभ्यास करके शरके संयोग से शूरता के बल को राजा बढ़ावै ५६ सेना को मासिक देने और तप से अस्त्र बलको और शास्त्र चतुर के संयोग से बुद्धि बलको सदा बढ़ावै ५७ ऐसा उत्तम काय्यंकरै जिस्से राज्य बहुत दिनतकरहै अपने कुलमें उसी तरह करै वह आयुर्बल कहाता है ५८ जब तक गोत्र में राज्य रहता है तब तक राज्य का स्थापन करने वाला सदा जीता रहताहै और घोड़ोंसे चौगुना पैदर रक्खै ५९ और पांचवां हिस्सा बैल और आठवां हिस्सा ऊंट और ऊंटकी चौथाई गज और गजके आधेरथ रक्खै ६० और राजा रथसे

दूना तोपखाना राखै और पैदर बहुत मध्य भाग घोड़े थोड़े हाथी ६१ उसीतरह सामान्य बैल और ऊंट और बहुत हाथी न रक्खै समान अवस्था सारबेष ऊंचे शस्त्र अस्त्र को सौ मनुष्य अलग रक्खै ६२ राजा बन्दूक वाले तीन सौ सिपाही रक्खै अस्सी घोड़े एक रथ दो तोप रक्खै ६३ दश ऊंट दो हाथी दो गाड़ी सोलह बैल कार्कुन छः तीन मन्त्री ६४ बर्षदिन में राजा लाख रुपये का व्यय करै सामान दान भोगार्त्थ डेढ़ हजार रुपया खर्च करै ६५ लिखनेवालों के मासिक में सौ रुपया और मंत्री के लिये तीन शत और स्त्री पुत्रके लिये तीन शत और पण्डितों के लिये दो सौ खर्च करै ६६ और सारथी घोड़ा पैदर के खर्च में राजा चार हजार रुपया खर्चकरै गज ऊंट बैल तोपके खर्चमें चार मुद्रा लगावै ६७ बाक़ीजो बचै उसको खजानेमें जमा करै बेफ़ायदे खर्च न करै लोहसारमय गोल राजासन बनवावै ६८ कमानी दार मध्य में सारथीके आसन स्थान शस्त्र अस्त्रकी पेटी से युक्त ऐसा छायादार सुन्दर रथ बनावै ६९ ऐसे सुन्दर घोड़ों से युक्त रथकी सदा रक्षाकरै नील तालु नीलजीभ टेढ़े दांत अदन्त ७० दीर्घ द्वेषी क्रूर मद पीठ कंपावै दश या आठ से कम नख युक्त भूमि तक जिसकी पूंछ हो ७१ ऐसा हाथी अशुभ है इससे और तरह होतो सुखका देनेवाला है भद्र मंद्र मृग मिश्र ये चार प्रकार के गजहैं ७२ शहदके रङ्गके दांत हों सबल सम अङ्गवाला गोल सूरत सुमुख सर्वाङ्ग श्रेष्ठ भद्रगज कहाताहै ७३ स्थूल कुक्षि सिंह दृष्टि बड़ीलम्बी सूंड़ मध्यमाङ्ग बड़ी देह ऐसा मन्द्र गज कहाता है ७४ पतला कण्ठ दन्त कर्ण शुण्ड बड़ेनेत्र मोटी छाती और मोटा लिङ्ग बामन ऐसा मृग गज कहाता है ७५ और इनसब लक्षणोंसे मिलित मिश्रगज कहाताहै पृथक् २ तीन तरहके गजोंका प्रमाण कहा ७६ गजके मान में आठ यव

के पेटे से एक अंगुल होता है ऐसे चौबीस अंगुल का एक हाथ होताहै ७७ भद्र गज सात हाथ ऊंचा होताहै और लम्बा आठ हाथ होता और पेटकी मुटाई दश हाथ होती है ७८ मंद्र और मृग हस्ती का प्रमाण एक हाथ कम इस क्रम से है मुनि लोगोंने भद्र मंद्र की लम्बाई समता कही है ७९ मोटे भौंह कपोल मस्तक ऊंचाशिर करके चलना ऐसाशुभ लक्षण संयुक्त गज सबसे श्रेष्ठ है ८० पांच जव के अंगुल के प्रमाण से घोड़ों का प्रमाण अलग है चवालीस अंगुलका जिस घोड़ेका मुंहहो वह उत्तम है ८१ और छत्तीस अंगुल जिस घोड़े का मुख हो वह उत्तम और बत्तीस अंगुलका मुखवाला मध्यम कहाहै ८२ और अट्ठाईश अंगुल मुखवाला अश्व नीच कहा है घोड़ोंकी मुखमान से सब अङ्गों की कल्पना होतीहै ८३ मुखके प्रमाणसे तिगुनी उंचाई कही है वह शिरोमणि से ले पुच्छ के मूल तक है ८४ लम्बाई मुखमानसे तृतीयांश अधिक चतुर्गुण हो और मुटाई तीन अंगुल अधिक मुखमानसे त्रिगुण हो ८५ मुख केशसे हीन मुख कान्त धृष्ट कनौटीदार लम्बा उच्चग्रीव मुख छोटे कोख खुरकान वाला ८६ शीघ्रगामी प्रचण्ड वेग हंस मेघ स्वनन बहुत कठोरन बहुत मृदु देवसत्व मनोरम ८७ सुन्दरकांति गन्ध वर्णवाला सद्गुण भंवरीयुत दहिनेबांयेद्विधावर्त्त घूमनेवाला ८८ पूर्ण अपूर्ण दो भेदों से युक्त मोटा लांबा घोड़ीके बाम घोड़ेके दक्षिण क्रमसे कहे हुये फलके देनेवाले ८९ इससे विपरीत शुभाशुभफल प्रद नहीं होते नीच ऊर्द्ध टेढ़े मुख भेदसे घोड़ा घोड़ीका फल भेद होताहै ९०शङ्खचक्र गदा पद्म वेदी स्वस्तिक सदृशप्रासाद तोरण धनुष पूर्ण कलश के सदृश ९१ स्वस्तिक माला मीनखड्ग श्रीवत्स के सदृश शुभ फिरने वाला नासिका के अग्र और ललाट में शंखी कण्ठ और मस्तक में जिस के ९२ भौंरी हो वह धन्य

तुरङ्गोत्तम है हृदय कन्ध गल कमर में भौंरी हो वह भी तुरङ्गोत्तम है ९३ नाभि कोख बगलमें भौंरी हो तो मध्यम अश्व है और ललाट में जिसके दो भौंरी हों ९४ और मस्तकमेंभौंरी होतो पूर्ण सुखदायक घोड़ाहै और जिसकी पीठपर एकभौंरी हो ९५ वह घोड़ा बहुत से घोड़ों को इकट्ठा करै और स्वामीको सूर्य्य सदृश करै और जिस घोड़े के ललाटमें आड़ी और बाम तीन भौंरी हों ९६ वह त्रिकूट नामक अश्व बाजि वृद्धिकरहै इसी प्रकार तीन भौंरी ग्रीवा पर हों तो ९७ वह घोड़ा राजा के गृह में सब घोड़ों का स्वामी हो और जिस घोड़ेके कपोलमें दो भौंरी हों ९८ तो वह भौंरी यशो वृद्धिकर और राज्य वृद्धिकरहै जिस घोड़े के कपोल में एक भौंरी हो तो ९९ वह सर्ब्बा नाम घोड़ा स्वामी का नाश करै और जिस घोड़ेके कपोल में दहिनावर्त्त भौंरी हो १००वह शिव संज्ञक घोड़ा स्वामी को बड़ा सौख्य दे उसी तरह बायें कपोलमें भौंरी क्रूरहै स्वामीके धन का नाश करतीहै १ कानेकी जड़ और स्तन के मध्य में भौंरी हो तोइन्द्रके सदृश राज्य की वृद्धिको देतीहै २ कन्धे और पार्श्वमें जोघोड़ेके भौंरीहो वह विजयास्य भौंरी युद्धकालमें यश प्रदहै और वह अश्व पद्मलक्षणहै ३ नासिकाके मध्यमें जिस घोड़ेके एक अथवा तीन भौंरी हों वह अनेकप्रकारकी लक्ष्मी और स्वामीको निरन्तर सुखदे ४जिसघोड़े के गलेमें एक श्रेष्ठ महा भौंरी हो वह घोड़ा भूपाल संज्ञक चक्रवर्त्ती घोड़ा कहाताहै ५ भाल और गलेमें जिसके शुक्रास्य भौंरी हो वह वृद्धि और कीर्त्ति की देनेवाली है उस को चिन्तामणि कहते हैं चिन्तित अर्त्थ सुखकी देने वाली है ६ जिस घोड़े की कोखके अन्तमें दोटेढ़ी भौंरी हों वह घोड़ा मरजाय या स्वामी को मारै ७ जिस घोड़े की जांघमें अयावर्त्त हो वह परदेश या क्लेशको करै बाजिके लिङ्गमें भौंरी विजय लक्ष्मी का नाशकरै ८ और इन

तीनों स्थानोंमें भौंरी हो तो अर्थ धर्म्म काम तीनों का नाश करै पूंछ के मूल में भौंरी हो वह धूम केतु अनर्त्थ करने वाली है ६ गुह्य और पूंछ में तीन भौंरी हों तो वह घोड़ा यम रूप भयका देने वाला हो और मध्य दण्डसे पार्श्व की तरफ केश भौंरी की जाय तो शत पदी कहाती है १० अंगूठे प्रमाण वह भौंरी हो तो अत्यन्त दुष्ट है और अंगूठे से बड़ी हो तो कुछ २ अच्छी है आंशू गिरने की जगह दाढ़ी कपोल हृदय गल प्रोथ वस्ति ११ कटि शङ्ख जङ्घा अण्डकोश डिल्ल नाभी गुदा दाहिनी कोखदाहिना पैर इन स्थानोंमें भौंरी सदा अशुभहै १२ गला पीठ ऊपर का ओष्ठ कान नेत्र का बीच बाईं कोख दोनों बगल १३ जङ्घा आगे के दोनों पैर इन स्थानों में भौंरी शुभ है और मस्तक में अन्तर सहित भौंरी हो तो सूर्य्य चन्द्र नामक शुभ प्रद है १४ और वेई दोनों भौंरियां मिली हों तो मध्य फल है और एकमें मिली हों तो दुष्ट फल की देने वालीहैं और तीनो भौंरी ऊपर कोफर्क से भाल में हों तो शुभ है १५ और उसी स्थान पर दो भौंरी मिली हों तो अशुभ है और मस्तक में त्रिकोण तीन भौंरी हों दुःखदहै १६ और घोड़े के गले के बीचमें एक भौंरी हो तो सब अशुभ का निवारण है पैरमें अधोमुख और मस्तक में ऊर्ध्वमुख भौंरी शुभ होती है १७ पृष्ठमुखीगोम अत्यन्त अशुभ नहीं है उसका शत पदी नामहै और लिङ्गके पीछे भौंरी हो स्तनी बाजी कहाती है सो अशुभ है १८ और घोड़े के कर्णके समीप भौंरी हो तो वह शृंगी नाम निन्दित है और गले के ऊपर बगल में भौंरी एक तरफ हो वह एक राशि है १६ और जिस घोड़े के पैरमें ऊर्ध्वमुख भौंरीहो वह कीलोत्पाटी नाम अशुभहै और जिस घोड़े के शुभ और अशुभ दोनों भौंरियां हों वह मध्यम अश्व है २० मुख और चारों पैरोंमें जिस घोड़ेके सपेद हो वह कल्याणद

है वही हृदय स्कन्ध पुच्छमें सपेद हो तो अष्ट मङ्गल कहाताहै २१ और जिस घोड़े का कर्ण काला हो और सब देह एक बर्ण हो वह श्याम कर्ण घोड़ा है और तिसमें भी सब अङ्ग श्वेत होंतो वह घोड़ा मध्य सर्व्वदा पूज्य है २२ जिस घोड़े की आंख लहसनियां मणि के सदृश हो वह जय मङ्गल घोड़ा कहाताहै मिला हुआ बर्ण या एक वर्ण घोड़ा सुन्दर हो तो पूज्य है २३ जिस घोड़े के पैर काले हों या एक पैर सपेद हो वह घोड़ा निन्दित है धूसर और गधेके रङ्ग का अश्व हो तो वह भी निन्दितहै २४ जिस घोड़े की तालू और जीभ काली हो और ओष्ट भी काले हों वह अश्व निन्दित है और जो कुल काला हो और पूछ में सुपेद हो वह भी निन्दित है २५ जो घोड़ा मोटी चालसे चलै और हाथी ब्याघ्र मोर हंस तीतर पारावत २६ और जिस घोड़े की मृग ऊंट बानर की सी गति हो वह पूज्य अश्व है और जो घोड़ा पानी पीने अत्यन्त दाना खाने पर सवार को दुःख न दे २७ वह गति श्रेष्ठ है और वह अश्व भी श्रेष्ठ है जिस घोड़े का मस्तक श्वेत हो और दूसरा रङ्ग भी उसमें मिला हो २८ वह अश्वदल भंजीहै और जिसके वह घोड़ा रहै वह अति निन्दित हो और तब वह बर्ण दोषको दूर करता है जो कोमल बर्ण हो २९ बलीसुगति अतीव सर्बाङ्ग सुन्दर बहुत क्रूर न हो तो अशुभभौंरी से युक्तहो तो भी पूज्यहै ३० घोड़ोंके सवारी न करनेसे बहुत सुदोष होतेहैं और पोषण न करै तो घोड़ाक्षीण होता और बहुत खिलाने से रोगी होजाता है ३१ सिखलाने वाले के गुण दोषसेअश्व सुगति और दुष्टगति होता है कभी तेज चलताहै कभी कोमल होके ठहरजाता है ३२ शिक्षक घोड़ेके निकालने के समय लगामको बराबर रक्खै कदाचित् घोड़ा धीरा होजाय तो चाबुक से मारै ३३ सुन्दर शिक्षा करनेवाला अच्छे घोड़े मध्यममार से

ताड़नाकरै हिनहिना तो कोखमें मारै गिरपड़ै तो पखनेकी जगह मारै ३४ और घोड़ा डरजाय तो कानों के बीचमें मारै औरराह छोड़ दे तो गले में मारै और कांपै तो बाहुमें भ्रान्त चित्त हो तो पेटमें मारै ३५ और घोड़े के और स्थान में कभी ताड़ना न करै और शब्द करै तो कन्धेमें और सिखलानेमें गिरपड़ैतो दोनों जांघ में मारै३६ और बारबार कुसमयमें कुजगह न मारै अकालस्थान ताड़नसे घोड़ा दोषों को उत्पन्न करताहै ३७ जब तक वह घोड़ा जीता है तब तक वह दोष नहीं जाता घोड़ा दुष्ट हो तो अति दण्ड दे और चढ़नेपर दण्ड न दे ३८ जो घोड़ा सोलह मात्रा के उच्चारण काल के समय में सौ धन्वा तक जाय तो उत्तम अश्व है जैसे जैसे घोड़ा न्यून गति हो तैसेतैसे घोड़ा हीन होताहै ३९ हजार धन्वा तक मण्डलाकार गति सिखलावै तो उत्तम पांचसौ धन्वा तक जाय तो मध्यम और ढाई सौ धन्वा तक जाय तो नीच है ४० सौ धन्वा जाय तो वह अल्प है और पचास धन्वा उस्से भी अल्प और एक दिन में घोड़ा जिस्से सौ योजन अर्थात् चार सै कोश का चलने वाला हो ४१ मण्डल के जोर से ऐसीगति को बढ़ावै हेमन्त शिशिर बसन्त ऋतु में सन्ध्या प्रातःकाल सिखलावै ४२ और ग्रीष्म ऋतु में सन्ध्या में और शरद ऋतु में प्रातः काल मण्डल गति घोड़े को सिखलावै वर्षा ऋतु और ऊंची नीची जमीन में कभी न सिखलावै ४३ और घोड़े की सुन्दर गति से अग्नि बल दृढ़ता आरोग्यता घोड़े की बढ़तीहै और बोझे और मार्ग से परिश्रान्त घोड़े को धीरे २ टहलावै ४४ पीछे से घोड़े को शक्कर और सत्तू मिला के स्नेह दे और भोजन के लिये चना उड़द भटवास दे ४५ सूखा या गीला मांस पकवाके घोड़ेको दे और जो घोड़े का कोई अङ्ग जखमी हो तो थोड़ा मांस दे४६ मार्ग से आये हुये घोड़े का चारजामा न उतार के अश्वकी रक्षा

के लिये थोड़ा गुड़ दे ४७ और जब घोड़े की थकाहट दूर हो जाय और घोड़ा सावधान हो सुन्दर रूप को धारण करै तो पीठ का बन्धन चारजामाउतारै ४८ और घोड़े की देहमल के धूरी में लोटावै और स्नान पान तैराने से भली भांति पोषण करै ४९ घोड़े की सब दोष की हरने वाली मदिरा और जङ्गली रस हैं अपनी शक्ति के माफिक दूध घी या जल से मिला सत्तू घोड़े को दे ५० और दाना खाके और जल पीके उसी समय जोते हुये घोड़े के कासश्वासादि रोगहोते हैं ५१ यव चना घोड़े के लिये उत्तम अन्न हैं और यव मोठ मध्यम हैं मूंग मसूर अश्व के भोजन में नीच अन्न हैं ५२ और घोड़ा चारों पैर से उछल के मृग की भांति चलै वह प्लुता गति है और चलते हुये घोड़े का पैर न मिलै साफ चलै वह तुरगति है ५३ पैर को बटोरके मोर की भांति दुलकी चाल चलै वह चाल धौरीतक कहाती है५४ जो घोड़ा आधी देह हिलाता चलै वह बल्गित गतिहै घोड़े की चाल छः प्रकार कीहै १ धारा २ अस्कन्दित ३ रेचित ४ प्लुत ५५ ५ धौरीतक ६ बल्गित तिन के लक्षण अलग २ हैं धारागति वह है जो अति वेगयुतहो ५६ पैर और चाबुक के मारने से भ्रान्तहो के जो घोड़ा चलै आगे के पैर सिकोड़ के उछल उछल के जो गति ५७ वह आस्कन्दित कहाती है और थोड़ा उछल के बराबर चलै वह रेचित गति है ५८ बैल के मुख से चौगुना चौड़ा पेट होता डिल्लसहित तिगुना ऊंचा होता और साढ़े तीन गुना लम्बा होता है ५९ सात ताल संख्या का बैल इन गुणों से युक्त पूज्यहै न स्थायी न मन्द हो सुन्दर बोझ लेचलने वाला अति सुन्दर हो ६० सीधा सुन्दर पीठ वाला बैल श्रेष्ठहै तीस योजन का चलने वाला सुमुख घोड़ा प्रशस्त है६१नव ताल संख्या ऊंचा सुमुख ऊंट प्रशस्त है शतवर्ष मनुष्य की परम आयु

और उतनी ही हाथी की परमायु होती है ६२ मनुष्य और हाथी की बाल अवस्था बीस बर्ष और मनुष्य की साठ बर्ष की मध्य आयु होती है ६३ अस्सी वर्ष हाथी की मध्यम अवस्था होती है और चौंतीस वर्ष अश्व की परम आयु होती है ६४ बैल और ऊंट की परम आयु पच्चीस बर्ष है और घोड़ा बैल ऊंट की पांच बर्ष तक बाल्य अवस्था है ६५ और बैल और ऊंटकी मध्य आयु सोलह बर्ष है तत्पश्चात् वृद्धावस्था है ६६ दांत के निकलने पै बैल और ऊंटकी आयु जानी जाती है ६७ पहिले बर्षमें अश्वके सुपेद छः दांत होते हैं दूसरे बर्ष में काले ताम्र बर्ण नीचे को गत दो दांत होते हैं ६८ और तीसरे बर्ष में दो दांत तुल्य होते हैं क्रम से छः वर्ष में काले होते हैं और नवें बर्ष क्रमसे पीतहोते और बारह बर्ष में श्वेत हो जाते हैं ६९ और वेही दांत पन्द्रह बर्ष में कांच के सदृश होजाते हैं और अठारहवें बर्ष वेही दांत क्रम से मधु के सदृश होजाते हैं ७० और वेही दांत इक्कीसवें बर्ष शङ्ख के तुल्य श्वेतहो जाते हैं छिद्र हिलना पात तीन२ दांत करके होता है ७१ घोड़ेकी नाक के अग्र भाग में तीन रेखापड़ैं तो उस घोड़े की पूर्ण आयु होती और जैसे जैसे वह रेखा हीन हो उसी तरह आयु हीन होती है ७२ जङ्घा पर ओष्ठ रख के बैठै पीठ हिलावै जल में बैठै चलने में बैठ जाय पृष्ठ पाती ऊपर को पैर करै ७३ सर्प्प की भांति जीभ हो बानरकीसी सूरत हो डरपोकहो ऐसा घोड़ा निन्दित है माथे का तिलक छिद्रसहित हो और आश्रय के सहारेसे चलै ऐसा भी अश्व निन्दितहै ७४ बैल के चौथे बर्ष आठों दांत श्वेत कहे हैं और पांचवें बर्ष उनमेंसे दोहिस्से गिरपड़तेहैं और नये पैदा होतेहैं ७५ और छठेबर्ष बैलके दांत नजदीक हो जातेहैं और सातवें बर्षवेही दांत निकट होजातेहैं और आठवें बर्ष मध्यम दो दांत गिर पड़ते हैं

और उत्पन्न होते हैं ७६ और वे दांत काले पीले श्वेत रक्त शङ्ख के सदृश दो २ वर्षमेंहोत हैं और क्रमसे बर्षदिन पै वे दांतहिलने लगते हैं और गिरपड़ते हैं ७७ और ऊंट के कहे हुये प्रकार के सदृश अवस्था का ज्ञान होता है और हाथी के दबानेके लिये चलाने वाला और खींचने वाला अंकुश होताहै ७८ उसी अंकुश से हथिवान अच्छी चाल सिखलाता है और लगाम के दो खण्ड ऊपर को और बगल के दो खण्ड बारह अंगुल के होते हैं ७६ उस लगाम के मुखमें दो दृढ़ छिद्र होते हैं और लगामके दोनों बगल में रस्सी लगाने के लिये दो कड़े लगते हैं ८० इस प्रकार के लगाम से घोड़े को बश में करै और नाक के खींचने की रस्सी से बैल और ऊंटको बशमें करै ८१ इनके देहके मल शोधन अर्थात् देह साफ करनेके लिये तेज लोहे का खरहरा होता है अच्छी शिक्षा से मनुष्य और पशु नम्र होजाते हैं ८२ और सेना के लोग विशेष करके अनम्र होते हैं इस कारण उनको धन दण्ड अर्थात् जुरमाना करके सिखलावै जल के निकट बैल घोड़े की शिक्षा करै और जङ्गल में हाथी और ऊंट की शिक्षाकरै ८३ और पैदर सिपाहियों की शिक्षा सेना स्थानके निकट वर्त्ती समधरातल में करै और चार चार सै कोश पै राजा सेना को राखै ८४ पहिले हाथी ऊंट घोड़ा भार लेजाने में श्रेष्ठ हैं और बर्षा काल को छोड़ के गाड़ी सब से उत्तमहै ८५ राजा छोटेभी शत्रु के जीतने के लिये थोड़ी सामग्री से न जाय राजा मोटी तैयारी सेनासे चढ़ाईकरै ८६ अशिक्षित असार तुरन्त के नौकरको बलवान्भी हो तो बुद्धिमान् राजा युद्धको छोड़ अन्यकार्य्यमें लगावै ८७ छोटे जीवके मारनेमेंबारम्बार बिकार करनेको यत्नकरताहै और बिकार करने वाला बलवान् वह क्यों न यत्न करैगा ८८ राजा यद्यपि बहुतसी सेना रखताहो आप कादरहो तो वहरणमें

ठहरने के योग्य नहीं होता और थोड़ी सेना वाला शूर राजा अरि के साथ युद्ध करने में ठहरता है ८९ सिखलाये हुये थोड़े से शूर अपने शत्रुके जीतने में समर्थ होते हैं और बड़ी शिक्षित सेना से युत शूर हो तो क्यों न शत्रु को जीतै ९० शूर शिक्षित सार सेना से रणमें राजा शत्रुके पास जाय क्योंकि प्राण नाश में भी शूर सेना स्वामी को नहीं छोड़ती ९१ कटु वाक्य मजदूरी के ह्रास भय नित्य प्रवास परिश्रम इतने से अवश्य भेद होताहै ९२ जिसकी सेना फूट जातीहै उसकी जय नहीं होती शत्रु की थोड़ी भी सेना हो तो राजा उस का भी भेद करै ९३ शत्रु सेना का जिस्से अवश्य भेद हो उसी तरह कुटिलता और दानसे राजा करै ९४ और अत्यन्त प्रबल शत्रु को सेवा नम्रता से बश्य करै प्रबल शत्रु को मान दानसे और हीन बलको युद्ध से बश में करै ९५ मैत्री से सम बल को और भेद से सब को बश्य करै शत्रुके उपाय सेना भेद के सिवाय और नहीं हैं ९६ राजा तभी तक नीतिमान् कहाताहै जब तक स्वयं सुबलवान् हो तभी तक और भी मित्र होतेहैं जैसे पुष्ट अग्निके पवनमित्र होते थोड़ी अग्निके नहीं ९७ शत्रुकरके त्यक्त सेनाको लेले जहां अपनी सेना हो वहां न रक्खै उस सेना को अन्यत्र स्थापित करै या पहिले युद्ध के लिये भेजै ९८ मित्र सेनाको राजानिकट या पृष्ट भाग में अथवा बगल में रक्खै और मंत्र यंत्र अग्नि करके जिस को फेंकै और मारै वह ९९ अस्त्र कहाता है उस्से अन्य शस्त्र जैसे तलवार कुन्त अस्त्र दो तरह का है एक नालिक दूसरा मांत्रिक १००० जब मांत्रिक अस्त्र न हो तो नालिक अस्त्र धारण करै शस्त्र सहित राजा सदा बिजय को जाय १ लघु धार और दीर्घ धार के भेद से शस्त्र अस्त्र के नाम होते हैं और अस्त्र के जानने वाले नवीन अस्त्र को व्यवहार के लिये अलग प्रसिद्ध

करते हैं २ नालिक शस्त्र दो प्रकार का है एक बड़ा दूसरा छोटा बाजू और ऊपर पांच बीता तक एक नालिक है ३ इस नाल के मूल और अग्र भाग में लक्ष्य भेदी तिल विंदु होता है और जिस चाप में अग्नि पड़ै और बारूद उड़ै वह कर्णके सदृश होता है ४ सुकाष्ठ के अङ्ग के निकट छिद्र मध्यमें अंगुल भर का बिल उस के भीतर बारूद की धारण कराने वाली शलाका अर्थात् गज संयुत दृढ़ ५ इस लघु नालिक अर्थात् बन्दूक को पैदर और सवार रखते हैं जैसे जैसे मजबूत उसकी नाल होती और जैसा मोटा छिद्र हो ६ और जितना लम्बा और गोल बन्दूक हो उतनाही दूर भेदी होताहै मूल छिद्र और सूत्र से लक्ष्य समसन्धान भाजि अर्थात् निशाना के जो समहोय ७ वह काष्ठ और छिद्र से विवर्जित वृहन्नालिक यानी तोप कहाती है वह गाड़ी आदिपर चलतीहै औरयोजन भरसे जय देती है ८ सोंचर नोन पांच तोला गन्धक चार तोला और अन्तर्द्धूम से बिपक्व मदार और जलाया हुआ केलेका गाभ एक सेर ९ साफ लेके बूंकके मिलावै शुद्ध मदार के रसका पुटदे और घाममें सुखावै १० शक्करकी तरह पीसै तो यह अग्नि चूर्ण अर्थात् बारूद बनता है और सोंचर नोन का छः या चार भागले ११ इस नाल अस्त्र के चूर्णमें गन्धक और अङ्गार पूर्ववत् ले गोला लोहमय अथवा कुल्फीदार हो १२ शीशा की गोली बन्दूक के लिये अथवा अन्यधातु की या लोह-सारमय गोली बनावै अथवा बन्दूक अन्य धातुमय बनावै १३ उसतोप को गोलन्दाज नित्यही साफ करैं अङ्गार गन्धक सोंचर नोन १४ मैनसिल हरताल शीश मल हींग कान्तीसार कपूर १५ लाख धूप देवदारुका गोंद इनके समन्यून अंश से अनेक तरह की बारूद होती है १६ ऐसी बिद्या की कल्पना करै कि जल धूप में काम दे अग्नि के संयोग से लक्ष्य में गोला को मारै १७

प्रथम तोप को साफ करै तो उसमें बारूद दे और दण्डसे उसको तोपमें मजबूती से धरै १८ उसके पीछे गोलादे तदनन्तर रंजक दे उसी रंजक में अग्निको देके गोलेको लक्ष्यमें मारै १९ जिससे धन्वा पै चढ़ाया हुआ बाणलक्ष्यका भेदन करै उसी तरह दोनों हाथसे खींच कै बाण मारै २० अठपहल मोटे तिल वाली हृदय के बराबर पट्टिशके सदृश हाथ भरपर तिलयुक्त दो धारावाला २१ थोड़ा टेढ़ा एकधार चार अंगुल चौड़ा नाभि के बराबर दृढ़ मुष्टि चन्द्रमाके सदृश क्षुरप्र कहलाता है २२ प्रास खड्ग चार हाथ का होता दण्डमें तिल क्षुरकासा मुख होताहै और दश हाथ लम्बा फालमुख बिन्दीदार कुन्त होताहै २३ छः हाथके घेरसे युक्त तेज सुनाभियुक्त चक्र होताहै और तीन हाथके दण्डेसे युक्त त्रिशिख लोहकी रस्सीवाला पास कहाता है २४ और गेहूंके सदृश मोटे लोहेके पत्रका दृढ़ कवच होता वह शिर सहित ऊपर के देहकी रक्षा और शोभित करता है २५ जो राजा सम्पूर्ण युद्धकी सामग्री से युक्तहो और षट्गुण मन्त्रको जानताहो बहुत अस्त्र से युक्तहो वही राजा युद्ध करने की इच्छा करै २६ अन्यथा युद्ध करने से राजा दुःख पाता और राज्य से च्युत होजाताहै और जो उद्युक्त होके लड़ावते हैं वे शत्रुहैं २७ अपने अर्थकी सिद्धिके लिये अस्त्र आदिसे व्यापार युद्ध कहाता है और मन्त्रास्त्र से देव युद्ध और नालास्त्रसे असुर युद्ध होता है २८ और शत्रु बाहुसे उत्पन्न मानव युद्ध कहाता है एक का बहुत के साथ और बहुत का बहुतके साथ युद्ध होताहै २९ एकका एकके साथ दो का दोके साथ युद्ध होता है काल देश शत्रु बल और अपने बलको देख ३० उपाय और षट्गुण मन्त्रके सदृश युद्ध की इच्छा करै और शरद हेमन्त शिशिर काल युद्ध में उत्तम है ३१ और बसन्त ऋतु और गर्म्मीकी ऋतु युद्ध में अधमहै बर्षामें युद्ध अच्छा नहीं वह

सामका समयहै ३२ जब राजा युद्धकी सामग्रीसे सम्पन्न अधिक बलहो मनमें उत्साह और शुभ शकुन हो वही युद्धका शुभ समय है ३३ आवश्यक कार्य्य हो और शुभ समय न हो हृदयमें विश्वेश का ध्यान करके अपना चिन्ह घरमें छोड़के राजा युद्धको जाय ३४ इसमें गो स्त्री बिप्रके बिनाश का काल नियम नहीं है जिस देशमें जैसा समय हो उसीतरह कवायदी सेनाको जगह दे ३५ शत्रु के बिपरीत देश उत्तम देश है अपनी और शत्रुकी कवायदी जगह तुल्यहो ३६ शास्त्रके जाननेवाले जिस देशको मध्यम कहा है और शत्रु सेनाकी छावनी हो ३७ और अपने बिपरीत हो वह देश अधम है और अपनी सेनासे शत्रुकी सेना तृतीयांश जो हीन हो ३८ और चाहे कि पूरा करलें तो बिना सिखलाई असार तुरन्तकी रक्खी हुई सेना बिजयप्रद नहीं होती जो पुत्रकी तरह पालित दान मानसे बढ़ाई ३९ युद्धकी सामग्रीसे परिपूर्ण अपना सैन्य बिजयप्रद होताहै और सन्धि बिग्रह यान आसन समाश्रय द्वैधीभाव ये षट्गुण मन्त्र हैं और जिस क्रिया से बलवान् शत्रु बश्य हो ४० उस क्रिया को सन्धि कहते हैं इसको यत्न पूर्ब्बक बिचारै विकर्षित हो अर्थात् बलसे शत्रु स्वाधीन हो ४१ जिस्से हो उसको बिग्रह कहते हैं राजा मन्त्रियोंके साथ उसका बिचार करै और शत्रुके नाशार्त्थ अपने अभीष्टके सिद्धिके लिये गमनयान कहाता है ४२ जिस स्थान से अपनी रक्षा और शत्रुका नाश हो उसको आसन कहतेहैं और जिस्से रक्षित हो दुर्ब्बल भी बलवान् हो वह आश्रय कहाता है ४३ अपनी सेनाका थोक बांधके दो जगह रखना द्वैधीभाव है बलवान् शत्रु करके दबे हुये राजा को इस्से अन्य उपाय नहींहै ४४ बिपत्तिमें पड़ा हुआ राजा सन्धि करके काल पालन करै एक यही सन्धिरूप उपहार मत है ४५ और अन्य उपहारके भेद सम्पूर्ण मैत्री बिवर्ज्जित हैं बली

शत्रु जब चढ़ाई करता है बिना कुछ पाये नहीं फिरता ४६ इस से सन्धिको छोड़ अन्य नजर नहीं है और शत्रुके बलके अनुसार उपहार दे ४७ शत्रुकी सेवा अङ्गीकार करै अथवा कन्या पृथ्वी या धन दे और सलाह पूर्ब्बक अन्यके जयके लिये अपने सामन्तोंको इकट्ठा करै ४८ दुष्ट राजा के साथ सन्धि करै वह काल पाके उलट जाताहै जैसे एकमें मिला हुआ बहुत कण्टकोंसे युत ४९ काटने के योग्य नहीं होता उसीतरह सेनायुत राजा किसी के जीतने योग्य नहीं होता सामान्य भय हो तो बलीते सन्धि करै ५० और बहुत शत्रु हों तो बुद्धिमान् राजा अपनी रक्षा करै बली शत्रु के साथ युद्ध करना यह शास्त्र की आज्ञा नहीं है ५१ प्रतिबात हीन मेघ कभी नहीं चलता उसी तरह बली शत्रु से नम्रता करै और समय पाके बिक्रम करै ५२ सम्पत्ति कभी नहीं जाती जैसे ऊंचे स्थान को नदी नहीं जाती और बुद्धिमान् राजा सन्धि करने से भी विश्वास न करै ५३ पूर्ब्बहीं मित्रता करके इन्द्रने वृत्रासुरका बध किया है बिपत्ति करके ग्रस्त शत्रुसे पीड़ित राजा अपनी अभ्युदयकी इच्छा करै ५४ देश काल बल से संयुक्त राजा बिग्रह का प्रारम्भ करै और प्रहीन बल मित्र दुर्ग्गस्थ और जो दो शत्रु के बीच में हो ५५ अत्यन्त विषयाशक्त प्रजा द्रव्यका हरने वाला भिन्नमन्त्री और सेनायुत राजाको घेरिकै पीड़ित करै ५६ यह बिग्रह कहाताहै अन्य कलह बलवान् शूर के अल्पबल का युद्ध बिग्रह है ५७ बहुधा बिग्रह में पुरुषों का सर्ब नाश होताहै और दो का एक अभिलाष होता तो कलह होता है ५८ जब दूसरा उपाय न हो तो कलह करै विगृह्य सन्धाय सम्भूय प्रसङ्ग ५९ उपेक्षा निपुण इन भेदों से यान पांच तरहका है जोसब शत्रुगण को ग्रहण करके चलाजाय ६० उसको यानके जानने वाले आचार्य्य विगृह्ययान कहतेहैं सम्पूर्ण

शत्रु मित्र अपने मित्रों से चारों तरफ बल करके ६१ शत्रु को उसके साथ पकड़ गमन करै वह विगृह्य गमन कहाताहै और अन्यत्र यात्राका सन्धानकरके बगलके शत्रुसे उठावनी करै ६२वह सन्धाय गमन कहाताहै और फलार्थीहो उसके जीतनेकी इच्छा करै साम्परायिक सेनापतियों के साथ एक भूप हो ६३ और शौर्य्य शक्ति सामन्तोंसहित गमन सम्भूय गमन कहाताहै और अन्यत्र प्रस्थान करै और सङ्गसे और जगह जाय ६४ यान के जानने वाले मन्त्री लोग उसको प्रसङ्गयान कहते हैं और बली राजा शत्रु के ऊपर जाने से विकृत फल पाके ६५ उसको छोड़ के जो यानहै वह उपेक्षायान कहाताहै दुर्वृत्त और अकुलीन शत्रु पर चढ़ाई करै ६६ राजा अपने बलको हर्षित और दानसे तुष्ट कर सेनाका स्वामी बीर पुरुषों सहित आगे चलै ६७ सेना के मध्यमें स्त्री और धनको रक्खै और स्वामी थोड़ा धन और सेना की सदा उद्युक्त हो रक्षाकरै ६८ और नदी पर्वत बन किला इन स्थानों में जहां २ भय हो वहां २ सेनाका किला बनाके गमनकरै ६९ आगेसे भय होतो मकर व्यूहसे गमनकरै अथवा सूचीव्यूह से गमन करै ७० और पीछे से भय हो तो शकटव्यूह और बगलमें भय हो तो बज्रव्यूह और सर्वत्र भय होतो सर्वतो भद्र अथवा व्याल व्यूह से गमन करै ७१ और शत्रु सेना का भेद करने वाला यथा देश बाजा या बोली पर व्यूह रचना करै ७२ जिसको अपनी सेनाके सिवाय दूसरा कोई न जानै उसी तरह बुद्धिमान् सेनापति नाना प्रकार की व्यूह रचना करै ७३ घोड़े हाथी पैदरका अलग२ सैनिक लोगोंको व्यूहके सङ्केत बड़े शब्द से राजा सुनावे ७४ बायें या दाहिने या मध्यमें या आगे स्थित हो सेना के लोग उस शब्द को सुन जैसा कहा है सुनके उसी तरह सिखलाया हुआ कामकरें ७५ सम्मीलन अर्थात् मिलजाना

अलग २ होजाना घूमना बटुर जाना चलना फिर जाना ७६ पर्य्याय से सम्मुख होना उठना और लोट जाना ठहरना अष्ट-दलकी तरह और चक्रकी तरह गोल होजाना ७७ शूचीव्यूह शकटव्यूह अर्द्धचन्द्रव्यूहके तुल्य होजाना थोड़े २ अलग होजाना और पर्य्याय से पंक्तिमें आ जाना ७८ शस्त्र और अस्त्रका धारण करना चढ़ाना निशाने का मारना अस्त्र का त्याग और शस्त्र का परिघातन ७६ झट चढ़ाना फिर गिराना ग्रहण करना पुनः त्याग देना और शस्त्र अस्त्रके पद बिक्रमसे अपनी रक्षा और दूसरेका मारना ८० दो तीन या चारकी पंक्ति बांधके चलना और पूर्ब्ब गृहको छोड़के जाना या उसके निकट रहना ८१ अस्त्र सिद्धिके लिये अपशरण करै निकट जाके अस्त्रका विमोक्षण करै पूर्ब्ब मुख हो अस्त्रको व्यूहस्थ सेना वाला सदा उतारै ८२ बैठ के अस्त्रका त्याग करै फिर पूर्ब्बको चलै और पूर्ब्ब आसीन अस्त्रके निकट जा अपने अस्त्रको उतारै ८३ एक २ या दो २ अथवा बहुतसे या सब साथ जैसा सिखलाया गया हो जैसे आकाश में क्रौंच की गति होतीहै उसी तरह पंक्ति से होता है ८४ जैसा स्थान और सेना हो वैसा व्यूह का मुख बनावै पतला गला मध्य पुच्छ और पंक्ति से मोटे पखने हों ८५ बड़े बड़े पक्ष मध्य गल और पुच्छ मुख से श्येन के तुल्य हो और चारपैर का मकर लम्बा बड़े मुखवाला दो ओठों से युक्त ८६ शूची व्यूह सूक्ष्म मुख लम्बी मूल में छिद्र बीच में सम होता है और चक्र व्यूह एक मार्ग और आठ तरह घिरा हुआ होता है ८७ चारों तरफ आठ घेरे से युत सर्बतो भद्र व्यूह होता है मार्गतक आठव कङ्कण के सदृश होते गोल सर्बतो मुख होता है ८८ शकट व्यूह शकट के तुल्य और व्याल व्यूह व्याल की तरह होता है सेना थोड़ी हो या बहुत रखका स्थान और मार्ग देखके ८६ बहुत से

व्यूह या एक व्यूह अथवा दो व्यूह या मिलेहुये व्यूह बनावै और ऐसा यन्त्रास्त्र करै जिससे शत्रु सेनामें भेद पड़जाय ९० राजा सैन्य सहित स्थल में रहै वही उस का आसन है तृण अन्न जल अन्य जो शत्रु पोषकहैं ९१ अच्छी तरह इनको रोकके यत्न से चारों तरफ डेरा करै युद्धकी सामग्री से हीन प्रक्षीण घास और इन्धन हो ९२ ऐसा राजा क्षीण प्रजा हो समय पाके बश होता है शत्रु और जीतने वाले के विग्रह में दोनों क्षीणहों जिस स्थानसे युद्धको गया था उसी स्थान पर आसन करै और बली शत्रु करके पीड्यमान निरुपाय होतो ९३ कुलीन सत्यबादी श्रेष्ठ वली राजाका आश्रयले और जीतने वाले सुहृत् सम्बन्धि बान्धव ये सह्य अर्थ हैं ९४ अन्य राजाको युद्ध का खर्चा दे या हिस्सा करदे यही आश्रय कहाताहै अब महात्मा लोग दुर्ग कहते हैं ९५ अनिश्चित उपाय हो तो अपने समय को देखै काक के नेत्र की तरह अलक्षित होरहै ९६ अन्य काम औरों को दिखावै और कामकरै सतउपाय सन्मन्त्र और उद्यम से कार्य्य सिद्धि होती है९७ उद्यम से छोटे मनुष्य की भी जय होती है राजा की क्यों न हो उद्यमसे कार्य सिद्धहोते केवल मनोरथ करने से कार्य सिद्ध नहीं होते ९८ सोते हुये सिंह के मुख में आपही आके हाथी नहीं गिरता और लोहा पुष्ट बस्तु है पर उपाय से मुलायम होता है ९९ यह लोक में प्रसिद्ध है कि जल अग्नि को बुझादेता है और उपाय करने से अग्नि जल को सोख लेता है ११०० उपाय से मदान्ध हाथी के मस्तक पर पैर रखते हैं और षट्गुणान्त समाश्रय उपाय से भेद उत्तम है १ जीतने वाला राजा सदा भेद और उपाय करै इन दोनों बिना राजा कभी युद्ध न करै २ ऐसा उपाय करै कि रिपु के सेनापति और मन्त्रियों और प्रजा और राजाकी स्त्रियोंमें भेद

हो ३ शत्रु और अपने षट्गुण उपायों को देख के प्राणके सन्देह और सर्व्वस्व के हरणमें युद्ध करै ४ स्त्री ब्राह्मण गऊ के बिनाश में और ब्राह्मणों के युद्ध में कभी परांमुख न हो ५ युद्ध को छोड़के जो भागता है उसको देवता मारते हैं सम उत्तम अधम को रोकता हुआ राजा प्रजा पालन करै ६ क्षत्री का धर्म्म बिचार के युद्ध से निवृत्त न हो बिना युद्धकरने वाले राजा और त्याग रहित ब्राह्मण को ७ पृथ्वी लील लेती है जैसे बिलमें सोतेहुये कोसर्प्प लील लेता है और विपत्ति में ब्राह्मण क्षत्री का धर्म्म करै तो उत्तम है ८ और उस ब्राह्मण का जन्म लोक में प्रशस्त है क्योंकि क्षत्री ब्राह्मण से हुयेहैं और शय्यापर मरना यह क्षत्री का अधर्म्महै ९ कफ और पित्त को त्याग करता और दीन बचन कहता हुआ बिना घाव के जो क्षत्री मरताहै १० ऐसे क्षत्री के कर्म्मको पुराने बुद्धिमान् लोग प्रशंसा नहीं करते बिना रणके गृह में क्षत्री का मरना प्रशस्त नहीं है ११ कुशल का अकुशलत्व होना यह अधर्म्म की कृपणता है जाति करके परिवारित रण में लड़के क्षत्री मरै १२ शस्त्र अस्त्रसे कटाक्षत्री मरने के योग्य है रण में परस्पर राजों को मारै १३ जो युद्ध करता है और फिरता नहीं और अपने स्वामी के लिये सेना के सङ्ग जो भयसे लौट न आवै उसको अनन्त स्वर्ग्ग होताहै और संग्राम में मारे हुये शूरकी कभी चिन्ता न करै १४ सब पापों से छूट के पबित्र हो मोक्ष को पाता है और हजारों श्रेष्ठ अप्सरा संग्राम में मरे हुये को देख १५ बहुत शीघ्र दौड़ती हैं कि यह हमारा स्वामी हो और मुनि लोग बड़ी तपस्या से जो बड़ा स्थान पाते हैं १६ उसको युद्धाभिमुख पुरुष शीघ्र पाता है यह तप पुण्य और सनातन धर्म्म है १७ जो युद्ध से नहीं भागता उसके चारों आश्रम होते हैं शूरता से पर और कुछ तीनों लोक

में नहींहै १८ शूर सबका पालन करता है और शूरमें सब बातें रहती हैं और चरका अचर आहारहै और दांत वाले के बिना दांत वाले आहार हैं १९ बिना हाथ वाले हाथवालेके आहार हैं और कादर शूरके आहार हैं ये दो पुरुष सूर्य्य मण्डल के भेदन करने वाले हैं २० परिव्राट योग युक्त औ रण में अभिमुख स्थित और समर्त्थ आततायीके बधसे अपनेको बचावै २१ वेद का जानने वाला सुन्दर विद्यावान् ब्राह्मण गुरुसे द्रोह करै वह आततायी है और शूद्रके तुल्यहै २२ आततायीके बध में मारने वालेको कुछदोष नहीं होता और आते हुये बालक भी आततायी शस्त्र उठाके २३ मारने से भ्रूणहा नहीं होता न मारै तो भ्रूणहा होताहै और जो जीने की आशा करके युद्धसे भागता है वह नराधम कहाता है२४ वह जब तक जीता है तब तक देश भर का पाप भोगता है मित्र या स्वामी को छोड़ के जो रण से भागता है २५ वह मरने पर नरकको जाता और जब तक जीता रहता है सब निन्दा करते हैं और मित्र को बिपत्ति में देख जो सहाय नहीं करता २६ इस लोक में अयश को पाता और मरने पर नरक को जाताहै और बिश्वास करके जो शरणको प्राप्त होता है जो दुष्ट बुद्धि उसका त्याग करताहै २७ वह जब तक चौदह इन्द्र रहते हैं तब तक नरक में रहता है और दुष्ट क्षत्री का जो ब्राह्मण नाश करतेहैं २८ शस्त्रास्त्रसे युद्ध करके वह पाप भागी नहींहोते और युद्धकेअनुकूल भूमिका जिसतरह लाभहो उसीतरह २९ दोनोंसेनाके आधे भागसे प्रथम सेनाके अर्द्ध भागसे युद्ध करै और मन्त्री से रक्षित अमात्य के साथ युद्धकरै ३० जब प्राणका सन्देह हो तो राजा करके रक्षित सेना से युद्ध दूर के चलने से क्षुधा और पिपासासे आतुर ३१ व्याधि काल मरण से पीड़ित शत्रु से भागा कीचड़ धूली जल में चलते थके बासातुर ३२

प्रसुप्त भोजनमें व्यग्र दुष्ट भूमिमें स्थित घोराग्नि भय संत्रस्त दृष्टि बात समाहत ३३ इत्यादिक दुःखों करके व्याकुल अपनी सेना की भली भांति रक्षा करै और शत्रु सेनाका नाश करै ३४ और षट्गुण उपाय अपना और शत्रु का मंत्र बिचारै धर्म्म युद्ध अथवा छल युद्धसे शत्रुको सदा मारै ३५ सवारी में चौथाई भृत्य और अपने सेवकों को राजा सदा बढ़ावै और युद्धमें ढाल और कवच से राजा सदा अपनी रक्षा करै ३६ सेना वालोंको भली भांति सैन्य शौर्य्यबर्द्धन मदिरा पिलाके नालास्त्र और खड्ग आदि युक्त सैनिकों से शत्रुओं को मारै ३७ भालासे सवार को रथ पै चढ़ बाण से रथी को मारै गजवाला गजवाले से लड़ै और घोड़ेवाला घोड़ेवाले से युद्ध करै ३८ रथ से रथ जुटै पैदर से पैदर एक अस्त्र से एक शस्त्र को अथवा अस्त्र को अस्त्र से काटै ३९ जमीन में खड़े हुये और नपुंसक और हाथ जोड़े हुये बाल खोले और बैठे हुये और हम तुम्हारेही हैं यह कहते हुये को न मारै ४० सुसन्न कवचहीन नग्न और निरस्त्र और जो युद्ध करने वालों को देखता हो और जो शत्रु के साथ युद्ध करता हो ऐसे मनुष्यों को न मारै ४१ जो जल पीताहो भोजन करता हो या अन्य कार्य्याकुलहो डराहो अथवा भगाहो इनको सज्जनों के धर्म्म स्मरण करके न मारै ४२ वृद्ध बाल स्त्री केवल राजा इनको न मारै यथायोग्य मारते हुये का धर्म्म हीन नहीं होता ४३ धर्म्म युद्ध और छल युद्धमें ये नियम नहीं रहते छल युद्ध से और युद्ध नहीं क्योंकि अन्यथा बलवान् शत्रु का नाश नहीं होता ४४ राम कृष्ण इन्द्र आदि देवताओंने पूर्व्वहीं कूट युद्ध का आदर किया है कूट युद्ध से बालि कालयवन नमुचि मारे गये ४५ प्रसन्न मुख हो कोमल बाणी से क्षुरा की धार सदृश मन से रिपु का छिद्र देखै ४६ मञ्च पर बैठा हुआ शतानीक सेना के कार्य्य को

बिचारता हुआ सदा व्यूह के संकेत बाद्य शब्दान्त वर्त्ती ४७ राजा के देश के हित चाहने वाले सेना के लोग घूमते हैं और शत्रु करके अपनी सेनाको मारी जाती देखके यत्नकरै ४८ आगे काम करने वाले योधाओंको राजा इनाम अथवा अधिकार क्रम से यथायोग्य सदादे ४९ जल अन्न तृणके रोकनेसे शत्रुको यत्न से पीड़ित कर पहिले विषम हो पीछे वेग से मारै ५० नकली सोना देके शत्रु की सेनाको फोड़ले वह सेना यातो नित्य विश्वास में सोतीहो अथवा जागने पर कृतश्रमहो ५१ इसतरह लालच दिखलानेपर भी होशियारी से शत्रु सेनाका नाशकरै उस सेनाके सहाय का बल कभी सङ्कट में भी न ले ५२ और अपने समीप अन्यको राज्य न दे क्षण भरमें युद्धकेलिये तैयारीकरै और क्षणभर में भागके फिर घरमें आवै ५३ और चोरकी तरह सदा दूरसे शत्रु पर घेरके गिरै और मोहर रुपया पैसाजो जितनापावै वह उसी का है ५४ और राजा कार्य्यके सदृश योधाओं को प्रसन्न करता हुआ वह धन दे इसतरह शत्रुको जीतके उससे करमें ५५ राज्य का अंश अथवा राज्यले और प्रजा को प्रसन्न रक्खै और नगारे के मङ्गल शब्दसे राजा अपने पुरको जाय ५६ और राजा शत्रुकी प्रजाको पुत्र की तरह पालन करै जिस से वे अपने बश में रहैं और सलाह के लिये दूसरा मन्त्री नियत करै ५७ देश काल पात्र में आदि मध्य अन्त में यह मन्त्र फल ऐसा है यह उपाय से बिचारै ५८ प्रधान अपना कार्य्य युवराज से कहै फिर युवराज प्रधानोंके साथ राजा से कहै ५९ राजा प्रथम युवराज से कहै और युवराज राजा के समीपही अधिकारी मन्त्रियों से कहै ६० और पुरोहित राजा को सत् असत्कर्म्मका उपदेश करै और राजा ग्राम के बाहर समीपही सेना सदा रक्खै ६१ गांव के लोग और सिपाहियों को लेन देन न हो फौजके लिये बाजार

फौजही में रक्खै ६२ बर्ष भर सेना को इकट्ठा न रक्खै और हजार सिपाही सदा तैयार रहैं क्षण भर उनको सिखलावै ६३ सेना वालोंको आठवें दिन उनका नियम सिखलावै तेजी और किसी को मारना राजकार्य्य में अबिलम्ब ६४ राजाका अनिष्ठ देखना स्वधर्म्म का छोड़ना इन को सेना के लोग छोड़ दें और किसी से बात न करैं ६५ और सिपाही राजा की आज्ञा बिना ग्राम में न जायं और ओहदेदार के दोष को भी राजा से कहैं ६६ और सेनाके लोग स्वामी के कार्य्यको मित्रता पूर्ब्बक करैं सुन्दर साफ शस्त्र अस्त्र बस्त्र की रक्षा करैं ६७ अन्न जल पसेरी भर और पात्र बहुत अन्न का साधक हो इस आज्ञा से अन्यथा होनेसे चारको यमपुरी को भेज देंगे ६८ भेद कराने वाला और शत्रु धन लेके हम को दिखावै और सेना वालों को व्यूह का अनुकरण राजा अभ्यास करावै ६९ उसीतरह अयन अयन पर निशाने को अस्त्र मार के गिरावै सन्ध्या और प्रातःकाल सेनावालों की गिन्ती करै ७० जाति सूरत वय देश ग्राम बास को बिचार के जब नौकर हो उसकी अवधि दे और जो कुछ दे उसकी रसीद लिखाले ७१ सेवक की मजदूरी में कितना पारितोषिक दिया उसके पानेका पत्र लेके मजदूरीका पत्रदे ७२ सेनावालों में जो सिखलाने वाले हों उनको पूर्ण मासिक दे और जो व्यूहाभ्यासमें नियुक्तहों उनको आधा मासिकदे ७३ असत्कवाश्रित सैन्य शत्रु योगसे नाश करता है राजा के असद्गुण रत कौन हैं और कौन गुण द्वेषी हैं ७४ असद्गुण से उदासीन कौन हैं विचार पूर्ब्बक राजा उनको मारै और सुखाशक्त भृत्य गुणी भी हो उसका राजा त्याग करै ७५ सुजन और बिश्वासी मनुष्य को राजा महल में नियत करै और उसी तरह के मनुष्य को राजा धन आदिके खर्च करने में रक्खै ७६ उसी त-

रह लोकके विश्वासियों को बाहर के कामों में युक्त करै अन्यथा करनेसे केवल निन्दा होतीहै ७७ शत्रुके सम्बन्धी जो भिन्न मन्त्री के गण गुणा धक भीहों तो राजा के दुर्गुण से हतमान होते हैं ७८ और जो भृत्य राज कार्य्य साधकहों उनका पोषण करै और जो लोभसे असेवन करते और भिन्न रहते उनको आधा मासिक दे ७९ और शत्रु कर के त्यागे सुगुणी सुभृत्यका राजा पालनकरै और पराये राज्य के हरने में भिन्नावधि मजदूरी दे ८० आधा मासिक उस के पुत्र को और चौथाई स्त्री को दे और जिसका राज्य हरै उसके पुत्र आदि सद्गुण हों तो चतुर्थांश मासिक दे ८१ अथवा हरे हुये राज्य में से बत्तीसवां अंशदे और हृत राज्य का खजाना भोग क लिये ले ८२ अथवा उस धनका पूर्वोक्त प्रमाण से आधा धन दे वह धन जबतक द्विगुण न हो तबतक दे ऊपर कभी न दे ८३ अपनी बड़ाई के लिये हृत राज्य की रक्षा करै अच्छेलोगों को मान से प्रसन्न करै और दुष्टोंको पीड़ादे ८४ आठ दश अथवा बारह दिन रात्रिके भाग करके पहरावालों को देख पहरा पर नियत करै ८५ प्रथम कल्पित अंशकी यामिक लोग सेवा करें आद्य फिर अन्तिम और अपर लोग अपने से पूर्वको मानें ८६ फिरभी उसी तरह योजना करै कि प्रथम पहिला फिर उसीतरह अन्तिम स्वपूर्व्वार्द्ध दूसरे दिन और क्रम से द्वितीय आदि ८७ दिन में चारसे अधिक यामिकों को नियत करै और बड़ा कार्य्य देख के एक साथ बहुतों को पहरा पर नियत करै ८८ और चारसे कम पहरा कभी न नियत करै जिसकी रक्षा करनी हो और सिखलाना हो पहरावाले से कहदे ८९ उस यामिककी दृष्टिके सामने सम्पूर्ण बस्तुहों और यामिक भी उस ताले और कोठा आदि की अपने समय भर रक्षा करै ९० वह यामिक अपनी बदली के समय दूसरे यामिक को ठीक २

दिखा दे और क्षण क्षणमें पहरा वालोंको दूरसे पुकारा करै ९१ राजा अपने किये हुये सम्पूर्ण नियमों को सदा पालता रहै तभी राजा सबमें पूज्यहोताहै ९२ जिस राजाके नियत कर्म होते और स्वीकार किये हुयेमें दृढ़ हो और अयोग्यके त्यागमें नियतहो वह बहुत दिन तक राजा रहता है ९३ और जिस राजा के कार्य्य और सामुत्व और बचनों का नियम न हो वह सदा कुटिल राजा शीघ्र अपनेपदसे च्युत होजाताहै९४जिसतरह मनुष्य व्याघ्र गज सिंहके सिखलानेको समर्त्थ नहींहै उसीतरह स्वेच्छाचारी राजा के सिखलाने को मन्त्री लोग समर्त्थ नहींहोते ९५ अधिकार को प्राप्त मन्त्री लोग हित में निस्सार हैं क्योंकि हजार मन रुई से हाथी नहीं बांधाजाता ९६ कीचड़में फंसेहुये हाथीके निकालने को बली दिग्गज समर्त्थ है उसी तरह नीति भ्रष्ट राजाको दूसरा राजा निकाल सक्ता है ९७ बलवान् राजाके छोटे सेवक में जैसे श्री तेज होताहै उसतरह छोटे राजा और उसके मन्त्री
में श्रीतेज नहीं होता ९८ बहुतोंका एकमत होना राजा बलवान्
करता है जैसे बहुत सूत्रों से की हुई रस्सी सिंह आदि के आकर्षण के योग्य होतीहै ९९ भ्रष्टराज्य शत्रुके आधीन रहै बहुत सेनान रक्खै और अपने पुत्रआदि की अभिवृद्धिके लियेखजानेको सदा बढ़ाता रहै १२०० मेघके जलसेजो पुष्टि होतीहै वह क्या नदी आदिके जलसे होती है जैसी प्रजा वृद्धि राजा के धन से होती है वैसी धनीके धनसे नहींहोती है १ राजा बड़ा बली भी हो तो प्रथम पराये राज्य में कोमलता दिखावै और प्रजा के कार्य्य का साधक हो २ जड़ को अच्छी तरह बांधै तो सम्पूर्ण राज्य लेसक्ताहै अथवा उसके द्वेषी हिस्सेदार सेनापतिका जो अंशहो देके ३ उस राज्य के सम्पूर्ण द्वेषी आदि को बश करके
बल से मूलका उन्मूलन करै जिस तरह संक्षीण मूलके शाखा

सूख जातेहैं उसीतरह वे सूखजाते हैं ४ शत्रुके सेनापति आदि स्वामी बिना कोई शीघ्र कोई कुछ काल में सूख जाते हैं और राज्य रूप वृक्ष का राजा मूल और मन्त्री स्कन्ध होते हैं ५ सेनापति शाखा सेना पल्लव फूल प्रजा फल भूभाग भूमि बीज कल्पित है ६ अन्य राजा के विश्वस्त का विश्वास न करै एकान्तमें और उसके गृह में थोड़े मनुष्यों से न जाय ७ अपने रूप और बेषके सदृश मनुष्यों को सदा अपने निकट राखै कोई विशेष चिन्हसे गुप्त समयपर अन्यादृश हो ८ वेश्या नट गायक करके शत्रुको मोहित करै सुबस्त्र आभरण कुटुम्ब सहित उसके निकट न जाय ९ विशेष चिन्ह से युत भीत युद्ध में कभी न जाय और भृत्य स्त्री शत्रु पुत्रसे क्षणभर सावधान न हो १० राजाको चाहिये कि अपने जीतेहुये पुत्र में सम्पूर्ण स्वामिता न दे क्योंकि स्वभाव सद्गुण महानर्थ और मदकी देनेवालीहै ११ और विष्णु आदि ने भी अपने पुत्र में अपना अधिकार नहीं दिया अपने आयुर्ब्बल के थोड़े बाकी रहने से अच्छे पुत्रमें अपना अधिकार दे १२ राजा बिना राज्यका पोषण करने को क्षणमात्र भी युवराज आदि नहीं कर सक्ते और स्वाम्य लोभ गौरव से होता है १३ राज पुत्र उत्तम पदको पाके सुनीति से प्रजापोषण करता हुआ पहिले मंत्रियों में पिताके तुल्य गौरव करै १४ और राजपुत्रकी युक्त आज्ञाको भी वे लोग पूर्वसे अधिक मानैं और अन्यथा कहैंतो कालपाके निषेधकरैं १५ और राजाकी अनीतिसे धन की आशा करके प्रजालोग नहीं बर्त्ताव करते और प्रजालोग अनीतिसे बर्त्ताव करते हैं तो थोड़ेदिनमें पातकी गतिको पातेहैं १६ राज कुल के मानने वालों के साथ द्वेष करै और नये आदमियों को माने वह राजा शत्रुके आधीन होता और धन प्राणका बियोग होता है १७ और नबीन गुणी और सुनीति होतो पूर्व मन्त्रियों

की तरह उसका पालन करै और उसकी परीक्षा करके पुराने नौकरों के साथ युक्त करै १८ अति कोमलता स्तुति नति सेवा दान प्रिय बचन से धूर्त्त मायिक लोग जब तक कार्य्य सिद्धनहीं होता तब तक सेवा करते हैं और साधु सदा सेवा करते हैं १९ सत्य बचन बोलने वाले प्रत्यक्ष परोक्ष में राजाको एक तरह कहते हैं धूर्त्त और सत्य बोलने वालों में आकाश पृथ्वी का ऐसा फर्क है २० धूर्त्त जार चोर बहुश्रुत ये माया के पिता हैं और प्रतिष्ठित जैसा धूर्त्त है वैसा बहुश्रुत नहीं २१ लोक में पराये के धन लेने में जार चोर निन्दित ये दोनों अप्रत्यक्ष हरते हैं और धूर्त्त प्रत्यक्ष परधन हर्त्ता है २२ धूर्त्त लोग अन्त में हित को अहितवत् और अहित को सदा हितवत् अज्ञ को देखा के स्वकार्य्य साधन करते हैं २३ धूर्त्त लोग भली भांति विश्वासकराके घात करते हैं जिस का सदा प्रिय करते हैं उसका अप्रिय चाहते हैं २४ ब्याध मृग बध करनेको सुस्वर गीत गाताहै माया बिना बहुत द्रव्य कभी नहीं मिलता २५ बिना पराये का धन हरे कोई महाधनी नहीं होता और वह धन बिना माया किये यथेप्सित नहीं मिलता २६ राजाको पाप न होतो चोरों कोभी पाप न हो सम्पूर्ण पाप धर्म्म मूल है आश्रय भेदसे रहता है २७ धर्म्म की बहुत लोग स्तुति करते हैं इससे अधर्म्म निन्दित है धर्म्मका तत्व गहन है कोई जान नहीं सक्ता २८ अतिदान तप सत्ययोग से दरिद्रता होती है जहां अर्थ धर्म्म नहीं होते वह काम निरर्थक है २९ अर्थका पुरुष दासहै अर्थ किसीका दास नहीं इस अर्थके लिये सदा यत्न करै ३० मनुष्य को धनसे अर्थ धर्म्म काम मोक्ष होतेहैं शस्त्रास्त्र बिना शूरता और स्त्री बिना गार्हस्थ्य ३१ एक मत बिना युद्ध जानकार बिना चतुरता ये सम्पूर्ण दुःख के लिये और सुसहाय बिना बिपत्ति होती है ३२ बिपत्ति में मित्र

के समान कोई सहाय नहींहै छोटे आदमी का अपमान भी बड़े बैरके लिये होता है ३३ दान मान सत्य शौर्य्य मृदुता सुहृतकर इन सब छोटे बड़ोंको बिपत्ति में एकान्त बुलाके ३४ भाई बिरादरी सेवक जाति सभा वालों को अलग २ यथा योग्य आदरकर अपना अभीष्ट राजा मांगै ३५ जिससे बिपत्ति के पार को उतर जाय उसको तुम सब युक्ति पूर्वक कहो आप लोग हमारे मित्रहैं आप हमारे भृत्य नहीं ३६ इससे तुम्हारे सदृश हमारे सहायनहीं है मासिकका तृतीयांश अथवा भोजनार्त्थ आधा ३७ बाकी बिपत्ति सेछुट्टीपाके देंगे और उपकार मानैंगे मजदूरी बिनास्वामिकार्य्य को आठ बर्ष भृत्य करै ३८ और धनी सोलह बर्षतक कुछ न ले इतर मनुष्य धनके सदृशले निर्द्धनअन्न बस्त्रराजासेले और अधिक न ले ३६ जिससे भली भांति बहुत सुख कियाहो उसके दुःख से दुखी नहीं होता उसकी निन्दाहोती और कृतघ्न होता स्वामीहो अथवाभृत्य ४० एक दफे भी जिसकेयहां भोजन किया हो उसके लियेप्राणदेना चाहिये वही सेवकश्रेष्ठ और धन्यहै जो बिपत्ति में स्वामी को न छोड़ै ४१ और वह स्वामी है जो भृत्य के अर्त्थ जीवित दे श्रीरामचन्द्रजी के सदृश नीतिमान् राजा कोई पृथ्वी में नहीं हुआ ४२ जिसने नीति पूर्वक बानरोंके साथ सु भृत्यता स्वीकारकी चोरोंकी एक चित्तता राज्यके नाशके अर्त्थहै ४३ और राजा और भृत्यकी कूटनीति क्या शत्रुनाशके लिये न होगी क्या श्रीकृष्ण ऐसा राजा कूटनीति अर्त्थात् छली नहीं हुये किन्तु हुये हैं ४४ छलसे श्रीकृष्णजीने सुभद्रानाम अपनी बहिन अर्जुनसे ग्रहण कराई नीतिमानों की वह नीतिहै जो अपने कल्याण के लियेहो ४५ जो अपनी रक्षाके लिये युक्ति नहीं बिचारता वह पशुसेभी जड़है जारकी रक्षाके लिये स्त्रीलोग छल करतीहैं ४६ बहुधा युक्ति छलसे होतीहै और अन्य जोड़ने से जिस्से कि छल-

चारीहै इस्सेछलका आश्रयकरै ४७ अन्यथाकरनेसे बड़ोंकेभीशील का नाशहोताहै और बुद्धिमानोंकी पंक्तिहै एक बुद्धिमान्नहीं होता ४८ देशकालपुरुषमें अनेकप्रकारकीयुक्ति कल्पितहैप्राक्तनउनकी बुद्धिरुद्धदेखकेयुक्तिकरै ४९ मन्त्रऔषधीपृथक्बेषकालवाक्अर्थ संश्रयसे उस बिद्यामें चतुरमनुष्य छलकोपैदाकरतेहैं ५० और अधिकारीलोकके मनुष्यप्रत्यक्ष बस्त्रयाकपड़ा बेचाहो या दियाहो अथवा खरीदाहो उसकेलिये अपनाचिन्ह करै ५१ और चोरी और कपटके दूरहोने केअर्थ राजासेकहै औरजड़ अन्ध बालकके द्रव्य कोराजा सदाबढ़ावै ५२ जिसतरहस्वीया सामान्या परकीया तीन प्रकारकी स्त्री होतीहैं उसीतरहउत्तम मध्यम अधम तीनतरह के भृत्यहोतेहैं ५३ जोसेवक केवल स्वामिहीसे प्रीतिरक्खैं वह उत्तमहै और जोस्वामी अधिक धनदेउसकीसेवाकरैवहमध्यमसेवकहै ५४ स्वामी के बहुधन देनेसे अन्य की सेवाकरै वह अधमभृत्यहै जो अपकारकरतेहुयेउपकारकरै वहसेवक उत्तमहैउस्सेअन्यथा नीच है ५५ मध्यमसेवक साम्यकी इच्छा करताहै अपरस्वार्थ तत्पर होताहै और जो बिना कहे सबको भली भांतिजानले वह भृत्य उत्तमहै ५६ बालत्व वातरुणताप्रारम्भ कियेहुयेकार्य्यकी समाप्ति देनेवालीहै बहुधाबुद्धिमान्की वृद्धताकभीनहीं होती ५७ उसका आरम्भ करै जोसुख पूर्वक समाप्त होजाय बहुत कार्य्योंका एक साथ आरम्भ सुखप्रद नहीं होता ५८ अन्य बिना आरम्भ किये हुये की समाप्ति न करै बिना दूसरे के मिले पहिले कार्य्य सम्पूर्ण नहीं होता ५९ बादशाहलोग ऐसा काम करते हैं जो सुख पूर्वक समाप्तहो ईर्षा लोभ मद प्रीति क्रोध भीति साहस ६० ये सात आरम्भ छिद्रके हेतुहैं यह बुध लोगोंने कहाहै छिद्र के सदृश कार्य्य होताहै उसीतरह आचरण करै ६१ कालके बीतने और आपत्तिमें जो बोलने के योग्य न हो उससे भी मांगै

दशगांववाला और शतानीक सेवक सहित ६२ ये दोनों घोड़े पर चढ़के इधर उधर फिरैं हज़ार और शतग्राम का पालन करनेवाला एक अश्वरथ घोड़ेपर चढ़के बिचरै ६३ और हज़ारग्रामपति नर दो अश्वके यानपर चढ़के घूमै और दशहज़ार ग्राम पति बीस सेवक और हाथीपर चढ़के चलै ६४ दशहज़ार ग्रामपति सर्वयान और चार घोड़े के रथपै चढ़के चलै और पचास हज़ार ग्रामपति बहुत सेवकसहित बिचरै ६५ जैसे बड़ा अधिकार हो उसीतरह बिस्तार करै और धनी और गुणीमें अधिकता की कल्पना करै ६६ जिस्से श्रेष्ठमान हीन न हो और न्यून मानाधिक न हो उसीतरह राजा अपने राज्यमें करै ६७ हीन मध्यम उत्तमके लिये ग्राममें भूमिदे और गृहस्थों के घर बनानेकेलिये शहरमें भूमिदे ६८ बत्तीस हाथ लम्बी और सोलहहाथ चौड़ी निकष्ट भूमिहै उत्तमादि गुणा मध्या और यथायोग्यसार्द्धमाना ६९ परिवारके रहनेके योग्यहो और न अधिकहो न कम और अधिकारी लोग ग्राम से बाहर बसैं ७० राजाके कार्य्य बिना सेनावाला ग्राममें न जाय और कहीं ग्राम के रहनेवालों को दुःख न दे ७१ और गांवके लोग फौजवालोंसे लेनदेन न करैं और सेनावालों को शूरता और धर्म्मकी बढ़ाने वाली बातैं सुनावै ७२ सुन्दर बाजा नाच गीत ये शूरताकी वृद्धि कारकहैं तिसपर भी युद्ध कर्म्म बिना अन्यत्र न योजितकरै ७३ सत्याचार धनीजो व्योहाररत होतो राजा उनकी औरअन्य खेती करने वालोंकी रक्षा करै ७४ और जोसेनाके धनीहों उनकोयथा योग्य मज़दूरीदे तीसवें अंश पर व्याज खर्चसे अधिकदे ७५ और उनके धनको अपने खज़ाने की तरह यत्नसे रक्षा करै और मिथ्याचार धनीका सम्पूर्ण धन राजा हरले ७६ जोधनी चौगुनी नफा लेचुकाहो तो अधमर्णसे राजा धनीको धन न दिलावै ७७॥

इतिशुक्रनीतिस्समाप्ता शुभम्॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नाम किताब
चित्रचन्द्रिका	मुतफ़र्क़ात	वैद्यकभाषा	तुलसीतत्व भास्कर
बारहमासावलदेवश्र	शनिश्चरकीकथा	निघण्ट	ज्योतिष
मनोहरलहरी	ज्ञानमाला	भ्रमरविनोद	मुहूर्त्तगणपति
गंगालहरी	गोपीचंद भरतरी	वैद्यजीवन	मुहूर्त्तचक्रदीपिका
यमुनालहरी	कथाश्रीगंगाजी	श्रौषधिसंग्रहकल्प	मुहूर्त्तचिंतामणिस·
जगद्विनोद	श्रवधयात्रा	बल्ली	मुहूर्त्तमार्त्तण्डस·
शृंगारबत्तीसी	भरतरीगीत	अमृतसागरबड़ावड़ो	मुहूर्त्तदीपक
राग	दानलीलाव नाग-	वैद्यमनोत्सव	रहज्ञानकसटीक
रागप्रकाश	लीला	ज्योतिषभाषा	जातकालंकारस·
लावनी	दोहावलीरत्नावली	जातकचन्द्रिका	जातकाभरण
कृष्णगीतावली	गोकर्णमहात्म्य	जातकालंकार	ढोलामरुकंद
किस्सावगैरह	श्रीगोपालसहस्रना·	दैवज्ञाभरण	संस्कृत उर्दू टी·स·
नानार्थनाममंग्रहावली	कथासत्यनारायण	ज्ञानस्वरोदय	मनुस्मृति
ब्रह्मसार	हनुमानबाहुक	रमलसार	विष्णुहारीत
शिवसिंहसरोज	जनकपच्चीसी	तुन्दजाल	महिम्नस्तोत्र
भक्तमाल	हरिहरसगुणनिर्गु·	संस्कृतकीपुस्तकें	व्रतार्क
इन्द्रसभा	णपदावली	लघुकौमुदी	याज्ञवल्क्यस्मृति
विक्रमविलास	बनयात्रा	सिद्धान्तचन्द्रिका	संस्कृत भाषादीन्स·
बैतालपच्चीसी	कायस्थवर्णनिर्णय	अमरकोशतीनोंका·	अमरकोषतीनोंका·स·
पद्मावतीखंड	विहारबिंद्रावन	ड सटीक	याज्ञवल्क्यस्मृति
शुकबहत्तरी	समरबिहारबिंद्रावन	पंचमहायज्ञ	सन्ध्यापद्धति
चकावली सुमन	काव्यभाष्य	निर्णयसिन्धु	व्रतार्क
चहारदरवेश	दरसी	संग्रहशिरोमणि	भगवद्गीताटी·इन्दं·
क़िस्साहातमताई	अक्षरारम्भ	भगवद्गीतासटीक	भगवद्गीताटी·ज्ञा·गि·
रूपपूर्व्वकथा	स्वयम्बोध	दुर्गापाठसटीक	गीतगोविंद
क़िस्सागुलसनोबर	ज्ञानचालीसी	विष्णुभागवतस·	कथासत्यनारायण
सहस्ररजनीचरित्र	दोहावली	अपराधभजनस्तोत्र	परमार्थसार
सिंहासनबत्तीसी	बालाबोध	दुर्गास्तोत्र	शार्ङ्गधरसंहिता
रविन्सनकाद्वीपहाम	विद्यार्थीकीप्रथमपु·	कायस्थकुलभास्कर	पाराशरीसटीक
सीताहरण	किताबजंत्री	कायस्थधर्म्मनिरूपण	शीघ्रबोधसटीक
सतीविलास	गणितकामधेनु	तथाखोदा	लघुजातक
सोदागरलीला	लीलावती	मथुरासभा	घटपंचाशिका
पद्मावत	पटवोंकीपु·४भा·	पंचरत्न	सामुद्रिक

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
रामविवाहोत्सव	इतिहासतिमिरनाश	हिदायतनामा मुद-	पुरस्कारी २६ स-
ग्रामकलेवा	क १भा-२व ३	र्रिसान्	न् १८६६ ईसवी
सर्वोपतेतालीमकी	अवधदेशीयभूगो-	पशुचिकित्सा	वग़ैरह
पुस्तकें	ङ्गिलस्तानकाइति-	पहाबरतन कैथी	एक स्टाम्पदस्तावे-
संस्कृत	हास	तथाक़बूलियत	जात सन् १८६८
ऋजुपाठ १भा-२व ३	हितोपदिका	रजिस्टरदरिवलवा-	ईसवी
धातुर्णव	बालाभूषण	रिजतुलवाभदर्सा	एक नाख़ुक़दारा-
नागरीकैथी	पद्यसंग्रह	रजिस्टरहाज़िरीपा-	न मक़रूज़ अवध
वर्णमालाकैथी १भा	भाषाकाव्यसंग्रह	ठशाला	२४ सन् १८७०
तथा २भाग	कवित्नरत्नाकर १	क़ानून कैथी	ईसवी
तथाकैथीफ़ारसी	भाग तथा २ भाग	पटवारियोंकेकायदे	एक चौपायोंका
नागरी	मंगलकोश	उर्दूकैथीमहाजनी	मदारवलात बेजा
हरूफ़मुफ़र्दात	अंकप्रकाश	टिकटकेलादूसन्स	१ सन् १८७७ ई०
अक्षरारम्भ	गणितप्रकाश १भा-	का एक २ सन्	एक मज़मूआ ज़ा-
वर्णप्रकाशिकाभाक	तथा २व ३ व ४भा-	१८७८ ई०	बिताफ़ौजदारी १०
शिशुबोध	गणितक्रिया	नागरी	सन् १८७२ ई०
सूरजपुरकीकहानी	क्षेत्रप्रकाश	एकलगानमग़रबी	एक मालगुज़ारी
धर्म्मसिंहकावृत्तांत	क्षेत्रचन्द्रिका २भा	वशिमाली १० सन	मग़रबीवशिमाली
शिक्षावली	सर्कोलदायरा	१८५८ ई०	२६ सन् १८७३
पत्रहितैषिणी	रेखागणित १भा-	इंडियनपिनलकोर्ट	ईसवी
पत्रदीपिका	तथा २भाग	मज़मूआ ज़ाबिता	अरमीमज़मूआ
विद्याचक्र	बीजगणित २भाग	फ़ौजदारी एक २५	ज़ाबिताफ़ौजदारी
विद्यांकुर	तथा २भाग	सन् १८६१ ई०	११ सन् १८७४
पदार्थविद्यासार	रामायण तुलसीकृ-	एकरजिस्टरी २०	ईसवी
पदार्थज्ञानदिवप	बालकाण्ड	सन् १८६६ ई०	तक़ावी के क़ायदे
भोजप्रबन्धसार	अयोध्याकाण्ड	एक स्टाम्प १ सन्	सवाल व जवाब
राजनीति	आरण्यकाण्ड	१८६२ ई०	पुलिस
भाषासंधुव्याकरण	किष्किन्धाकाण्ड	एक स्टाम्पअदालत	अवधरुहेलखंड
१भाग व २भा-	सुन्दरकाण्ड	२६ सन् १८६७	रेलदेका दस्तूरुल
भाषानवदीपिका	लङ्काकाण्ड	ईसवी मज़मूआ	अमल
भाषाचन्द्रोदय	उत्तरकाण्ड	एक अवधलगान	दूति
भूगोलतत्व	गुटका १भाग	२६ सन् १८६८	
भूगोलदर्पण	तथा २व ३भाग	ईसवी	

